नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

परिवहन विशेष

www.newsparivahan.com

वर्ष 03, अंक 280, नई दिल्ली, मंगलवार 16 दिसम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

संघर्ष में कभी हार नहीं माननी चाहिए क्योंकि जीवन हमें हमेशा एक और मौका देता है।

03 शैव" (शिव साधक), अघोर पंथ

06 ताकि भू-जल तक नहीं पहुँच पाए प्रदूषण का जहर

08 सारडां में पुनः नक्सलियों के आईईडी विस्फोट से दो सुरक्षा जवान घायल

दिल्ली में प्रदूषण से होने वाले सभी नुकसान का जिम्मेदार सिर्फ दिल्ली परिवहन विभाग और आयुक्त परिवहन

संजय बाठला

दिल्ली में व्यावसायिक गतिविधियों में ई आटो के पंजीकरण को रोकने और गैर तकनीकी अधिकारियों की तकनीकी पदों पर नियुक्ति से दिल्ली में जाम और वाहन प्रदूषण में आई है तेजी

अमीर प्रदूषण फैलाते हैं, गरीब मार झेलते हैं', दिल्ली की जहरीली हवा पर सीजेआई सूर्यकांत की टिप्पणी

न्याय मित्र अपराजिता सिंह ने आज सुप्रीम कोर्ट में कहा कि अदालत के आदेश के बावजूद स्कूलों ने खेल गतिविधियां आयोजित करने के रास्ते निकाल लिए हैं। इस पर मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने कहा कि अदालत समस्या से पूरी तरह अवगत है और केवल ऐसे आदेश पारित किए जाएंगे, जो प्रभावी हों और जिनका अनुपालन कराया जा सके।

सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को कहा कि वह दिल्ली - एनसीआर में बिगड़ते वायु प्रदूषण के स्तर से संबंधित याचिका पर 17 दिसंबर को सुनवाई करेगा।

मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जॉयमाल्य बागची और न्यायमूर्ति विपुल एम पामचोली की पीठ ने वरिष्ठ अधिवक्ता अपराजिता सिंह की दलीलों पर ध्यान दिया, जो एमिकस क्यूरी (न्याय मित्र) के रूप में उनकी सहायता कर रही हैं।

सुनवाई के दौरान कोर्ट को अपराजिता सिंह ने कहा कि जब तक अदालतें स्पष्ट निर्देश नहीं देतीं, तब तक राज्य सरकारें प्रदूषण से निपटने के लिए प्रभावी कार्रवाई नहीं करतीं। उन्होंने कहा कि प्रदूषण नियंत्रण से जुड़े प्रोटोकॉल मौजूद हैं, लेकिन उनका पालन नहीं हो रहा है।

दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण के संकट पर अदालत का ध्यान दिलाते हुए वरिष्ठ अधिवक्ता ने कहा कि पिछले महीने सुप्रीम कोर्ट ने दिसंबर-जनवरी के दौरान खेल गतिविधियों पर रोक लगाने का निर्देश दिया था, इसके बावजूद विभिन्न जगहों पर खेल आयोजन कराए जा रहे हैं। अदालत के आदेशों को दरकिनार करने के लिए राज्य सरकारों की तरफ से 'तरीके और साधन' अपनाए जा रहे हैं।

कुछ निर्देशों को जबरन लागू करना पड़ता है: सीजेआई उन्होंने यह भी कहा कि वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) एक बार फिर सुप्रीम कोर्ट के आदेशों का हवाला दे रहा है, लेकिन जमीनी स्तर पर स्थिति में सुधार नहीं दिख रहा है। इस पर मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने कहा कि अदालत इस समस्या से पूरी तरह अवगत है और केवल ऐसे आदेश पारित किए जाएंगे, जो प्रभावी हों और जिनका अनुपालन कराया जा सके।

सीजेआई ने कहा कि कुछ निर्देश ऐसे होते हैं जिन्हें जबरन लागू करना पड़ता है, लेकिन महानगरों में लोगों की अपनी जीवनशैली होती है, जिसे बदलना आसान नहीं है।

दिल्ली पॉल्यूशन पर 17 दिसंबर को SC में सुनवाई मुख्य न्यायाधीश ने यह भी टिप्पणी की कि प्रदूषण की मार सबसे ज्यादा गरीबों पर पड़ती है, जबकि प्रदूषण फैलाने वाली गतिविधियों में अक्सर संपन्न वर्ग की भूमिका होती है। एमिकस क्यूरी अपराजिता सिंह ने इससे सहमति जताते हुए कहा कि गरीब मजदूर इस संकट से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं, उन्होंने अदालत को यह भी बताया कि बच्चों के स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दे पर एक अलग आवेदन दायर किया गया है। इस पर सीजेआई ने दो टूक कहा, 'हम समस्या को जानते हैं। दिल्ली-एनसीआर वायु प्रदूषण से जुड़ा यह मामला 17 दिसंबर को पीठ के समक्ष सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया जाएगा, जहां इस पर विस्तार से विचार किया जाएगा.'

धुंध, धुआं और खतरे में धड़कन

क्या दिल्ली-NCR अदृश्य महामारी की चपेट में है?

दिल्ली-NCR में सर्दियों का प्रदूषण अदृश्य महामारी बन चुका है। PM2.5 जैसे बारीक कण फेफड़े, दिल, दिमाग को नुकसान पहुंचा रहे हैं, जिससे हर साल लाखों मौतें होती हैं। यह भारत का सबसे बड़ा स्वास्थ्य खतरा है। अरबों रुपये का आर्थिक नुकसान भी है। मौसम के बदलने से कभी सुधार होता है, लेकिन फिर वही हालत हो जाती है।

क्या करें सरकार, समाज और हम? दिल्ली-NCR में सांस लेना तो मुश्किल था अब देखना भी हो गया है, सब कुछ अदृश्य। घना कोहरा, स्मोग और पॉल्यूशन।

15 दिसंबर 2025 को दिल्ली का AQI 450 से ऊपर सीवियर लेवल पर पहुंच चुका है। कुछ जगहों पर तो 500 के करीब है। घना स्मॉग छाया हुआ है, विजिबिलिटी कम है। लोग घरों में कैद हो गए हैं।

सवाल उठता है कि क्या पूरे जाड़े (दिसंबर से फरवरी) में दिल्ली-एनसीआर का प्रदूषण इसी तरह हाई रहेगा? और यह इतना खतरनाक क्यों है? नहीं, पूरे सर्दी में प्रदूषण लगातार इतना बुरा नहीं रहता। मौसम के बदलाव से कभी-कभी सुधार होता है। लेकिन सर्दियों में औसतन प्रदूषण ज्यादा रहता है।

वैज्ञानिक कारण हैं – ठंडी हवा नीचे रहती है, गर्म हवा ऊपर, ये -इन्वर्शन लेयर बनाती है जो प्रदूषण फैलाने वाले तत्वों को फंसाए रखती है। हवा की स्पीड कम, कोई बारिश नहीं, तो स्मॉग बन जाता है।

लेकिन यह सिर्फ दिल्ली की समस्या नहीं, पूरे भारत में वायु प्रदूषण एक अदृश्य महामारी बन चुका है। लैंसेट की स्टडी के अनुसार, भारत में हर साल 15 लाख से 20 लाख लोगों की मौत वायु प्रदूषण से जुड़ी होती है। यह धूम्रपान, हाई ब्लड प्रेशर से भी बड़ा खतरा है।

सर्दियों में दिल्ली का प्रदूषण क्यों ज्यादा खतरनाक? दिल्ली-एनसीआर में सर्दियां आते ही प्रदूषण चरम पर पहुंच जाता है।

मुख्य कारण वैज्ञानिक हैं

1. तापमान इन्वर्शन: गर्मियों में गर्म हवा ऊपर उठती है और प्रदूषण वाले तत्व फैल जाते हैं। सर्दियों में ठंडी हवा नीचे जमीन पर रहती है, गर्म हवा ऊपर। यह एक ढक्कन की तरह काम करता है, प्रदूषण वाले तत्व फंस जाते हैं।

2. कम हवा की स्पीड: सर्दियों में हवा धीमी चलती है, प्रदूषण वाले तत्व फैल नहीं पाते।

3. अतिरिक्त स्रोत: पंजाब - हरियाणा - यूपी में पराली जलाना.

4. दिवाली के पटाखे.

5. वाहनों का धुआं.

6. कंस्ट्रक्शन की धूल.

7. इंडस्ट्री का धुआं और कचरा जलाना.

PM2.5 जैसे बारीक कण ज्यादा बनते हैं।

2025 के डेटा से देखें तो दिसंबर में एक्यूआई 400-500 तक पहुंच रहा है। ग्रेप स्टेज-4 लागू है, लेकिन फोरकास्ट कहता है कि 17 दिसंबर से सुधार हो सकता है, एक्यूआई वेरी पुअर में आएगा। पूरी सर्दी में उतार-चढ़ाव रहेगा, लेकिन औसतन खराब ही रहेगा।

वायु प्रदूषण कैसे शरीर को नुकसान पहुंचाता है? वायु प्रदूषण का मुख्य दोषी PM2.5 है ये 2.5 माइक्र से छोटे कण हैं, जो सांस के साथ फेफड़ों में घुस जाते हैं और खून में मिल जाते हैं। डब्लूएचओ के अनुसार, सुरक्षित लेवल 5 माइक्रोग्राम/क्यूबिक मीटर सालाना है, लेकिन भारत में औसतन 50-100 से ज्यादा है। दिल्ली में सर्दियों में 200-500 तक पहुंच जाता है।

फेफड़े और सांस की नली: PM2.5 फेफड़ों की दीवार को खराब करता है, सूजन पैदा करता है. अस्थमा, ब्रॉन्काइटिस, सीओपीडी बढ़ता है। स्टडीज दिखाती हैं कि पीएम 2.5 बढ़ने से अस्पताल में सांस की बीमारियों के केस 10-20% बढ़ जाते हैं। बच्चों में फेफड़ों का विकास रुक जाता है।

दिल और ब्लड वेसल्स: कण खून में घुसकर धमनियों में सूजन पैदा करते हैं, प्लाक बनाते हैं. हार्ट अटैक, स्ट्रोक का खतरा 10-15% बढ़ जाता है. लैंसेट स्टडी: भारत में हार्ट डिजीज से मौतों का 25% प्रदूषण से जुड़ा है.

दिमाग और नर्वस सिस्टम: पीएम 2.5 ब्रेन में पहुंचक सूजन करता है. डिप्रेशन, अल्जाइमर, बच्चों में आईक्यू कम होना। प्रदूषित इलाकों में बच्चों का दिमागी विकास 2-5 साल पीछे रह जाता है।

किडनी और लिवर: खून से फिल्टर होने से इन अंगों पर बोझ पड़ता है, क्रॉनिक किडनी डिजीज बढ़ती है।

कैंसर: डब्ल्यूएचओ ने पीएम 2.5 को कैंसर पैदा करने वाला घोषित किया है और लंग कैंसर का खतरा दोगुना बताया है।

प्रेग्नेंसी और बच्चे: गर्भवती महिलाओं में लो बर्थ वेट, प्रीमैच्योर बर्थ, नवजात में सांस की समस्या।

लैंसेट प्लैनेटरी हेल्थ 2024 स्टडी: भारत में हर साल 15 लाख अतिरिक्त मौतें पीएम 2.5 से,

ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज: 2019 में 16.7 लाख मौतें,

प्रदूषण से. यह भारत की जनता के लिए सबसे बड़ा स्वास्थ्य खतरा है - कोविड से भी ज्यादा मौतें,

प्रदूषण की आर्थिक कीमत प्रदूषण सिर्फ स्वास्थ्य नहीं, अर्थव्यवस्था को भी खोखला करता है।

वर्ल्ड बैंक: 2019 में भारत को लगभग 3 लाख करोड़ का नुकसान - जीडीपी का 1.36%.

लैंसेट: समय से पहले मौत और बीमारी से आउटपुट लॉस 28-37 बिलियन डॉलर,

कारण:

1. लोग बीमार पड़ते हैं, काम नहीं कर पाते,
2. अस्पताल का खर्च बढ़ता है।
3. बच्चों की पढ़ाई प्रभावित होती है।
4. टूरिज्म कम हो जाता है.

दिल्ली में प्रदूषण से प्रोडक्टिविटी 8-10% कम हो जाती है कुल मिलाकर, भारत की 5 ट्रिलियन इकोनॉमी की राह में बड़ा रोड़ा है यह प्रदूषण,

समाधान और उम्मीद यह समस्या हल हो सकती है.

1. एनसीएपी (नेशनल क्लीन एयर प्रोग्राम) चल रहा है,
2. BS-6 फ्यूल,
3. इलेक्ट्रिक व्हीकल,
4. पराली का वैकल्पिक इस्तेमाल करना जरूरी है.

लेकिन जरूरत है सख्ती से नियम लागू करने की।

लोग व्यक्तिगत स्तर पर-

1. एन95 मास्क लगा सकते हैं।
2. इंडोर प्लांट्स लगा सकते हैं
3. कार पूलिंग करें.

सरकार को

1. इंडस्ट्री पर कंट्रोल करना होगा।
2. पब्लिक ट्रांसपोर्ट बढ़ाना होगा.
3. ग्रीन एनर्जी को बढ़ावा देना होगा.

वायु प्रदूषण एक अदृश्य महामारी है जो चुपके से लाखों जिंदगियां ले रही है, दिल्ली की सर्दी इसका सबसे बुरा रूप दिखाती है, लेकिन प्रदूषण पूरे भारत में फैला है।

वैज्ञानिक तथ्य साफ हैं पीएम 2.5 शरीर के हर अंग को नुकसान पहुंचाता है। अगर हम अब नहीं जागे, तो आने वाली पीढ़ियां सांस की कीमत चुकाएंगी। स्वच्छ हवा हमारा हक है।

सरकार, समाज और हम सब मिलकर लड़ें, क्योंकि सांस लेना जीने का पहला अधिकार है।

जय जगन्नाथ जी

जगन्नाथ पुरी धाम दर्शन यात्रा

(दिल्ली से फ्लाइट द्वारा यात्रा)

यात्रा तिथि: 19 जनवरी से 21 जनवरी

यात्रा कार्यक्रम :

DAY 1 – दिल्ली भुवनेश्वर (फ्लाइट द्वारा)
होटल में चेक-इन
खंडगिरी एवं उदयगिरी गुफाएं
एलिफेंटा / लायन / क्वीन केव्स
लिंगराज मंदिर
जैन मंदिर
मुक्तेश्वर मंदिर
बिंदुसागर
रात्रि विश्राम – भुवनेश्वर

DAY 2
नाश्ता
बुद्ध स्तूप
कोणार्क सूर्य मंदिर
चंद्रभागा बीच
रामचंडी मंदिर
पुरी होटल में ठहराव
श्री जगन्नाथ मंदिर दर्शन
विमला शक्तिपीठ
रात्रि विश्राम – पुरी

DAY 3
नाश्ता
चिल्का झील (डॉल्फिन सैंक्चुरी)
दिल्ली वापसी

पैकेज में शामिल :
हवाई यात्रा
होटल ठहराव
केवल नाश्ता

पैकेज मूल्य : 25,000 /- प्रति व्यक्ति

बुकिंग अंतिम तिथि : 15 दिसंबर

संपर्क करें :
9716338127,
9811732094
9212632095

दिल्ली में ऑपरेशन चक्रव्यूह: ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करने वालों पर बड़ी कार्रवाई, 25 हजार कटे चालान

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। राजधानी में ट्रैफिक नियमों के उल्लंघन पर लगाम कसने के लिए दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने आपरेशन 'चक्रव्यूह' के तहत बड़ा अभियान चलाया। दिल्ली पुलिस आयुक्त सतीश गोलचा के निर्देश पर ट्रैफिक मैनेजमेंट डिवीजन ने एक दिसंबर से दो सप्ताह तक स्थानीय पुलिस और पीसीआर के साथ मिलकर इस विशेष अभियान चलाया।

इस दौरान ट्रैफिक नियमों के विभिन्न उल्लंघनों में कुल 24,841 चालान जारी किए गए। वहीं, गंभीर ट्रैफिक अपराधों और चोरी के मामलों में संलिप्त पाए गए 144 वाहनों को जब्त किया गया। इसके अलावा, एक वाहन से नशीले पदार्थ बरामद होने पर थाना तिमारपुर में एफआइआर भी दर्ज की गई।

अभियान के तहत ट्रैफिक पुलिस, स्थानीय थानों और पीसीआर वैन के पुलिसकर्मियों को रोजाना दो घंटे के लिए सुनियोजित तरीके से कई स्तरों पर तैनात किया गया। व्यस्त चौराहों, प्रमुख मार्केट हब और दुर्घटना संभावित इलाकों में सभी एंट्री और एग्जिट प्वाइंट्स पर पुलिसकर्मी लगाए गए, ताकि कोई भी ट्रैफिक नियम तोड़ने वाला कार्रवाई से बच न सके।

ऑपरेशन 'चक्रव्यूह' का मुख्य उद्देश्य बार-बार होने वाले ट्रैफिक उल्लंघनों पर रोक लगाना और सड़क सुरक्षा को मजबूत करना था। अभियान के दौरान बिना हेलमेट वाहन चलाना,

ट्रिपल राइडिंग, शराब पीकर ड्राइविंग, लापरवाही से वाहन चलाना (गलत साइड ड्राइविंग सहित), ड्राइविंग के दौरान मोबाइल फोन का इस्तेमाल, ट्रैफिक सिग्नल तोड़ना और अन्य गंभीर उल्लंघनों पर सख्त कार्रवाई की गई।

ट्रैफिक मैनेजमेंट डिवीजन के उपायुक्त शशांक जायसवाल के मुताबिक, यातायात आपरेशन चक्रव्यूह को कानून का पालन करने वाली आम जनता से सकारात्मक प्रतिक्रिया और सराहना मिली है। यह अभियान सड़क अनुशासन सुधारने और ट्रैफिक नियमों के पालन को सुनिश्चित करने में प्रभावी साबित हुआ है। ट्रैफिक पुलिस सख्ती, प्रोएक्टिव पुलिसिंग और जनता के सहयोग से राजधानी में सुरक्षित, सुचारू और अनुशासित ट्रैफिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए लगातार प्रतिबद्ध है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com
tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार

अगर आप कोई एंड्राइड डिवाइस इस्तेमाल करते है तो एक विश्वसनीय मोबाइल सिक्योरिटी ऐप की आपकी तलाश C DAC द्वारा विकसित M KAVACH 2 पर आकर समाप्त होती है।

इसे आज ही डाउनलोड करें।

एक भरोसेमंद, सरकारी समाधान जिसे आपको अवश्य उपयोग करना चाहिए।

M KAVACH १: भारत का आधिकारिक मोबाइल सुरक्षा ऐप

C DAC, MeitY द्वारा विकसित एक मोबाइल सुरक्षा समाधान, जो एंड्रॉइड उपयोगकर्ताओं को मैलवेयर, छिपे हुए ऐप्स, जोखिमपूर्ण सेटिंग्स और साइबर खतरों से सुरक्षित रखने के लिए बनाया गया है।

चरणबद्ध इंस्टॉलेशन गाइड

1. गूगल प्ले स्टोर खोलें:- "M Kavach १" सर्च करें (डेवलपर: C DAC Hyderabad)
१. "Install" पर टैप करें:- यह ऐप मुफ्त, सुरक्षित और भारत सरकार द्वारा आधिकारिक रूप से प्रकाशित है।
३. ऐप खोलें:- इंस्टॉल होने के बाद Open पर टैप करें।
4. आवश्यक परमिशन दें:- ऐप निम्न परमिशन मांग सकता है:
* ऐप स्कैनिंग
* डिवाइस सेटिंग्स की जांच
* सुरक्षा विश्लेषण
ये पूर्ण सुरक्षा के लिए आवश्यक है।
5. प्रारंभिक सुरक्षा स्कैन चलाएँ:- ऐप स्वत: जांच करेगा:
* डिवाइस कॉन्फ़िगरेशन
* छिपे/साइडलोडेड ऐप्स
* पुराने ऐप्स
* संभावित मैलवेयर
6. अलर्ट देखें और समस्याएँ ठीक करें:- ऐप की सलाह के अनुसार अपने डिवाइस को सुरक्षित करें।

M KAVACH १ की प्रमुख सुरक्षा विशेषताएँ

1. सिक्योरिटी एडवाइज़र:- डिवाइस की कुल सुरक्षा स्थिति दिखाता है — रूट स्टेटस, Wi Fi सुरक्षा, USB डिबगिंग, लॉटस्पॉट स्टेटस आदि।
१. थ्रेट एनालाइज़र (ML आधारित) मशीन लर्निंग तकनीक से खतरनाक या जोखिमपूर्ण ऐप्स का पता लगाता है।
३. छिपे / साइडलोडेड ऐप्स की पहचान प्ले स्टोर के बाहर से इंस्टॉल किए गए या छिपाए गए ऐप्स को पहचानता है।
4. ऐप अपडेट मॉनिटर लंबे समय से अपडेट न किए गए ऐप्स को हाइलाइट करता है।
5. ब्लॉकचेन आधारित ऐप वेरिफायर फर्जी या क्लोन ऐप्स से बचाने के लिए ऐप की प्रामाणिकता की पुष्टि करता है।
6. सुरक्षा मिसकन्फ़िगरेशन अलर्ट असुरक्षित सेटिंग्स के बारे में चेतावनी देता है:
* डेवलपर मोड
* असुरक्षित Wi Fi
* USB डिबगिंग
* लॉटस्पॉट का दुरुपयोग

नागरिकों के लिए लाभ

मोबाइल मैलवेयर से सुरक्षा
फर्जी ऐप्स के जरिए होने वाले फ्रॉड से बचाव
डिजिटल हाइजीन में सुधार
सरकारी भरोसेमंद और मुफ्त
सरल इंटरफ़ेस + मज़बूत सुरक्षा

M KAVACH १ अन्य मोबाइल सुरक्षा ऐप्स से कैसे बेहतर है

1. सरकारी विकसित और विश्वसनीय व्यावसायिक ऐप्स में डेटा प्रथाएँ अक्सर अस्पष्ट होती हैं।

M KAVACH १ प्रदान करता है:

* कोई ट्रैकिंग नहीं
* कोई छिपी कमाई नहीं
* कोई विज्ञापन नहीं
* कोई डेटा हार्वेस्टिंग नहीं
* सरकारी/आधिकारिक उपयोग के लिए विश्वसनीय

१. ब्लॉकचेन आधारित ऐप वेरिफिकेशन (अनूठा) इससे बचाव लेता है:
* फर्जी बैंकिंग ऐप्स
* साइबर अपराध में उपयोग होने वाले फ्रॉड ऐप्स
* फ़िशिंग ऐप्स

३. ML आधारित थ्रेट डिटेक्शन पहचानता है:
* नए मैलवेयर वेरिएंट
* जोखिमपूर्ण परमिशन
* छिपे/साइडलोडेड ऐप्स

4. भारतीय साइबर खतरे के अनुरूप विशेष रूप से ट्यून किया गया है:
* फर्जी लोन ऐप्स
* सेक्सटॉर्शन स्यावयेयर
* OTP चोरी में उपयोग होने वाले रिमोट एक्सेस ऐप्स
* जॉब स्कैम APKs
* UPI को निशाना बनाने वाला मैलवेयर

5. गहरी सुरक्षा मिसकन्फ़िगरेशन जांच वे सेटिंग्स भी जांचता है जिन्हें अधिकांश एंटीवायरस नज़रअंदाज़ करते हैं।
6. हल्का, बैटरी पर कम प्रभाव कम संसाधन उपयोग के लिए अनुकूलित।
7. पूरी तरह मुफ्त, कोई प्रीमियम प्लान नहीं कोई सब्सक्रिप्शन नहीं, कोई विज्ञापन नहीं, कोई पेड फीचर नहीं।
8. नागरिक सुरक्षा केंद्रित, मार्केटिंग नहीं RAM बूस्टिंग या जंक क्लीनिंग जैसे दिखावटी फीचर्स नहीं — केवल वास्तविक सुरक्षा।
९. सरकार, पुलिस, छात्र, वरिष्ठ नागरिकों के लिए आदर्श सरल, पारदर्शी और भरोसेमंद।

सारांश तालिका

फ़ीचर	M KAVACH १
व्यावसायिक ऐप्स	
सरकारी विकसित	हाँ
ब्लॉकचेन ऐप वेरिफिकेशन	हाँ
ML आधारित थ्रेट डिटेक्शन	हाँ
अलग	
भारत विशिष्ट फ्रॉड फोकस	
मज़बूत	
विज्ञापन/ट्रैकिंग	नहीं
अक्सर	
बैटरी उपयोग	कम
मध्यम/अधिक	
लागत	मुफ्त
पेड/प्रीमियम	
सुरक्षा मिसकन्फ़िगरेशन अलर्ट	
मज़बूत	

नहीं
दुर्लभ
अलग

"वी बी जी राम जी" नाम से नई योजना लाने के लिए मोदी सरकार पेश करने जा रही हैं नया बिल, यह लोकप्रिय योजना मनरेगा योजना की लेगी जगह, जाने

पिंकी कुंडू

नया बिल लाने की तैयारी में मोदी सरकार, 'जी राम जी' होगा नाम, केंद्र सरकार 'मनरेगा' योजना का नाम बदलने की तैयारी में है।

नई जानकारी के मुताबिक, इसे आम लोगों के बीच "जी राम जी" योजना के नाम से प्रचारित किया जा सकता है। सरकार लोकसभा में इससे संबंधित एक नया बिल लाने जा रही है जिसके तहत 125 दिनों के रोजगार की गारंटी देने का प्रावधान होगा।

इस योजना का पूरा नया नाम होगा – "विकसित भारत – गारंटी फॉर रोजगार एंड आजीविका मिशन (ग्रामीण)", जिसे संक्षेप में "वीबी - जी राम जी" योजना कहा जाएगा।

ड्राफ्ट के अनुसार, यह योजना विकसित भारत 2047 के विजन

से जुड़ी होगी, इसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन करना, पलायन को रोकना और गांवों को आत्मनिर्भर दिशा में आगे बढ़ाना है।

बिल के मुताबिक, सरकार ग्रामीण विकास से जुड़े प्रमुख कार्य इसी योजना के अंतर्गत करवाएगी जैसे जल संरक्षण, ग्रामीण इन्फ्रास्ट्रक्चर का निर्माण, आजीविका मिशनों को मजबूती देना आदि। साथ ही यह प्रयास भी किया जाएगा कि खेती के सीजन में गांवों में पर्याप्त श्रमशक्ति उपलब्ध रहे।

इन कार्यों को पीएम - गति शक्ति योजना से भी जोड़ा जा सकता है। इसके तहत होने वालों कामों की मॉनिटरिंग के लिए भी आधुनिक व्यवस्था का सहारा लिया जाएगा। इसके तहत जीपीएस और मोबाइल बेस्ड मॉनिटरिंग होगी। इसके अलावा इससे जुड़े कामों की प्लानिंग, ऑडिटिंग, फ्रॉड रिस्क मैनेजमेंट के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का सहारा लिया जाएगा।

विपक्ष का विरोध शुरू योजना का नाम बदले जाने पर राजनीतिक विवाद भी शुरू हो गया है। कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी ने सवाल उठाया है कि इसमें (मनरेगा) से "महात्मा गांधी" का नाम क्यों हटाया जा रहा है, बता दे कि पहले से ही यह आशंका जताई जा रही थी कि नाम परिवर्तन पर बड़ा विवाद खड़ा हो सकता है।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि पिछले करीब 20 वर्षों में ग्रामीण भारत में महत्वपूर्ण आर्थिक और सामाजिक बदलाव लाने में मनरेगा ने बड़ी भूमिका निभाई है।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

अत्यधिक CSF निकासी क्यों घातक हो सकती है

सेरिब्रोस्पाइनल फ्लूइड (CSF) मस्तिष्क और स्पाइनल कॉर्ड को चारों ओर से घेरे रखता है। यह न केवल मस्तिष्क को झटकों से बचाने वाला जैविक कुशन है, बल्कि खोपड़ी के भीतर संतुलित दाब (Intracranial Pressure) बनाए रखने में भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

जब किसी कारणवश CSF को बहुत तेज़ी से या आवश्यकता से अधिक मात्रा में निकाल लिया जाता है — चाहे वह सर्जरी के बाद हो, अधिक ड्रेनेज करने वाला शंट हो, या स्पाइनल CSF लीकेज — तो मस्तिष्क के भीतर दाब असामान्य रूप से गिर जाता है। इस स्थिति को इंट्राक्रेनियल हाइपोटेंशन कहा जाता है।

यही दाब में आई कमी एक घातक श्रृंखला (fatal cascade) की शुरुआत कर सकती है, जो गंभीर मामलों में स्थायी मस्तिष्क क्षति या मृत्यु तक का कारण बन सकती है।

हानि की श्रृंखला — वास्तव में क्या होता है?

1. मस्तिष्क का "धँसना" (Brain Sagging) और संरचनाओं पर खिंचाव

CSF की मात्रा घटने पर मस्तिष्क अपने प्राकृतिक सहारे से वंचित हो जाता है और वह खोपड़ी के भीतर हल्का-सा नीचे की ओर खिसकने लगता है, इससेः

1. दर्द-संवेदनशील मेनिन्जेस
2. क्रैनियल नर्व्स तथा
3. ब्रिजिंग वेन्स पर असामान्य खिंचाव पड़ता है।

इसका सबसे विशिष्ट लक्षण है ऑर्थोस्टैटिक सिरदर्द — जो खड़े होने पर बढ़ता है और लेटने पर कम हो जाता है।

2. ब्रिजिंग वेन्स का खिंचना या फटना

सबड्यूरल हेमेटोमा मस्तिष्क के नीचे की ओर खिसकने से मस्तिष्क और ड्यूरा के बीच की नसें खिंच सकती हैं या फट सकती हैं, परिणामस्वरूपः सबड्यूरल हाइग्रोमा या सबड्यूरल हेमेटोमा (रक्तस्राव) उत्पन्न हो सकता है। यदि यह रक्तस्राव बढ़ता जाए, तो वह मस्तिष्क को दबाने लगता है, जिससे तंत्रिका-कार्य बिगड़ता है और कई बार आपातकालीन सर्जरी की आवश्यकता पड़ती है। यह अत्यधिक CSF ड्रेनेज की एक गंभीर और सामान्य जटिलता है।

3. शिरापरक जाम, कम मस्तिष्क रक्त प्रवाह और इंफार्क्शन

CSF दाब में गिरावट से मस्तिष्क की शिराओं में रक्त प्रवाह बाधित होता है। इससेः मस्तिष्क को पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं मिलती। कुछ संवेदनशील क्षेत्रों में इस्कीमिया या ब्रेन इंफार्क्शन (मस्तिष्काघात) हो सकता है

4. ब्रेनस्टेम का विकृति और हर्निएशन (दुर्लभ, पर अत्यंत घातक)

अत्यधिक CSF हानि की स्थिति में मस्तिष्क का निचला भाग (ब्रेनस्टेम) दब सकता है। ब्रेनस्टेम हीःश्वसन, हृदयगति, चेतना को नियंत्रित करता है। इस पर दबाव पड़ने से साँस रुकना, हृदय गति असंतुलन और अचानक मृत्यु तक हो सकती है। यही वह अवस्था है जहाँ अत्यधिक CSF ड्रेनेज जानलेवा बन जाती है।

अत्यधिक CSF निकासी के सामान्य कारण

ओवर-ड्रेनिंग शंट सिस्टम (जैसे वेंट्रिकुलोपेरिटोनियल या वेंट्रिकुलोएट्रियल शंट, जिनके वाल्व ठीक से कार्य न करें या खड़े होने पर सायफोनिंग हो)

१. चिकित्सकीय प्रक्रियाओं में अधिक निकासी (सर्जरी के बाद अत्यधिक लम्बर ड्रेनेज)

2. बड़े स्पाइनल CSF लीक्स (स्वतः या प्रक्रिया के बाद उत्पन्न)

चेतावनी संकेत (Red Flags — तुरंत कार्रवाई आवश्यक)

1. खड़े होते ही तेज़ सिरदर्द
2. नई न्यूरोलॉजिकल समस्या, जैसे कमजोरी, भ्रम, अत्यधिक नींद
3. मतली, उल्टी, गर्दन में जकड़न
4. आँखों की नसों का प्रभावित होना (डबल दिखना)
5. पुतलियों का असमान आकार, शरीर के एक हिस्से में कमजोरी (सबड्यूरल हेमेटोमा का संकेत)

यदि यह लक्षण शंट, लम्बर ड्रेन या स्पाइनल प्रक्रिया के बाद दिखाई दें, तो तत्काल न्यूरोलॉजिकल जाँच और CT/MRI आवश्यक है।

रोकथाम और उपचार — वर्तमान चिकित्सा पद्धतियाँ

रोकथाम के उपाय

1. प्रोग्रामेबल / एडजस्टेबल वाल्व जिनसे CSF निकासी का दाब आवश्यकतानुसार बदला जा सकता है
2. एंटी-सायफोन और फ्लो-रेगुलेटिंग डिवाइस जो खड़े होने पर अत्यधिक ड्रेनेज को रोकते हैं (आधुनिक शंट सिस्टम का महत्वपूर्ण हिस्सा)

तीव्र और उप-तीव्र उपचार

संरक्षणात्मक उपायः बेड रेस्ट, सीधा लेटना, पर्याप्त तरल पदार्थ, कैफीन

एपिड्यूरल ब्लड पैचः स्पाइनल CSF लीक्स में रोगी के अपने रक्त को एपिड्यूरल स्पेस में डालकर लीकेज को सील किया जाता है (आजकल इमेज-गाइडेड, टार्गेटेड पैच अधिक प्रभावी माने जा रहे हैं)

शंट एडजस्टमेंट या अस्थायी क्लैम्पिंग

सर्जरीः बड़े सबड्यूरल हेमेटोमा की निकासी या लगातार CSF लीकेज की मरम्मत

नवीनतम विकास और शोध (Latest Developments)

1. मल्टीडिसिप्लिनरी कंसेंसस गाइडलाइंस, न्यूरोलॉजिस्ट, न्यूरोसर्जन और रेडियोलॉजिस्ट द्वारा संयुक्त दिशानिर्देश—जिससे शीघ्र पहचान और व्यक्तिगत उपचार संभव हो रहा है
2. टार्गेटेड इमेज-गाइडेड ब्लड पैच MRI/CT से लीकेज की सटीक पहचान कर उपचार—रिकवरी तेज़ और जटिलताएँ कम
3. स्मार्ट शंट सिस्टम का विकास प्रोग्रामेबल वाल्व, एंटी-सायफोन तकनीक और भविष्य में सेंसर-आधारित स्वचालित नियंत्रण पर शोध जारी
4. उन्नत MRI और CSF फ्लूइड डायनामिक्स CSF कमी से मस्तिष्क की शिराओं और ग्लिम्फैटिक सिस्टम पर पड़ने वाले प्रभावों की बेहतर समझ

सारांश (Bottom Line)

1. अत्यधिक CSF ड्रेनेज केवल एक साधारण जटिलता नहीं है। यह मस्तिष्क के धँसने, नसों के फटने, रक्तसंचार में बाधा और अंततः ब्रेनस्टेम दबाव जैसी प्राणघातक स्थितियों को जन्म दे सकती है।
2. इसलिए सावधानीपूर्वक रोकथाम, शीघ्र पहचान और त्वरित उपचार जीवनरक्षक सिद्ध होते हैं।

सर्दियों में हॉट कोको पीने मिलते हैं जबरदस्त ये 5 फायदे, शरीर-दिमाग रहता है मस्त-मस्त

हॉट कोको शरीर के मेटाबॉलिज्म को सक्रिय कर ऊर्जा बढ़ाने में सहायता करता है। इसमें मौजूद फ्लेवोनॉल्स ब्लड सर्कुलेशन को सुधारते हैं, जिससे दिमाग तक पर्याप्त ऑक्सीजन और पोषक तत्व पहुंचते रहते हैं। आइए आपको बताते हैं कोको पाउडर ड्रिंक के फायदे।

सर्दियों के मौसम में जैसे-जैसे तपमान गिरता है, ठंड भी बढ़ने लगती हैं। इस मौसम में शरीर धीमा हो जाता है और दिमाग भी थोड़ा सुस्त सा महसूस करता है। इस दौरान एक गर्म कप हॉट कोको केवल स्वाद ही नहीं, बल्कि हेल्थ को बूस्ट करती है। कोको में मौजूद फ्लेवोनॉल्स, एंटी-ऑक्सीडेंट्स और अन्य कंपाउंड्स इसे एक ऐसा ड्रिंक बनाते हैं जो शरीर और दिमाग दोनों को ही अंदर से एनर्जी प्रदान करता है। कई स्टडीज में पाया गया है कि हॉट कोको केवल एक चॉकलेट ड्रिंक नहीं, बल्कि मेटाबॉलिज्म, हार्ट हेल्थ, ब्रेन फंक्शन और ओवरऑल वेलनेस को सपोर्ट करने वाला एक नेचुरल टॉनिक है। कोको पाउडर को पानी में घोलकर पीने से मेटाबॉल्जिम सबसे

बेहतर होता है। यह कॉलेस्ट्रॉल लेवल को सुधरता है और स्टेम सेल हेल्थ को भी सपोर्ट मिलता है। आप एक से दो चम्मच कोको पाउडर का सेवन कर सकते हैं। आइए आपको बताते हैं कोको पाउडर ड्रिंक के फायदे।

ब्रेन और बॉडी के लिए क्यों फायदेमंद है हॉट कोको?

हॉट कोको शरीर के मेटाबॉलिज्म को सक्रिय कर ऊर्जा बढ़ाने में सहायता करता है। इसमें मौजूद फ्लेवोनॉल्स ब्लड सर्कुलेशन को सुधारते हैं, जिससे दिमाग तक पर्याप्त ऑक्सीजन और पोषक तत्व पहुंचते रहते हैं। इसी कारण यह ड्रिंक मूड बेहतर करने, तनाव कम करने और ध्यान बढ़ाने में मददगार मानी जाती है। हेल्थ एक्सपर्ट के अनुसार, कोको ड्रिंक दिल की सेहत, कोलेस्ट्रॉल के संतुलन और ब्लड शुगर नियंत्रण में भी फायदेमंद है। शोध बताते हैं कि नियमित रूप से कोको का सेवन करने से पेट और कमर की अतिरिक्त चर्बी घट सकती है और शरीर की बनावट में भी सुधार हो सकता है।

कोको ड्रिंक पीने के फायदे

- शुद्ध कोको में फ्लेवोनॉल्स होते हैं,इसका सेवन करने से मेटाबॉलिज्म बढ़ता है। यह दिल की सेहत बेहतर करता है और स्टेम सेल सपोर्ट में मदद मिलती है।
- कोको ड्रिंक पीने से टोटल कोलेस्ट्रॉल कम होता है। इसे पीने से बैड कोलेस्ट्रॉल कम होता है और गुड कोलेस्ट्रॉल बढ़ता है।
- ब्लड ग्लूकोज को बेहतर तरीके से कंट्रोल करने में मदद मिलती है।
- अगर आप नियमित रुप से कोको ड्रिंक पीते हैं, तो बॉडी कंपोजिशन बेहतर होगा, कमर की चर्बी भी कम होगी और ओवरऑल वेलनेस में सुधार आएगा।

कोको ड्रिंक पीने का सही तरीका

- हमेशा हाई-क्वालिटी, अनस्वीटेंड कोको पाउडर का ही उपयोग करें।
- एक कप गरम पानी में लगभग 2 चम्मच कोको पाउडर घोलें।
- इसमें चीनी न डालें या फिर कम मात्रा में हल्की चीनी डाल लें।
- कोको ड्रिंक में दूध की बजाय पानी बेहतर रहता है क्योंकि इससे कैलोरी कम होती हैं।
- इसको आप दिन में एक बार, खासकर सुबह या दोपहर के समय लें, ताकि एनर्जी और फोकस दोनों बेहतर बने।

बढ़े हुए प्रोस्टेट (BPH) में किन चीज़ों से बचें

बार-बार पेशाब आना, रात में उठना, धार कमजोर होना — इन लक्षणों में गलत आहार बड़ी भूमिका निभाता है।

इनसे बचें या कम करें:

1. सफेद ब्रेड, पास्ता, सफेद चावल

इंसुलिन बढ़ाकर प्रोस्टेट सूजन बढ़ाते हैं।

2. अधिक दूध-दही-चीज़

हार्मोनल प्रभाव से प्रोस्टेट समस्याएँ बढ़ सकती हैं।

3. तला-भुना रेड मीट

कैंसर-कारक रसायन बनते हैं।

4. बहुत अधिक नॉन-वेज प्रोटीन

प्रोस्टेट ग्रोथ सिग्नल बढ़ा सकता है।

5. शराब (खासकर बीयर)

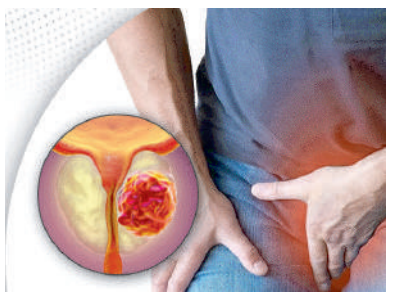

प्रोलैक्टिन बढ़ाकर BPH बिगाड़ती है।

6. चाय-कॉफी व कैफीन

पेशाब की जलन व बार-बार जाने की समस्या बढ़ाती है।

7. तला-भुना व फैटी खाना

सूजन व कैंसर जोखिम बढ़ाता है।

8. ज्यादा नमक व पैकेज्ड फूड

मूत्र संबंधी लक्षण तेज करता है।

प्रोस्टेट के लिए फायदेमंद आहार

- टमाटर
- ब्रोकली
- दालें, चना, टोफू
- मछली
- कद्दू के बीज
- ग्रीन टी

सही खान-पान दवा का विकल्प नहीं, लेकिन लक्षणों को काफी नियंत्रित करता है। डॉक्टर की सलाह ज़रूर लें।

टिनिटस, कोई बीमारी नहीं बल्कि एक लक्षण है, जाने

टिनिटस वह स्थिति है जिसमें कानों में बिना किसी बाहरी स्रोत के घंटी, बजाना, भिनभिनाहट जैसी आवाज़ें सुनाई देती हैं। यह कोई बीमारी नहीं बल्कि एक लक्षण है और वयस्कों में करीब 15–20% लोगों को प्रभावित करता है। इलाज मुश्किल इसलिए होता है क्योंकि अक्सर इसका वास्तविक कारण पता नहीं चलता।

टिनिटस के संभावित कारण:

1. इनर ईयर (भीतर के कान) की कोशिकाओं को नुकसान
2. गर्दन या रीढ़ की हड्डी की चूक
3. खराब परिसंचरण या उच्च रक्तचाप
4. उम्र बढ़ना
5. तेज़ आवाज़ का लंबे समय तक संपर्क
6. कान में मोर्टेक स्थितियाँ (कई सिरे वाले कारण)
7. एनीमिया, थायरॉइड समस्याएँ
8. कुछ दवाइयाँ (एंटीबायोटिक्स, एस्पिरिन, एंटीडिप्रेसेंट)
9. तनाव और अवसाद

जो विटामिन मदद कर सकते हैं:

1. विटामिन A — कान की स्वास्थ्य के लिए, सूजन कम करने और प्रतिरक्षा बढ़ाने में सहायक।
2. B विटामिन, खासकर B12 — नर्वस सिस्टम और कान के दबाव में मददगार; B-complex या उच्च B12 मात्रा उपयोगी हो सकती है।
3. विटामिन E — एक मजबूत एंटीऑक्सिडेंट जो कानों में रक्त वाहिकाओं में बहाव सुधार सकता है।

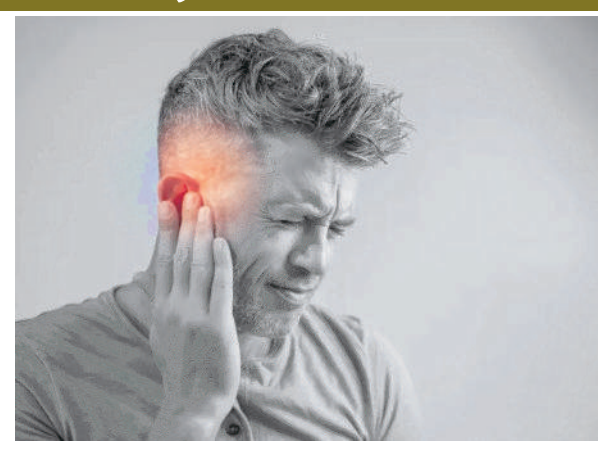

अन्य सुझाव: अनानास, लहसुन और समुद्री सब्ज़ियाँ जैसी खाद्य चीज़ें खाएँ। चीनी, शराब, सिगरेट और अधिक कैफ़ीन से बचें।

मुख्य संदेश: टिनिटस का कोई एक "जादुई इलाज" नहीं है। इसके लिए सबसे अच्छा तरीका है वास्तविक कारण ढूँढना और इलाज करना, जबकि स्वस्थ जीवनशैली और सही विटामिन सेवन सहायक हो सकते हैं।

सर्दियों में कौन-से विटामिन की कमी से लगती है ज्यादा ठंड, जानें काम की बात

सर्दी का मौसम शुरू होते ही अगर आपको आसपास के लोगों की तुलना में ज्यादा ठंड महसूस होने लगती है, तो इसके पीछे शरीर में किसी महत्वपूर्ण पोषक तत्व की कमी जिम्मेदार हो सकती है। खासतौर पर कुछ विटामिन और मिनरल्स की कमी शरीर के तापमान को संतुलित रखने में बाधा डालती है, जिससे ठंड अधिक लगने लगती है। जानिए, कौन-सा विटामिन कम होने पर ठंड ज्यादा महसूस होती है।

कुछ लोगों को सर्दियो में सबसे ज्यादा ठंड लगती है। अक्सर हाथ-पैर भी ठंडे रहते हैं। ऐसे लोग सर्दियों में हीटर के सामने ही दिन बिताते हैं या फिर रजाई में लेटे रहते हैं। यदि आपको भी इस मौसम में ठिठुरन वाली ठंड लगती हैं, तो यह लेख आपके लिए है। यदि आपके साथ भी ऐसा है तो यह गलती सर्दी की नहीं, बल्कि आपके शरीर में हो रही कमियों का परिणाम भी हो सकता है। शरीर में कुछ विटामिनों की कमी से व्यक्ति को ठंड ज्यादा लगती है। खासतौर पर बॉडी में रेड ब्लड सेल्स की कमी के कारण भी ठंड ज्यादा लगती है। क्योंकि यह शरीर के टिश्यूज को ऑक्सीजन पहुंचाते हैं। पूरे शरीर में कोशिकाओं को हीट देने और शरीर का टेंपरेचर बनाए रखने वाली मेटाबॉलिज्म प्रोसेस के लिए इस ऑक्सीजन की जरुरत होती है। अगर शरीर में विटामिन की कमी होती है तो रेड ब्लड सेल्स कम हो जाते हैं। जिस वजह से बाकी लोगों की तुलना में आपको ठंड ज्यादा लगती है। जानिए किस विटामिन की कमी से लगती है सर्दी।

विटामिन बी12 की कमी

जिन लोगों की बॉडी में विटामिन बी 12 कमी होती या फिर मेगा लो ब्लास्टिक एनीमिया की शिकायत होती है। ऐसे लोगों के रेड ब्लड सेल्स की संख्या कम हो जाती है और उनका आकार नॉर्मल से ज्यादा बढ़ जाता है। जिस वजह से ठंड के प्रति शरीर सेंसेटिव हो जाता है। इसलिए विटामिन बी 12 की कमी को दूर करें। अच्छी डाइट का सेवन करें।

फोलेट की कमी

आपको बता दें कि, फोलेट को विटामिन बी 9 के नाम से जाना जाता है। फोलेट की कमी होने से व्यक्ति को ठंड ज्यादा लगती है। हेल्थ एक्सपर्ट के मुताबिक, फोलेट शरीर में स्ट्रांग रेड ब्लड सेल्स का निर्माण करता है। जब शरीर में पर्याप्त मात्रा में विटामिन बी 9 यानी फोलेट की मात्रा नहीं होगी तो विटामिन 12 की कमी स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

आयरन की कमी

ज्यादा ठंड लगने के पीछे का कारण केवल विटामिन की कमी ही नहीं, बल्कि अक्सर आयरन की कमी से भी अधिक ठंड लगती हैय महिलाओं में आयरन की कमी सबसे ज्यादा देखने को मिलती है। आयरन की कमी शरीर में होने वाले एनीमिया में बॉडी में रेड ब्लड सेल्स के निर्माण के लिए भरपूर मात्रा आयरन नहीं होता है। खून (हीमोग्लोबिन) के निर्माण के लिए सबसे जरुरी आयरन होता है। आप भी ठंड से बचने के लिए आयरन रिच फूड्स का सेवन जरुर करें।

सर्दियों में योग करते समय भूलकर भी न करें ये गलतियां, वरना सेहत को पहुंच सकता है नुकसान

सर्दियों के मौसम में योग करने के दौरान कुछ गलतियों से बचना जरूरी है। ऐसा हम आपको इसलिए बता रहे हैं, क्योंकि कई लोग सर्दियों में सुबह में योग को लेकर काफी ज्यादा उत्साहित होते हैं। लेकिन शरीर को तैयार किए बिना कठिन योगासन चोट की वजह बन सकता है।

सर्दियों के मौसम में योग करना शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना बेहद जरूरी होता है। ठंडी ह्वाओं और कम तापमान के बीच योगाभ्यास करने से शरीर को गर्म और फिट रखने में मदद मिलती है। योग करने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। इस मौसम में योग करने के दौरान कुछ गलतियों से बचना जरूरी है। ऐसा हम आपको इसलिए बता रहे हैं, क्योंकि कई लोग सर्दियों में सुबह में योग को लेकर काफी ज्यादा उत्साहित होते हैं। लेकिन शरीर को तैयार किए बिना कठिन योगासन चोट की वजह बन सकता है।

ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको सर्दियों के मौसम में योग करने के दौरान अक्सर होने वाली गलतियों और उनको सुधारने के तरीकों के बारे में बताने जा रहे हैं। जिससे कि आप सेफ और प्रभावी तरीके से योगासन कर सकें।

वॉर्मअप किए बिना स्ट्रेच करना

ठंडी के मौसम में शरीर का तापमान कम होता है और मांसपेशियां सख्त हो जाती हैं। ऐसे में अगर आप बॉडी को गर्म किए स्ट्रेच या कठिन योगासन करते हैं, तो मांसपेशियों में खिंचाव और मोच या चोट लगने का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए योग करने से पहले हल्का वार्मअप एक्सरसाइज और स्ट्रेचिंग करना बेहद जरूरी होता है।

खाने के बाद योग करना

हैवी खाना खाने के बाद फौरन योग करना पाचन को प्रभावित कर सकता है। इससे उल्टी या फिर पेट दर्द जैसी समस्याएं हो सकती हैं। सर्दियों में खाना धीरे-धीरे पचता है। इसलिए योग अभ्यास के कम से कम 1.5 या २ घंटे पहले भोजन करना चाहिए।

ठंडी ह्वा में योग करना

ठंडियों में बाहर योग करते समय शरीर को पर्याप्त गर्म रखना बेहद जरूरी होता है। बिना गर्म कपड़ों में सर्दियों में योग करने से शरीर ठंडा हो सकता है और मांसपेशियां कठोर हो सकती हैं और संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए इस दौरान हल्के जैकेट या थर्मल कपड़े पहनना चाहिए।

गलत आसन या गलत तकनीक करना

ठंडी में शरीर सुस्त हो जाता है, इसलिए गलत तरीके से योगासन करना चोट का कारण बन सकता है। योग की सही तकनीक, सांस पर ध्यान रखना और सही मुद्रा करना जरुरी होता है। किसी भी कठिन आसन को बिना किसी ट्रेनर की सलाह पर नहीं करना चाहिए।

वार्मअप न करना

सर्दियों में वार्मअप न करने से शरीर में ब्लड सर्कुलेशन कम होता है और मांसपेशियां सख्त रहती हैं। ऐसे में स्ट्रेचिंग और योगासन करना खतरे भरा रहता है। कम से कम 5-10 मिनट का हल्का सा वार्मअप जरुर करना चाहिए।

असावधानीपूर्ण योग करना

बता दें कि लंबे समय तक बिना सावधानी और बिना ब्रेक के योग करने से शरीर पर दबाव पड़ सकता है। इससे जोड़ों में चोट, मांसपेशियों में दर्द और थकान जैसी समस्याएं हो सकती हैं। सर्दियों में योग सत्र छोटा लेकिन नियमित रखना बेहतर होता है।

पुरुषों के लिए चमत्कारी गिलोय जूस को फायदे जो बदल देंगे आपकी सेहत, आज ही जानें

अगर आप रोजाना सुबह खाली पेट गिलोय जूस पीने की आदत बना लें, तो यह आपके शरीर को कई तरह की बीमारियों से बचा सकते हैं। गिलोय इम्यूनिटी बढ़ाने से लेकर ब्लड शुगर, पाचन और स्किन के लिए भी काफी फायदेमंद माना जाता है।

गिलोय को आयुर्वेद में एक चमत्कारी औषधि मानी जाती है। गिलोय के ताजे पत्तों या डंठल से निकला जूस हमारे शरीर को अंदर से ताकतवर बनाने में मदद करता है। वहीं अगर आप रोजाना सुबह खाली पेट गिलोय जूस पीने की आदत बना लें, तो यह आपके शरीर को कई तरह की बीमारियों से बचा सकते हैं।

गिलोय इम्यूनिटी बढ़ाने से लेकर ब्लड शुगर, पाचन और स्किन के लिए भी काफी फायदेमंद माना जाता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको रोजाना सुबह गिलोय का जूस पीने के फायदे के बारे में बताने जा रहे हैं।

गिलोय का जूस पीने के फायदे

इम्युनिटी

गिलोय रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने का काम करता है। रोजाना सुबह इस जूस का सेवन करने से यह हमें सर्दी, खांसी जैसी आम बीमारियों से बचाता है और उनसे लड़ने की ताकत देता है। वहीं इसका रोजाना सेवन करने से आप मौसमी बीमारियों से भी खुद का बचाव कर सकते हैं।

पाचन तंत्र

इस जूस का सेवन करने से पेट की समस्याओं जैसे अपच, गैस और कब्ज की समस्या दूर होती है। वहीं सुबह गिलोय का जूस पीने से पेट हल्का लगता है और खाना आसानी से पचाया जा सकता है। खासतौर पर आंते साफ करने के लिए यह बेहद फायदेमंद होता है।

ब्लड शुगर कंट्रोल

गिलोय का जूस डायबिटीज के मरीजों के लिए काफी फायदेमंद होता है। क्योंकि यह शुगर को कंट्रोल करता है और इसका सेवन करने से शुगर लेवल धीरे-धीरे कंट्रोल हो सकता है।

शरीर को अंदर से साफ

शरीर के अंदर जमी हुई गंदगी और टॉक्सिन्स को बाहर निकालने में गिलोय मदद करता है। इसका सेवन करने से चेहरे पर निखार आता है और मुंहासे भी कम हो जाते हैं। गिलोय का जूस हमारी लिवर और किडनी को भी साफ रखने में सहायता करता है।

थकान और टेंशन

अगर आपको भी जल्दी थकान हो जाती है और बहुत ज्यादा टेंशन रहती है, तो रोजाना सुबह गिलोय का जूस पीना चाहिए। क्योंकि इससे दिमाग शांत रहता है और नींद भी अच्छी आती है।

।।शिव - शक्ति ।।

पिंकी कुंडू

शिव और शक्ति का यह दिव्य संयोग केवल एक मूर्ति नहीं, बल्कि तंत्र का सबसे गूढ़ रहस्य है। साधक जब पहली बार इस रूप को देखता है, तो उसे लगता है कि यह शरीरों का मिलन है, परंतु तांत्रिक जानता है कि यह ऊर्जाओं का संयोग है। शिव बिना शक्ति के केवल मौन है, और शक्ति बिना शिव के दिशाहीन है। जब दोनों एक-दूसरे में विलीन होते हैं, तभी साधना का परम फल प्रकट होता है।

यह मुद्रा कुंडलिनी की उस यात्रा को दर्शाती है जहाँ ऊर्जा मूलाधार से उठकर सहस्रार में स्थित शिव-चेतना से मिलती है। यह मिलन किसी देह की लालसा नहीं, बल्कि चेतना के विस्फोट की अवस्था है। यही वह क्षण है जब साधक की श्वास, मन, इच्छाएँ और अहं सब कुछ समाप्त हो जाता है और भीतर केवल समाधि की अग्नि शेष रहती है। इस अग्नि में साधक जलता नहीं, बल्कि जन्म लेता है।

युगल-मुद्रा का रहस्य यह है कि ब्रह्मांड दो शक्तियों पर टिका है—पुरुष और स्त्री। इन दोनों का संतुलन ही जीवन का सार है। जब साधक अपने भीतर के पुरुष तत्व और स्त्री तत्व को एक कर लेता है, तब उसके भीतर वह प्रकाश फूटता है जिसे ऋषि-मुनियों ने परब्रह्म कहा है। यह वह योग है जहाँ देह अस्तित्व में रहती है, पर देह की कोई आवश्यकता नहीं बचती। वहाँ केवल ऊर्जा बहती है, चेतना खिलती है, और साधक ब्रह्मांड के केंद्र से एक हो जाता है।

तंत्र यह नहीं कहता कि इच्छा छोड़ो; तंत्र कहता है कि इच्छा को साधो। जब साधक काम को कामना नहीं, बल्कि शक्ति मानकर साधता है, तब वही ऊर्जा उसे मुक्त करती है। शिवशक्ति का यह मिलन सृष्टि की जड़ में छिपा हुआ रहस्य है। यह रूप बताता है कि संसार का हर कण इसी संयोग से धड़क रहा है। यह ध्यान की वह अवस्था है जहाँ साधक स्वयं शिव भी है और स्वयं शक्ति भी। जब दोनों मिलते हैं, साधक स्वयं ब्रह्म हो जाता है।

"ॐ शिवायै शक्त्यै ऐक्यरूपाय नमः"

अर्थः मैं उस परम शक्ति को नमन करता हूँ जिसमें शिव और शक्ति एक रूप होकर स्थित हैं।

यह मंत्र साधक के भीतर पुरुष–प्रकृति ऊर्जा को संतुलित करता है।

शैव" (शिव साधक), अघोर पंथ

पिंकी कुंडू

अघोर पंथ की उत्पत्ति के काल के बारे में अभी निश्चित प्रमाण नहीं मिले हैं, परन्तु इन्हें कपालिक संप्रदाय के समकक्ष मानते हैं। ये भारत के प्राचीनतम धर्म "शैव" (शिव साधक) से संबधित है। अघोरियों को इस पृथ्वी पर भगवान शिव का जीवित रूप माना जाता है। अघोरी यानी बहुत सरल और सहज, जिसके मन में कोई भेदभाव नहीं हो। जो हर चीज में समान भाव रखता है। यह सड़ते जीव के मांस को भी उतना ही स्वाद लेकर खाते हैं, जितना स्वादिष्ट पकवानों को स्वाद लेकर खाया जाता है। अन्य साधुओं के लिए मांस, मदिरा या शारीरिक संबंध जैसी चीजें पूरी तरह निषेध होती हैं, लेकिन अघोरी या तंत्र साधकों द्वारा की जाने वाली अराधना की यह मुख्य शर्ते होती हैं।

अघोरियों के दृष्टिकोण से मांस का सेवन यह साबित करता है कि सीमा शब्द उनके लिए मायने नहीं रखता और सब कुछ एक ही धागे से बंधा हुआ है। इसलिए वे इंसान के मांस के साथ-साथ उसके रक्त का भी सेवन करते हैं। बहुत से अघोरी अपनी साधना पूरी करने के लिए मृत शरीर के साथ संभोग भी करते हैं और साथ ही स्वयं मदिरा का सेवन कर अपने आराध्य को भी अर्पण करते हैं।

यह मूलत: तीन तरह की साधनाएं करते हैं। शिव साधना, शव साधना और श्मशान साधना। शिव साधना में शव के ऊपर पैर रखकर खड़े रहकर साधना की जाती है। बाकी तरीके शव साधना की ही तरह होते हैं।

इस साधना का मूल शिव की छाती पर पार्वती द्वारा रखा हुआ पैर है। ऐसी साधनाओं में मुर्दे को प्रसाद के रूप में मांस और मदिरा चढ़ाई जाती है।

शव और शिव साधना के अतिरिक्त तीसरी साधना होती है श्मशान साधना, जिसमें आम परिवार जनों को भी शामिल किया जा सकता है। इस साधना में मुर्दे की जगह शवपीठ (जिस स्थान पर शवों का दाह संस्कार किया जाता है) की पूजा की जाती है। उस पर गंगा जल चढ़ाया जाता है। यहां प्रसाद के रूप में भी मांस-मदिरा की जगह मावा चढ़ाया जाता है। इसी कपालिक संप्रदाय के तीसरे मत के अनुसार देवघर स्थित बाबा वैद्यनाथ की पूजा की जाती है ।

शिवे यूत्वा् शिवं यजेत ।

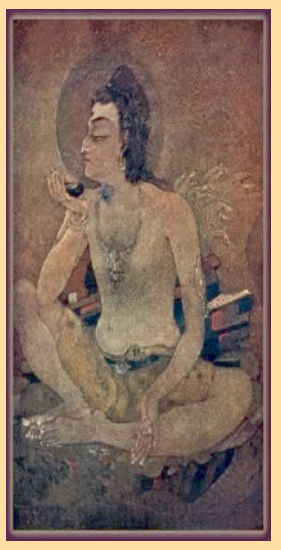

"संगत सही, मार्गदर्शन सही तो जीवन सही"

पिंकी कुंडू

समय दौड रहा है, जीवन सिमट रहा है, जान पहचान बढ रही है परंतु अपनापन घट रहा है !
शांत रहकर परिस्थितियों को समझना सीखो, क्यूँकी हर कोई आपके जवाब के लायक नहीं होते !
धन दौलत कभी स्थाही नहीं होती है, उसे एक व्यक्ती के पास से दुसरे व्यक्ती के पास जाते देर नहीं लगती है !
संसार मे बढते हुये दु:खो से बचने का उपाय है, स्वयं को दु:ख के कारणो से बचाना, और दु:ख के कारणो से बचने का एकमात्र उपाय है ₹ईश्वर₹ का ध्यान !
बुरे इन्सान का साथ उस कोयले के समान है,

जो गर्म हो तो हाथ जला देता है और ठंडा हो तो हाथ काले कर देता है !

अर्थात संगत सही, मार्गदर्शन सही तो जीवन सही !!

।। शिव नटराज ।।

पिंकी कुंडू

कहते हैं कि एक बार शिव नृत्य करने लगे तो साथ ही पार्वती भी नृत्य में उनका साथ देने लगीं। समस्या ये हुई की हर ताल पर पार्वती का नृत्य बेहतर होता और शिव हार जाते !

शिव के नृत्य का नाम ज्यादातर लोगों को पता ही है। देवाधिदेव का नृत्य जहाँ तांडव कहलाता है, वहीँ उसका प्रतिरूप जैसा पार्वती का नृत्य लास्य कहा जाता है। देवी के रुकने तक शिव जीत नहीं पाए थे।

अगर कभी, कहीं, किसी जगह, किसी के बोलना बंद ना करने के कारण आप नहीं जीत पाते तो ज्यादा अफ़सोस मत कीजिये। वामांगी के रुकने से पहले तक, अर्धनारीश्वर भी नहीं जीत पाए थे।

ये कहानी शिव पुराण में आती है और शायद जालंधर नाम के असुर की है। ध्यान रहे, असुर बताया गया है राक्षस नहीं था, कम से कम इस कहानी तक तो नहीं। शक्ति-सामर्थ्य में अक्सर असुर देवों यानि सुरों से ऊपर ही होते थे। असुर ने भी थोड़े ही समय में इन्द्रासन कब्ज़ा लिया और जैसा कि आसुरी प्रवृत्ति होती है वैसे ही उसने भी सोचा कि अब मैं सबसे महान हूँ, तो सभी सबसे अच्छी चीज़ों पर मेरा अधिकार है।

इसी मद में असुर पहुंचा कैलाश पर और शिव के साथ पार्वती को देखकर कहा,सबसे सुन्दर स्त्री पर मेरा अधिकार है, तो लाओ इसे मेरे हवाले करो ! आम तौर पर कहा जाता है कि भगवान कभी आपका नुकसान नहीं करते। वो सिर्फ आपकी मति भ्रष्ट कर देते हैं, फिर आप अपने शत्रु स्वयं हैं, भगवान को आपका नुकसान करने की जरूरत नहीं। भगवान शिव ने भी असुर के साथ यही किया।

असुर की भूख को पलटा कर उस पर छोड़ दिया ! भगवान शिव से प्रकट हुई वो प्रचंड क्षुधा रास्ते की सभी चीज़ों को निगलती असुर की ओर बढ़ी तो उसने पहले तो इस शक्ति का अपनी शक्तियों से प्रतिकार करने का प्रयास किया। लेकिन उन सभी प्रतिरोधों को निगलता वो जब असुर को लीलने को हुआ तो बेचारा असुर भागा। यहाँ-वहां कहीं शरण नहीं पाने पर बेचारा असुर अपनी मूर्खता पर पछताता आखिर भगवान शिव की ही शरण में पहुंचा और लगा प्राणों की भीख मांगने।

भगवान शिव ने जैसे ही उसे क्षमा करके सब कुछ निगलते पीछे ही आ रही शक्ति को रुकने कहा तो वो दैवी शक्ति बोली भगवान एक तो मुझे इसे ही खाने के लिए ऐसी भूख बना कर पैदा किया ! अब आप मेरा आहार ही छीन रहे हैं ? मैं अब खाऊंगा क्या ? भगवान ने एक क्षण सोचा और कहा, ऐसा करो स्वयं को ही खा जाओ ! आदेश पाते ही उसने पूँछ की ओर से खुद को खाना शुरू किया और अंत में केवल उसका मुख ही बचा। अक्सर हिन्दुओं के मंदिरों के द्वार पर यही मुख दिखता है।

भगवान शिव ने आदेश पालन के लिए स्वयं को खा लेने की उसकी क्षमता के लिए उसके मुख को 'कीर्तिमुख' नाम दिया था। उसे देवताओं से भी ऊपर स्थान मिला था।

कहानियां केवल प्रतीक होती हैं और ये कहानी भी खुद को 'मैं' को खा जाने की कहानी है। प्रतीक के माध्यम से ये वही कहा गया है जो काफी बाद के दोहे में 'जो घर बारे आपना, सो चले हमारे साथ' में कहा गया है। अपने अहंकार को खा जाने का ये आदेश कई बार कई ग्रंथों में कई साधू देते रहे हैं। ये अहंकार का आभाव सबसे आसानी से छोटे बच्चों में दिखेगा, इसी लिए बच्चों के रूप को शिव के पर्यायवाची की तरह भी इस्तेमाल किया जाना दिख जाएगा। दिगंबर, भोले जैसे नाम इसी लिए इस्तेमाल होते हैं।

सर्दियों के महीने में तुलसी के पौधों की देखभाल

पिंकी कुंडू

सर्दियों का महीना तुलसी के पौधों की देखभाल के लिए बहुत अहम होता है। ठंडी हवाओं की शुरुआत में तुलसी जल्दी मुरझाने लगती है, लेकिन अगर इस समय थोड़ी सी अतिरिक्त देखभाल की जाए, तो यह पूरा सर्दी का मौसम हरी-भरी और सुगंधित बनी रहती है।

सर्दियों में तुलसी जी को स्वस्थ रखने का तरीका :--

1 धूप और स्थान का ध्यान रखें : तुलसी को ठंड और पाले से बचाने के लिए ऐसे स्थान पर रखें जहां सुबह की हल्की धूप मिले। अगर बहुत ठंड हो तो रात में तुलसी के गमले को घर के अंदर या खिड़की के पास रखें। कोशिश करें कि दिन में कम से कम 4–5 घंटे की धूप जरूर मिले।

2 पानी देने में सावधानी बरतें : सर्दियों में मिट्टी देर से सूखती है, इसलिए रोज़ पानी न दें। जब मिट्टी की ऊपरी परत सूखी लगे तभी पानी डालें। ज्यादा पानी देने से जड़ें गल सकती हैं।

3 मिट्टी को ढीला और उपजाऊ रखें : हर 10–15 दिन में मिट्टी को थोड़ा कुरेदें ताकि हवा का संचार बना रहे। साथ ही महीने में एक बार वर्मीकम्पोस्ट या गोबर की खाद डालें, जिससे पौधे को पोषण मिले और पत्तियाँ मोटी व चमकदार बनी रहें।

4 सूखे पत्ते और टहनियाँ काटें : तुलसी के पौधे में समय-समय पर सूखे या पीले पत्ते आ जाते हैं। इन्हें हटा देने से नई कलियाँ और शाखाएँ निकलती हैं और पौधा अधिक घना होता है।

5 ठंड से सुरक्षा करें : बहुत ठंडी रातों में तुलसी के पौधे को कपड़े या प्लास्टिक शीट से हल्के से ढक सकते हैं ताकि पाले से बचाव हो सके। यह छोटा-सा उपाय तुलसी को ठंड के नुकसान से बचा सकता है।

नियमित देखभाल से तुलसी का पौधा पूरे सर्दियों के मौसम में स्वस्थ, हरा-भरा और सुगंधित बना रहेगा।

रोटी कपड़ा और मकान

पिंकी कुंडू

क्यों यहीं सुनते आए हो, ना अब इस धरती में हर व्यक्ति चाहता है कि उसका अपना खुद का घर हो, जहां वह अपनी मनमर्जी के अनुसार

1. रह सके।
2. उसे सजा सँवार सके।
3. अपने परिवार के सदस्यों के साथ जीवन व्यतीत कर सके।

व्यक्ति के जीवन की कमाई, उसकी पहचान उसका अपना भवन होता है लेकिन यह भी सत्य है कि आज की महँगाई के दौर में अपने लिए किसी अच्छी, सुरक्षित और जहाँ पर आधारभूत सुविधाएँ हो ऐसी जगह घर बना पाना एक टेढ़ी खीर भी है। दुनिया की आधी से ज्यादा आबादी किराये के मकानों में रहती है।

स्वयं की भूमि अथवा मकान बनाने के लिए चतुर्थ भाव का बली होना आवश्यक होता है, मंगल ग्रह को भूमि, भवन का और चतुर्थ भाव का कारक माना जाता है। अगर आप भी चाहते हैं आपका अपना घर, तो यहाँ पर बताये जा रहे कुछ उपायों को अवश्य ही करें, इनको करने से शीघ्र ही आपके घर खरीदने के योग बनेंगे, मार्ग में आने वाली बाधाएं शान्त होगी।

* ज्योतिष शास्त्र के अनुसार यदि किसी जातक की कुंडली में मंगल या शनि ग्रह से संबंधित कोई ग्रह दोष हो तो उसे अपने घर का सपना पूरा करने में तमाम परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसलिए अपनी कुंडली किसी अच्छे ज्योतिष को दिखाकर मंगल और शनि के उपाय अवश्य ही कर लें। मंगल को भूमि तो शनि को निर्माण का कारक माना गया है। इसलिए जब भी दशा/अन्तर्दशा में मंगल व शनि का संबंध चतुर्थ/चतुर्थेश से बनता है, तब व्यक्ति अपना घर बनाता है उसे भूमि, प्रापर्टी डीलिंग के कार्यों में श्रेष्ठ सफलता मिलती है।

अपना घर बनाने के लिए लाभकारी उपाय

1. अपने घर की चाह रखने वाले जातक नित्य प्रातः स्नान कर गणेशजी को दूर्वा और एक लाल फूल चढ़ाएं। ऐसा लगातार 21 दिन तक करते हुए भगवान श्री गणेश जी से अपने घर की समस्या के निवारण के लिए प्रार्थना करें।

2. अपने घर बनवाने के मार्ग में किसी भी प्रकार की अड़चनों को दूर करने के लिए किसी भी मंदिर में एक नीम की लकड़ी का बना हुआ छोटा सजा-संवरा सा घर दान करें।

3. अपना घर बनवाने के योग मजबूत करने के लिए मंगलवार के दिन सफेद गाय और उसके बछड़े को लाल मसूर की दाल व गुड़ और घोड़े को चने की भीगी हुई दाल खिलाएं।

4. नित्य कौए को दूध में भीगी रोटी और तोतों को सप्तधान डालें। इससे आर्थिक पक्ष मजबूत होने लगता है धीरे धीरे अपना स्वयं का घर बनाने की परिस्थितियाँ बनने लगती है।

5. मंगलवार को लाल मसूर की दाल का दान करने से भी अपना भवन बनाने के योग प्रबल होते हैं।

6. अपने घर के पूजा स्थल अथवा ईशान दिशा में एक मिट्टी का छोटा घर लाकर रखें और उसमें हर रविवार को सरसो तेल का दीपक जलाएं और दीपक जलने के बाद उसमें फिर से कपूर जलाएं। इस मिटटी के घर को भी अपने हाथ से खूबसूरत तरीके से सजाएं। इससे भी ग्रह निर्माण में आने वाली बाधाएं दूर होने लगती है ।

मान्यताओं के अनुसार यदि किसी घर में चिडिया या गिलहरी अपना घोंसला बना लें तो उस घर में सुख शांति, धन समृद्धि की कोई भी कमी नहीं होती। अतः यदि वह आपके घर में अपना घोसला बना लें तो उसे जबरन हटाना नहीं चाहिए।

जिन लोगों को अपना मकान खरीदने या बनाने की इच्छा है लेकिन कोई न कोई रूकावट लगी रहती है तो वह रविवार से शुरू करके नित्य प्रातः गाय को गुड़ खिलाएं। इस उपाय को पूर्ण श्रद्धा पूर्वक लगातार करने से गौ माता की कृपा से अपना मकान खरीदने में आने वाली समस्त बाधाएं दूर होने लगती है ।

अगर आप अपना स्वयं का मकान बनाना चाहते हैं, तो शुक्ल पक्ष के शुक्रवार अथवा नवरात्र के किसी भी दिन एक लाल कपड़े में छः चुटकी कुमकुम, छः लौंग, नौ बिंदिया, नौ मुट्ठी साफ़ मिट्टी और छः कौड़ियाँ लपेट कर किसी भी नदी / बहते हुए पानी में मन ही मन में अपनी मनोकामना कहते हुए विसर्जित कर दें । इस उपाय से माँ दुर्गा की कृपा से शीघ्र ही अपना मकान बनाने में सफलता मिलेगी ।

अपनी मनचाही जमीन अथवा अपना मनचाहा मकान पाने के लिए नवरात्र अथवा शुक्ल पक्ष के शुक्रवार को एक उपाय करें । जहाँ पर आप मकान चाहते है उस स्थान की थोड़ी सी मिट्टी लाकर उसे एक कांच की शीशी में डालें । फिर उस शीशी में गंगा जल और कपूर डाल कर घर के ईशान कोण अथवा अपने पूजा घर पर जौ के ढेर पर स्थापित करें । फिर शुक्रवार से नित्य / पूरे नवरात्र उस शीशी के आगे माता का सिद्ध नवार्ण मन्त्र '₹ऐं हीं क्लीं चामुण्डाय विच्चे₹ ' की पांच माला जप करें और उस जौ के ढेर में गंगा जल डालते रहे । नवें दिन / नवमी के दिन हवन के बाद थोड़े से अंकुरित जौ निकाल कर उसे अपनी मन चाही जगह पर डाल दें । काँच की शीशी के अंदर की सामग्री को नदी में विसर्जित कर दें और कांच की खाली शीशी को नदी में न डालकर पीपल के पेड़ के नीचे रख दें ।

आज की दुनिया ने हमें एक नशा दे दिया है—"No.1" का।

पिंकी कुंडू

ज़िंदगी में पहले आना ज़रूरी नहीं, ज़्यादा ज़रूरी है कि तू मैदान में बना रहे। जब बाकी लोग थककर बहाने बना रहे हों, तू चुपचाप अपनी साँस संभालकर फिर एक कदम आगे रख दे।

आज की दुनिया ने हमें एक नशा दे दिया है—"No.1" का टॉपर, प्रमोशन, फॉलोअर्स, लाइक्स, स्पॉटलाइट और अगर हम "पहले" नहीं आए, तो लगता है जैसे हम हार गए, लेकिन सच यह है कि हार तब होती है जब तू खेल छोड़ देता है। बंदा पीछे चलकर भी जीत जाता है, अगर वो चलना बंद नहीं करता।

अब रामायण का एक दृश्य याद कर —लंका की ओर उड़ते हनुमान जी

हनुमान जी को देखकर कोई यह नहीं कह रहा था —"वाह, आप सबसे पहले पहुँचे!" क्योंकि वहाँ "पहले" का सवाल ही नहीं था। सवाल यह था—सीता माँ तक संदेश कौन पहुँचाएगा? कौन ऐसा है जो समुद्र, राक्षस, माया, भय — सबको काटकर भी मिशन में टिकेगा?

रास्ते में मेनाका / सुरसा / सिंहिका जैसे कितने विघ्न आए, कोई उन्हें निगलना चाहता है, कोई भ्रम में फँसाना चाहता है, कोई रुकवाना चाहता है पर हनुमानजी ने क्या किया? उन्होंने हर जगह यही साबित किया कि "मैं यहाँ जीतने नहीं, निभाने आया हूँ।" "मैं पहले बनने नहीं, पहुँचे बिना वापस नहीं जाने आया हूँ।" और जब लंका पहुँचे, तो भी उन्होंने विजय का शोर नहीं मचाया। उन्होंने काम किया — सीता माँ को आश्वासन दिया, राम का संदेश दिया,

और फिर वापस लौटकर राम को रास्ता दिखाया।

हनुमानजी की महानता "पहला" होने में नहीं थी। हनुमान जी की महानता थी — हर मुश्किल में मौजूद रहने में, डटे रहने में, फिर से खड़े होने में।

आज की जिंदगी में इसका अर्थ समझो तू शायद—

"अपने करियर में किसी से पीछे चल रहा है,

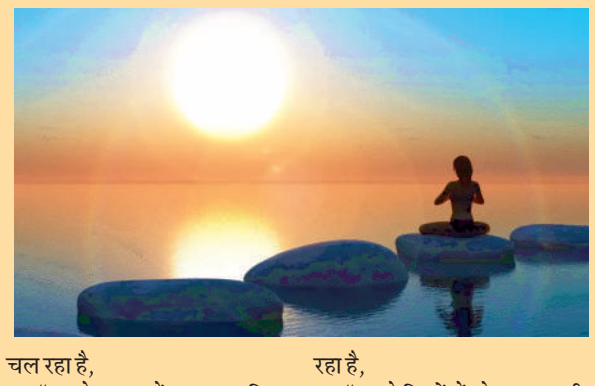

"अपने लक्ष्य में बार-बार गिर रहा है,

"अपने रिश्तों में चोट खाकर भी रोज़ उठ रहा है,

"अपने मन से लड़ रहा है... और बाहर से मुस्कुरा रहा है और अंदर से सोचता है कि "मैं तो सबसे आगे नहीं हूँ। मैं तो खास नहीं हूँ"

रामायण कहती है कि "खास वही है जो कठिन समय में भी 'गायब' नहीं होता।" जो अपने लक्ष्य के सामने बैठकर रोता भी है, तो भी अगले दिन फिर आ जाता है। जो हार के बाद खुद को समझाकर बोलता है—"आज नहीं तो कल। पर मैं छोड़ूँगा नहीं।" इसलिए : ₹ पहला आने की जिद छोड़ — लेकिन रुक मत जाना।

"लोग आगे-पीछे होते रहेंगे — पर तू अपना धर्म मत छोड़ना।

"जिंदगी में परीक्षा बहुत होंगी — पर परीक्षा पास वही करता है, जो पेपर फाड़कर भागता नहीं।

और याद रख कि आज जो आगे हैं, कल पीछे हो सकते हैं। पर जो रोज़ खुद से जीतता है—वही अंत में सबसे आगे निकलता है।

बस तू चलना मत छोड़ना। बस तू लड़ना मत छोड़ना।

निंबार्क संप्रदाय का प्रमुख केंद्र हैं आचार्य पीठ टोपी कुंज : श्रीश्री ललिताशरण देवाचार्य महाराज

सदगुरुदेव सनत्कुमार दास देवाचार्य महाराज के 47वें द्वादश दिवसीय स्मृति महोत्सव का समापन व झंरा भंडारा 16 दिसंबर को

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

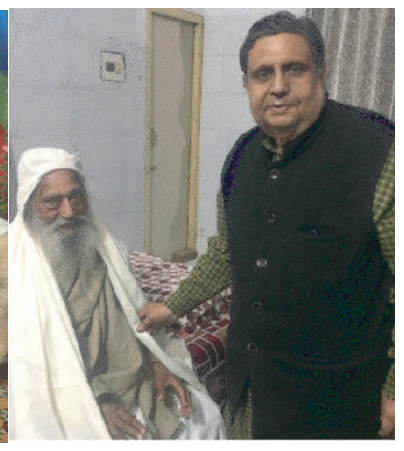

वृन्दावन। रमणरेती-परिक्रमा मार्ग स्थित प्राचीन वन विहार (आचार्य पीठ टोपी कुंज) में अनंतश्री विभूषित जगद्गुरू निंबार्काचार्य श्रीमन्मुकुंद देवाचार्य सेवा समिति चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि.) के द्वारा आद्याचार्य अनंतश्री विभूषित जगद्गुरू निंबार्काचार्य श्रीमन्मुकुंद देवाचार्य पीठाधिपति सदगुरुदेव सनत्कुमार दास देवाचार्य महाराज का 47वां द्वादश दिवसीय स्मृति महोत्सव जगदगुरू निंबार्काचार्य श्रीश्रीललिताशरण देवाचार्य महाराज के पावन सानिध्य में अत्यंत श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ चल रहा है।जिसके अंतर्गत सप्त दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा, श्रीमद्भक्तमाल, त्रिदिवसीय श्रीमहावाणी समाज गायन, अखंड श्रीमद्भागवत मूल परायण एवं अखंड श्रीयुगल महामंत्र का कीर्तन आदि के आयोजन हो रहे हैं।

वन विहार के अध्यक्ष श्रीश्रीललिताशरण देवाचार्य महाराज ने कहा कि वन विहार (आचार्य पीठ टोपी कुंज) श्रीधाम वृन्दावन का अत्यंत प्राचीन तथा निंबार्क संप्रदाय का प्रमुख केंद्र है।यह दिव्य स्थान अनेकों वर्षों से निंबार्क संप्रदाय के संवर्धन, संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार में लगा हुआ है।

उन्होंने बताया कि महोत्सव के अंतर्गत 16 दिसंबर को मध्याह्न में संत, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ महोत्सव का समापन होगा।

महोत्सव में पीपाद्वाराचार्य जगद्गुरु बाबा बलरामदास देवाचार्य महाराज, महंत बाबा संतदास महाराज, साध्वी डॉ. राकेश हरिप्रिया, महंत वृन्दावन दास महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी सच्चिदानंद शास्त्री महाराज, महंत मोहिनी शरण महाराज, प्रख्यात साहित्यकार रूपी रत्नर डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, भागवताचार्य महावीर शरण शास्त्री, डॉ. राजेश सूद, डॉ. राधाकांत शर्मा, भागवताचार्य गोपाल भैया आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

किसान समस्याओं को लेकर सिस्टम सुधार संगठन की बैठक, 26 दिसंबर 2025 को ट्रैक्टर मार्च का एलान

परिवहन विशेष न्यूज

आगरा। सिस्टम सुधार संगठन (किसान) यूनियन की एक महत्वपूर्ण बैठक संगठन के क्षेत्रीय कार्यालय गांव भवाईन में संपन्न हुई। बैठक में क्षेत्र के सम्मानित किसान सरदारी, जनप्रतिनिधि और गणमान्य लोग बड़ी संख्या में मौजूद रहे। बैठक में किसानों से जुड़ी मूलभूत समस्याओं पर गहन चर्चा की गई और उनके समाधान के लिए आंदोलन की रणनीति तय की गई।

बैठक में किसानों ने बिजली विभाग पर तानाशाही रवैये का आरोप लगाते हुए गलत बिजली बिल, फर्जी एफआईआर, सिंचाई के लिए 14 घंटे बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने और स्मार्ट मीटर लगाने की योजना का विरोध करने का निर्णय लिया। इसके साथ ही कस्बा एत्मादपुर के नेशनल हाईवे स्थित दोनों चौराहों पर लगने वाले भीषण जाम और दुर्घटनाओं को देखते हुए बाईपास निर्माण की मांग उठाई गई, ताकि जाम और जान-माल के नुकसान से निजात मिल सके।

किसानों ने खराब सड़कों की जांच कराने, समय से पहले सड़क उखड़ने के मामलों में कार्यदायी संस्थाओं, कंपनियों और ठेकेदारों पर कार्रवाई की मांग की। इसके अलावा फसलों के लिए यूरिया खाद की उपलब्धता, आवारा पशुओं की समस्या के समाधान, नेशनल हाईवे भागूपुर पर जलभराव की समस्या और तहसील एत्मादपुर क्षेत्र में माइनर, बंबा और गूलों में कम से कम 250 दिन पानी उपलब्ध कराने की मांग की गई।

किसानों का कहना था कि लगातार पानी मिलने से क्षेत्र का गिरता भूजल स्तर, जो 400 फुट से नीचे चला गया है, उसमें सुधार होगा। साथ ही खारे होते पानी की समस्या भी कम होगी। इससे किसान एक के बजाय दो फसलें उगा सकेंगे और उनकी आय में वृद्धि होगी।

इन सभी मांगों को लेकर बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि 26 दिसंबर 2025 को तहसील मुख्यालय तक एक विशाल ट्रैक्टर मार्च निकाला जाएगा। किसानों ने दावा किया कि यह जिला आगरा का अब तक का सबसे बड़ा और ऐतिहासिक ट्रैक्टर मार्च होगा, जिसमें किसान मोर्चा के घटक संगठनों के साथ-साथ विभिन्न संगठनों के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पदाधिकारी भी शामिल होंगे। ट्रैक्टर मार्च के माध्यम से किसानों की समस्याएं सरकार के समक्ष मजबूती से रखी जाएंगी।

ट्रैक्टर मार्च की तैयारी के लिए नौ सदस्यीय संघर्ष समिति का गठन किया गया है। इसमें किसान नेता विशंभर सिंह, पंडित सत्येंद्र रावत, पंडित श्याम सुंदर शर्मा, भूरी सिंह धाकरे, शारदा देवी (सभासद), राकेश यादव (प्रधान), मुकेश बघेल (प्रधान), जमुना प्रसाद त्यागी, अरविंद धाकरे और शिवराम बघेल शामिल हैं।

बैठक की अध्यक्षता वयोवृद्ध किसान नेता विस्मबर सिंह तोमर ने की। बैठक में सिस्टम सुधार संगठन (किसान) यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष अंशुमन ठाकुर, प्रदेश उपाध्यक्ष रामवीर सिंह, उदयवीर सिंह, प्रदेश महासचिव जितेंद्र त्यागी, प्रदेश महामंत्री मीनू उस्मानी, नरेंद्रपाल सिंह, प्रदेश कोषाध्यक्ष सत्यपाल सिंह परमार, प्रदेश संगठन सलाहकार दिलीप सोलंकी, प्रदेश प्रवक्ता सुरेंद्र यादव सहित बड़ी संख्या में किसान नेता, जनप्रतिनिधि और क्षेत्र के किसान मौजूद रहे।

धूमधाम से मनाया गया किसान इंटर कॉलेज का 77 वां स्थापना दिवस समारोह

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

मथुरा। सौंख खेड़ा स्थित किसान इंटर कॉलेज का 77 वां स्थापना दिवस समारोह बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ मनाया गया।कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन एवं किसान इण्टर कॉलेज के संस्थापक स्व. पुरुषोत्तम चूड़ामणि की प्रतिमा पर माल्यार्पण करके किया गया।तत्पश्चात प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत कर उन्हें प्रोत्साहन के रूप में स्मार्टफोन, साइकिल, स्मृति चिन्ह एवं प्रशस्ति पत्र आदि प्रदान किए गए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए बलदेव क्षेत्र के विधायक पूरन प्रकाश ने कहा कि हमारी केन्द्र व प्रदेश सरकार विद्यालयों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध है।उनके द्वारा पहले भी किसान इण्टर कॉलेज को सरकारी योजना के अंतर्गत सहायता राशि प्रदान की जा चुकी है।इसके अलावा भविष्य में भी वे विद्यालय के संरक्षण व उन्नयन हेतु तन-मन-धन से समर्पित रहेंगे।

विशिष्ट अतिथि के रूप में पद्मश्री डॉक्टर सरोज चूड़ामणि एवं प्रख्यात हृदय रोग विशेषज्ञ डॉक्टर श्रीधर द्विवेदी (नेशनल हार्ट इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली) ने कहा कि शिक्षा एक ऐसा बल है,जिसे प्राप्त करके हम समाज की किसी भी विषमता का डटकर सामना कर सकते हैं।

किसान इंटर कॉलेज के प्रबंधक विनोद कुमार चूड़ामणि एवं सचिव योगेंद्र चूड़ामणि ने कहा कि किसान इण्टर कॉलेज की स्थापना 27 फरवरी सन् 1949 में हमारे पूज्य पिताश्री व प्रमुख समाजसेवी स्व. पुरुषोत्तम चूड़ामणि के द्वारा हुई थी।जिसका शुभारंभ मथुरा के तत्कालीन जिलाधिकारी स्वर्गीय जयकरण नाथ अग्र के कर कमलों से हुआ था।सन् 1960 - 1970 के दशक में इस कॉलेज का अवलोकन करने के लिए उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय सुचेता कृपलानी एवं उत्तर प्रदेश विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष स्वर्गीय वी एम खैर भी आ चुके हैं।

प्रख्यात साहित्यकार रूपी रत्नर डॉ. गोपाल चतुर्वेदी एवं कॉलेज के प्रधानाचार्य चन्द्रभान यादव ने कहा कि किसान इण्टर कॉलेज की अनेक गौरवशाली परंपरा रही हैं।भारत की प्रथम महिला बाल सर्जन, लखनऊ के किंग जार्ज मेडिकल कॉलेज की पूर्व कुलपति एवं वर्तमान में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी , कानपुर की विजिटिंग प्रोफेसर डॉक्टर सरोज चूड़ामणि इसी कॉलेज की विद्यार्थी रही हैं। इसके अलावा भी इस कॉलेज को अनेक ऐसे विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने का गौरव प्राप्त है जो कि देश-विदेश में उच्च पदों पर कार्य कर रहे हैं और कर चुके हैं।जिस पर समूचे मथुरा जनपद को गर्व है।

इस अवसर पर पूर्व ब्लॉक प्रमुख श्रीमती पुष्पा प्रकाश, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. मनवीर सिंह, डॉ. देशराज सिंह , डॉ. कविता सक्सैना, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, प्रबल प्रताप, डॉ. अरुण पाण्डेय, डॉ. रावेन्द्र सिंह, लोकेंद्र कुमार सारस्वत, शिवेंद्र गौतम, भानु प्रताप, रूपेंद्र सिंह, डॉक्टर स्मृति श्रीवास्तव, अमरदीप श्रीवास्तव, सौरभ सारस्वत, अवनीश मिश्रा, राजू प्रसाद, दिग्विजय लाल श्रीवास्तव, चंद्रशेखर गौड़, आनन्द मोहन शुक्ला, कमल कुमार आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।संचालन देवेन्द्र परिहार ने किया।धन्यवाद ज्ञापन एवं समस्त आगंतुक अतिथियों का स्वागत-सम्मान कॉलेज के प्रबंधक विनोद कुमार चूड़ामणि, एडवोकेट ने किया।कार्यक्रम का समापन स्वरुचिपूर्ण भोज के साथ हुआ।

विश्व की सबसे लंबी 'भारतीय महा ईवी रैली' को पंजाब के माननीय राज्यपाल ने लोक भवन, चंडीगढ़ से दिखाई हरी झंडी

परिवहन विशेष न्यूज

चंडीगढ़। विश्व की सबसे लंबी इलेक्ट्रिक वाहन रैली के रूप में प्रतिष्ठित भारतीय महा ईवी रैली ने अपने 98वें दिन चंडीगढ़, पंजाब में प्रवेश किया। इस अवसर पर माननीय राज्यपाल, पंजाब श्री गुलाबचंद्र कटारिया जी ने लोक भवन, चंडीगढ़ से रैली का भव्य स्वागत किया तथा हरी झंडी दिखाकर इसे हरियाणा के लिए रवाना किया।

माननीय राज्यपाल ने डॉ. राजीव मिश्रा, अध्यक्ष, इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ इलेक्ट्रिक व्हीकल एसोसिएशन (IFEVA) एवं श्री रामेंद्र दीक्षित, प्रभारी मीडिया (IFEVA) से रैली के अब तक के 97 दिनों के अनुभवों पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने ईवी जागरूकता अभियान की सराहना करते हुए पंजाब में इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने हेतु IFEVA को आगे भी सक्रिय भूमिका निभाने के लिए आमंत्रित किया।

यह ऐतिहासिक रैली केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी एवं केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल के आह्वान पर आयोजित की जा रही है।

अब तक यह रैली 27 राज्यों और 8 केंद्र शासित प्रदेशों का भ्रमण कर चुकी है, जिनमें दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, केरल, पुदुचेरी, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, छत्तीसगढ़, झारखंड, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, नागालैंड, मिजोरम, मेघालय, त्रिपुरा, बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, पंजाब एवं चंडीगढ़ शामिल हैं। इसके अतिरिक्त रैली ने भूटान और नेपाल का भी दौरा किया है।

रैली का उद्देश्य

इस रैली का मुख्य उद्देश्य इलेक्ट्रिक वाहनों के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाना, आम जनता में व्याप्त भ्रांतियों को दूर करना तथा यह सिद्ध करना है कि इलेक्ट्रिक वाहनों से लंबी दूरी की यात्रा पूर्णतः संभव है।

रैली के प्रमुख आकर्षण

100 से अधिक शैक्षणिक संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों में संवाद

डॉ. राजीव मिश्रा के नेतृत्व में राष्ट्रव्यापी ईवी अभियान

छात्रों एवं शिक्षकों के साथ ईवी विषय पर चर्चा व प्रश्नोत्तरी

इलेक्ट्रिक वाहनों का प्रत्यक्ष ड्राइविंग अनुभव

प्रभाव और महत्व

भारतीय महा ईवी रैली सरकार, उद्योग एवं शैक्षणिक संस्थानों के साथ समन्वय स्थापित कर इलेक्ट्रिक मोबिलिटी की वर्तमान स्थिति पर प्रथम-हस्त जानकारी एकत्र कर रही है, जो भविष्य की नीतियों एवं योजनाओं के निर्माण में सहायक सिद्ध होगी।

रैली की नेतृत्व टीम

डॉ. राजीव मिश्रा – अध्यक्ष, IFEVA

श्री रामेंद्र दीक्षित – प्रचार एवं मीडिया प्रभारी, IFEVA

श्रीमती दिव्या गोयल – उपाध्यक्ष, दिव्यांग प्रकोष्ठ

IFEVA के अन्य समर्पित टीम सदस्य

यह पहल भारत की स्थायी गतिशीलता के प्रति प्रतिबद्धता को सशक्त रूप से प्रस्तुत करती है और देश को इलेक्ट्रिक वाहन क्रांति में अग्रणी भूमिका की ओर ले जाती है।

कैंसर बीमारी का बढ़ता प्रकोप- 21वीं सदी की वैश्विक महामारी- सुप्रीम कोर्ट की हस्तक्षेपकारी भूमिका, एक ऐतिहासिक मोड़-एक समग्र विश्लेषण

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर कैंसर आज केवल एक चिकित्सकीय बीमारी नहीं रह गया है, बल्कि यह वैश्विक स्तरपर मानवसभ्यता के लिए एक गंभीर सामाजिक, आर्थिक औरनीतिगत चुनौती बन चुका है।दुनियाँ के लगभग हर देश में कैंसर मृत्यु के प्रमुख कारणों में शामिल है और विश्व स्वास्थ्य संगठन सहित अनेक अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं इसे नॉन- कम्युनिकेबल डिजीज के सबसे खतरनाक रूपों में गिनती हैं। कैंसर की भयावहता इस तथ्य से समझी जा सकती है कि यह मानवीय शरीर पर विभिन्न स्वरूपों में हमला करता है कभी फेफड़ों के रूप में, कभी स्तन, सर्वाइकल, प्रोस्टेट, लिवर या रक्त कैंसर के रूप में,और कई बार तब तक पहचान में नहीं आता जब तक यह जीवन के लिए गंभीर खतरा यानें स्टेज फोर या अंतिम समय न बन जाए।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि आधुनिक जीवनशैली, पर्यावरणीय प्रदूषण, खानपान में बदलाव, तंबाकू और शराब का बढ़ता सेवन, तनाव और शारीरिक निष्क्रियता ने कैंसर को एक ऐसी बीमारी बना दिया है जो अब केवल वृद्धावस्था तक सीमित नहीं रही, बल्कि कार्यशील आयु वर्ग को भी तेजी से अपनी चपेट में ले रही है।वैश्विक रिपोर्टों और स्वास्थ्य अध्ययनों के अनुसार, 40 से 50 वर्ष की आयु के लोगों में कैंसर के मामलों में आने वाले वर्षों में तीव्र वृद्धि की आशंका जताई जा रही है।2030 तक यह आयु वर्ग कैंसर के सबसे बड़े जोखिम समूहों में शामिल हो सकता है।यह स्थिति इसलिए और भी चिंताजनक है क्योंकि यही वर्ग किसी भी देश की अर्थव्यवस्था, सामाजिक संरचना और पारिवारिक व्यवस्था की रीढ़ माना जाता है। यदि इस आयु वर्ग में बड़ी संख्या में लोग गंभीर बीमारियों से ग्रस्त होते हैं, तो इसका प्रभाव केवल स्वास्थ्य तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि उत्पादकता, रोजगार गरीबी, सामाजिक असमानता और मानसिक स्वास्थ्य तक गहराई से महसूस किया जाएगा।यही कारण है कि आज कैंसर से मुकाबला केवल अस्पतालों और डॉक्टरों की जिम्मेदारी नहीं रह गया है, बल्कि यह सार्वजनिक नीति, शासन व्यवस्था और सामाजिक व्यवहार में मूलभूत परिवर्तन की मांग करता है।

साथियों बात अगर हम कैंसर से प्रतिरक्षात्मक उपायों की करें तो जीवनशैली परिवर्तन, कैंसर रोकथाम की पहली सीढ़ी है, कैंसर के बढ़ते मामलों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि केवल इलाज पर आधारित रणनीति पर्याप्त नहीं है। रोकथाम, समय पर जांच और प्रारंभिक निदान ही इस बीमारी से लड़ने के सबसे प्रभावी हथियार हैं। जीवनशैली में बदलाव जैसे संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, तंबाकू और शराब से दूरी, मानसिक तनाव को नियंत्रित करना और प्रदूषण से बचाव, कैंसर के जोखिम को काफी हद तक कम कर सकते हैं। विकसित देशों में सार्वजनिक स्वास्थ्य नीतियों का एक बड़ा हिस्सा इन्हीं निवारक उपायों पर केंद्रित है।स्कूल स्तर से लेकर कार्यस्थलों तक स्वास्थ्य जागरूकता अभियान चलाए जाते हैं, ताकि लोग बीमारी के शुरुआती संकेतों को समझ सकें और समय रहते जांच करा सकें। भारत जैसे विकासशील देश में, जहां स्वास्थ्य संसाधनों पर पहले से ही भारी दबाव है, जीवनशैली आधारित रोकथाम और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

साथियों बात अगर हम भारत में कैंसरः बढ़ता संकट और असमानताएँ इसको समझने की करें तो, भारत में कैंसर की स्थिति वैश्विक रुझानों से अलग नहीं है, बल्कि कई मामलों में यह और अधिक गंभीर है। जनसंख्या का विशाल आकार, सामाजिक- आर्थिक असमानताएँ, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच स्वास्थ्य सुविधाओं का अंतर, और जागरूकता की कमी, ये सभी कारक कैंसर के प्रभाव को कई गुना बढ़ा देते हैं। शहरी क्षेत्रों में जहां निजी अस्पताल और उन्नत जांच सुविधाएं उपलब्ध हैं, वहीं ग्रामीण इलाकों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भी कई बार बुनियादी संसाधनों से वंचित रहते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि ग्रामीण मरीजों में कैंसर का पता अक्सर बहुत देर से चलता है, जब इलाज की संभावनाएं सीमित हो जाती हैं। इस असमानता का सीधा असर मृत्यु दर पर पड़ता है और यही कारण है कि भारत में कैंसर से होने वाली मौतों का अनुपात कई विकसित देशों की तुलना में अधिक है।

साथियों बात अगर हम सुप्रीम कोर्ट की हस्तक्षेपकारी भूमिका, एक ऐतिहासिक मोड़ इसको समझने की करें तो, भारत में कैंसर प्रबंधन की खामियों को उजागर करने में न्यायपालिका की भूमिका हाल के वर्षों में और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। चीफ जस्टिस सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली बेंच द्वारा कैंसर को देशव्यापी अधिसूचित बीमारी घोषित करने की मांग से जुड़ी जनहित याचिका पर केंद्र सरकार और सभी राज्य सरकारों को नोटिस जारी करना इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह याचिका एम्स के सेवानिवृत्त विशेषज्ञ डॉ. अनुराग श्रीवास्तव द्वारा दायर की गई, जिसमें देश के सार्वजनिक स्वास्थ्य ढांचे में कैंसर प्रबंधन से जुड़ी गंभीर कमियों की ओर अदालत का ध्यान आकर्षित किया गया। 12 दिसंबर 2025 को केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को औपचारिक नोटिस जारी किया जाना यह दर्शाता है कि अब इस मुद्दे को केवल नीति-स्तर की चर्चा तक सीमित नहीं रखा जा सकता।सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले को केवल एक कानूनी प्रश्न के रूप में नहीं, बल्कि एक व्यापक सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट के रूप में देखा है। अदालत ने स्पष्ट रूप से यह संकेत दिया है कि यदि सरकारें समय रहते ठोस कदम नहीं उठातीं, तो इसका खामियाजा लाखों नागरिकों को अपनी जान देकर चुकाना पड़ सकता है।न्यायपालिका का यह रुख भारत में स्वास्थ्य अधिकार को मौलिक अधिकार के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण पड़ाव माना जा सकता है।

साथियों बात अगर हम कैंसर को अधिसूचित बीमारी का दर्जा क्यों है यह इतना जरूरी? इसको समझने की करें की करें तो किसी बीमारी को अधिसूचित घोषित करने का अर्थ यह होता है कि उसके मामलों की रिपोर्टिंग कानूनी रूप से अनिवार्य हो जाती है।अस्पतालों प्रयोगशालाओं और डॉक्टरों को ऐसे मामलों की जानकारी सरकार को देनी होती है, जिससे बीमारी के प्रसार, भौगोलिक वितरण और जोखिम कारकों का सटीक आकलन किया जा सके।भारत में टीबी, मलेरिया, कोविड-19 जैसी कई बीमारियां अधिसूचित हैं, जिसके कारण इनके मामलों पर निगरानी और नियंत्रण अपेक्षाकृत बेहतर ढंग से किया जा सका। कैंसर को अभी तक देशव्यापी स्तर पर अधिसूचित न किया जाना एक गंभीर नीतिगत चूक मानी जा रही है। याचिकाकर्ता की ओर से अदालत को बताया गया कि देश के 36 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में से केवल 17 ने ही अपने सार्वजनिक स्वास्थ्य कानूनों के तहत कैंसर को अधिसूचित बीमारी घोषित किया है। इसका अर्थ यह है कि देश का लगभग आधा हिस्सा अभी भी कैंसर मामलों की अनिवार्य रिपोर्टिंग से बाहर है।जब बीमारी के वास्तविक आंकड़े ही सरकार के पास नहीं होंगे, तो प्रभावी नीति निर्माण कैसे संभव हो पाएगा? यही वह बुनियादी प्रश्न है जिसने सुप्रीम कोर्ट को इस मामले में हस्तक्षेप के लिए प्रेरित किया।

साथियों बात अगर हम आईसीएमआर कैंसर रजिस्ट्रीः सीमित कवरेज, सीमित समझ इसको समझने की करें तो, भारत में कैंसर के आंकड़ों का मुख्य स्रोत इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर) द्वारा संचालित कैंसर रजिस्ट्री है। लेकिन याचिका के अनुसार, यह रजिस्ट्री फिलहाल देश की केवल लगभग 10 प्रतिशत आबादी को ही कवर करती है। ग्रामीण इलाकों में यह कवरेज मात्र 1 प्रतिशत के आसपास है। इसका सीधा अर्थ यह है कि देश में कैंसर के वास्तविक मामलों का एक बड़ा हिस्सा कभी आधिकारिक आंकड़ों में दर्ज ही नहीं हो पाता।जब डेटा अधूरा होगा, तो उस पर आधारित रणनीतियां भी अधूरी और अप्रभावी ही होंगी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देखें तो कई देशों में कैंसर रजिस्ट्री की कवरेज 80 से 100 प्रतिशत तक है। इन देशों में कैंसर की रोकथाम, स्क्रीनिंग और इलाज की योजनाएं इसी व्यापक डेटा के आधार पर बनाई जाती हैं। भारत में डेटा की यह कमी न केवल नीति निर्माण को कमजोर करती है, बल्कि शोध और नवाचार की संभावनाओं को भी सीमित कर देती है। नई दवाओं, उपचार पद्धतियों और रोकथाम कार्यक्रमों के विकास के लिए सटीक और व्यापक आंकड़े अनिवार्य होते हैं।

साथियों बात अगर हम ग्रामीण भारत और कैंसर एक अदृश्य संकट इसको समझने की करें तो, ग्रामीण भारत में कैंसर की स्थिति को अक्सर अदृश्य संकट कहा जाता है। जागरूकता की कमी, सामाजिक रूढ़ियां, आर्थिक तंगी और स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव ये सभी कारक मिलकर कैंसर को एक मूक हत्यारा बना देते हैं। कई बार मरीज शुरुआती लक्षणों को सामान्य बीमारी समझकर नजरअंदाज कर देते हैं। जब तक वे किसी बड़े अस्पताल तक पहुंचते हैं, तब तक बीमारी उन्नत अवस्था में पहुंच चुकी होती है। अधिसूचित बीमारी का दर्जा मिलने से ग्रामीण क्षेत्रों में भी कैंसर मामलों की पहचान और रिपोर्टिंग बेहतर हो सकती है, जिससे समय पर हस्तक्षेप संभव होगा।

साथियों बात अगर हम अंतरराष्ट्रीय अनुभवः भारत के लिए सबक इसको समझने की करें तो, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई देशों ने कैंसर को सार्वजनिक स्वास्थ्य आपात स्थिति के रूप में देखा है। यूरोप, उत्तरी अमेरिका और कुछ एशियाई देशों में कैंसर स्क्रीनिंग कार्यक्रमों को सरकारी स्वास्थ्य प्रणाली का अभिन्न हिस्सा बनाया गया है। नियमित मैमोग्राफी, पैप स्मीयर, कोलोनोस्कोपी और लो-डोज सीटी स्कैन जैसे परीक्षणों को उच्च जोखिम समूहों के लिए अनिवार्य या अत्यधिक प्रोत्साहित किया गया है। इन देशों में कैंसर को अधिसूचित बीमारी के रूप में देखने का लाभ यह हुआ कि नीति निर्माण डेटा-आधारित और लक्ष्य-उन्मुख बन सका।भारत यदि इन अंतरराष्ट्रीय अनुभवों से सीख लेकर कैंसर को देशव्यापी अधिसूचित बीमारी घोषित करता है, तो यह न केवल आंकड़ों की गुणवत्ता में सुधार करेगा, बल्कि स्वास्थ्य प्रणाली की जवाबदेही भी बढ़ाएगा। केंद्र और राज्य सरकारों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित हो सकेगा और संसाधनों का आवंटन वास्तविक जरूरतों के अनुसार किया जा सकेगा।

साथियों बात अगर हम नीति सुधार और भविष्य की दिशा इसको समझने की करें तो, कैंसर को अधिसूचित बीमारी घोषित करना केवल पहला कदम होगा। इसके साथ-साथ व्यापक नीति सुधारों की भी आवश्यकता है। प्राथमिक स्वास्थ्य स्तर पर स्क्रीनिंग सुविधाओं का विस्तार, जिला स्तर पर कैंसर उपचार केंद्रों की स्थापना, स्वास्थ्य कर्मियों का प्रशिक्षण और डिजिटल हेल्थ रिकॉर्ड्स का एकीकृत ढांचा ये सभी कदम समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। इसके अलावा, स्वास्थ्य बीमा योजनाओं में कैंसर उपचार को पर्याप्त कवरेज देना और मरीजों के लिए आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करना भी जरूरी है।सुप्रीम कोर्ट द्वारा इस मुद्दे पर जवाब तलब करना यह संकेत देता है कि अब कैंसर को नजरअंदाज करने की गुंजाइश नहीं बची है।यह मामला केवल कानूनी बहस का विषय नहीं, बल्कि करोड़ों भारतीयों के जीवन और भविष्य से जुड़ा हुआ प्रश्न है। यदि समय रहते ठोस कदम उठाए गए, तो भारत न केवल कैंसर से होने वाली मौतों को कम कर सकता है, बल्कि एक मजबूत, डेटा-आधारित और न्यायसंगत सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली की ओर भी बढ़ सकता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि एक साझा जिम्मेदारी, अंततः कैंसर से लड़ाई सरकार, न्यायपालिका चिकित्सा समुदाय और समाज, सभी की साझा जिम्मेदारी है। जीवनशैली में बदलाव से लेकर नीति सुधार तक, हर स्तर पर समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है। सुप्रीम कोर्ट की पहल ने इस बहस को राष्ट्रीय विमर्श के केंद्र में ला दिया है।अब यह सरकारों पर निर्भर करता है कि वे इस अवसर को एक ऐतिहासिक सुधार में बदलती हैं या इसे भी एक और फाइल में बंद कर देती हैं। कैंसर जैसी भयावह बीमारी के संदर्भ में देरी का अर्थ है अनगिनत जिंदगियों का नुकसान। इसलिए समय की मांग है कि भारत कैंसर को देशव्यापी अधिसूचित बीमारी घोषित कर, एक मजबूत और संवेदनशील सार्वजनिक स्वास्थ्य भविष्य की नींव रखे।

ऑस्ट्रेलिया में यहूदियों पर आतंकी हमला: वैश्विक आतंकवाद का भयावह चेहरा

-सुनील कुमार महला

ऑस्ट्रेलिया के न्यू साउथ वेल्स राज्य के सिडनी में बोंडी बीच (समुद्र तट) पर हमलावरों द्वारा अंधाधुंध गोलीबारी की घटना में इजरायली नागरिक समेत 16 लोगों की मौत हो गई है, वहीं २९ लोग घायल बताए जा रहे हैं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार घायलों में एक बच्चा और दो पुलिस अधिकारी भी शामिल हैं।ऑस्ट्रेलिया पुलिस ने इसे आतंकी हमला करार दिया है।कितनी बड़ी बात है कि बोंडी बीच में आर्चर पार्क के पास,जो कि भीड़-भाड़ वाली जगह है (ऑस्ट्रेलियन ईस्टर्न डेलाइट टाइम के मुताबिक़ शाम को क़रीब ६ बजकर 47 मिनट पर) दो लोगों की ओर से सार्वजनिक जगह पर गोलीबारी की गई और इलाके को दहला दिया गया। बताया जा रहा है कि आस्ट्रेलिया में हनुक्का त्योहार मना रहे यहूदियों पर यह आतंकी हमला हुआ है, जो बहुत ही शर्मनाक और निंदनीय है। हालांकि, पुलिस की गोलीबारी में एक हमलावर भी मारा गया है तथा दूसरा घायल बताया जा रहा है, जिसे गिरफ्तार भी कर लिया गया है, लेकिन आस्ट्रेलिया में हुई यह आतंकी घटना साफ संकेत देती है कि आस्ट्रेलिया भी कहीं न कहीं अन्य देशों की भांति आतंकवाद का शिकार है। पाठकों को बताता चलूं कि एक हमलावर की पहचान पाकिस्तानी मूल के २४ वर्षीय नवीद अकरम के रूप में हुई है तथा दुनियाभर के नेताओं ने इस आतंकी हमले की घोर निंदा की है। स्वयं आस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज ने कैनबरा में पत्रकारों से कहा कि वह इस नरसंहार से बेहद दुखी हैं। उन्होंने कहा, 'यह हनुक्का के पहले दिन यहूदी आस्ट्रेलियाई लोगों को निशाना बनाकर किया गया हमला है। यह यहूदी-विरोधी और आतंकी कृत्य है जिसने आस्ट्रेलिया के दिल पर हमला किया है।'प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हमले की निंदा करते हुए प्रियजनों को खोने वाले परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की है तथा साथ ही यह बात कही है कि-' भारत आतंकवाद के प्रति 'शून्य सहिष्णुता' रखता है और इसके सभी रूपों व अभिव्यक्तियों के विरुद्ध लड़ाई का समर्थन करता है।'

इधर,इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने यह बात कही है कि, 'यह गोलीबारी सुनियोजित हत्या है। मैंने आस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री को चेतावनी दी थी कि उनके देश की नीतियां यहूदी-विरोध को बढ़ावा देती हैं। यहूदी-विरोधी भावना तब फैलती है जब नेता चुप रहते हैं। आपको कमजोरी दिखाने की जगह कार्रवाई करनी होगी।' बहरहाल, गौरतलब है कि ऑस्ट्रेलिया की लगभग २.8 करोड़ आबादी में करीब 1.17 लाख यहूदी रहते हैं। सात अक्टूबर २०२३ को हमास द्वारा इज़रायल पर किए गए हमले के बाद ऑस्ट्रेलिया में यहूदी विरोधी घटनाएं तेजी से बढ़ी हैं। सरकार की विशेष दूत जिलियन सेगल के अनुसार, इन घटनाओं की संख्या तीन गुना से भी ज्यादा हो गई है, जिनमें हमले, तोड़फोड़, धमकियां और लोगों को डराने की घटनाएं शामिल हैं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि पिछली गर्मियों में सिडनी और मेलबर्न जैसे बड़े शहरों में हुए यहूदी विरोधी हमलों ने पूरे देश को झकझोर दिया था। खास बात यह है कि ऑस्ट्रेलिया की लगभग 85 प्रतिशत यहूदी आबादी इन्हीं शहरों में रहती है। प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज ने अगस्त में ऐसे दो हमलों के लिए ईरान को जिम्मेदार ठहराया था और उसके साथ राजनयिक संबंध भी तोड़ दिए थे। वहीं, ऑस्ट्रेलिया में बड़े पैमाने पर गोलीबारी की घटनाएं आम नहीं हैं। 1996 में तस्मानिया के पोर्ट आर्थर में हुई भयावह गोलीबारी के बाद, जिसमें 35 लोग मारे गए थे, सरकार ने हथियार कानूनों(गन ला) को बेहद सख्त बना दिया था। इसके बाद से आम लोगों के लिए बंदूक हासिल करना बहुत कठिन हो गया। इस सदी में गोलीबारी की गिनी-चुनी बड़ी घटनाओं में २014 और २018 के कुछ हत्या-आत्महत्या के मामले और २०२२ में क्वींसलैंड में हुई एक गोलीबारी शामिल हैं। कुल मिलाकर, देश में हिंसा की घटनाएं कम हैं, लेकिन हाल के वर्षों में यहूदी विरोधी हमलों ने गंभीर चिंता पैदा की है। बहरहाल, यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि आज के दौर में यह साफ दिखाई दे रहा है कि आतंकवादी अब भीड़भाड़ वाले स्थानों को निशाना बनाकर दहशत फैलाने की कोशिश कर रहे हैं, ताकि अधिक से अधिक जान-माल का नुक़सान कर सकें। गौरतलब है कि विश्व में आतंकवाद से सबसे अधिक प्रभावित (शिकार) देशों में आज क्रमशः अफगानिस्तान, पाकिस्तान,इराक, सीरिया, नाईजीरिया, सोमालिया, भारत,यमन,माली तथा फिलीस्तीन-इजराइल क्षेत्र शामिल हैं।अफगानिस्तान दशकों से तालिबान, आईएस जैसे संगठनों की हिंसा का केंद्र रहा है। वहीं पर पाकिस्तान आतंकी संगठनों, आत्मघाती हमलों और सीमा-पार आतंकवाद से गंभीर रूप से प्रभावित रहा है।इराक आईएस (इस्लामिक स्टेट) के उदय के बाद भारी आतंकी हिंसा झेल चुका तथा गृहयुद्ध के साथ आतंकवादी संगठनों की सक्रियता ने सीरिया को तबाह किया है।नाइजीरिया का उत्तर-पूर्वी इलाका जहां बोको हराम जैसे आतंकी संगठन से बुरी तरह से प्रभावित है, वहीं पर हमारा देश भारत सीमा-पार आतंकवाद, कश्मीर और बड़े शहरों में हुए आतंकी हमलों से प्रभावित है।गृहयुद्ध और आतंकी गुटों की मौजूदगी के कारण यमन में भारी संकट है तो माली (सहेल क्षेत्र में सक्रिय आतंकी संगठनों के कारण) हिंसा का शिकार है।फिलिस्तीन/इज़राइल क्षेत्र तो लंबे समय से संघर्ष और आतंकी हमलों का सामना कर ही रहा है और यह बात किसी व्यक्ति विशेष से छिपी हुई नहीं है।सच तो यह है कि आतंक की समस्या आज केवल भारत तक ही सीमित नहीं है, बल्कि दुनिया के कई देश इसकी चपेट में हैं। हालिया मामला ऑस्ट्रेलिया का है, जहां सिडनी में यहूदी समुदाय पर किया गया हमला पूरे देश को झकझोर देने वाला साबित हुआ है।आतंकियों ने सिडनी के बॉन्डी बीच पर आयोजित हनुक्का धार्मिक उत्सव के दौरान अचानक गोलीबारी कर दी, निर्दोष लोग मारे गए और कई अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। वास्तव में युवा आतंकियों ने यहां शांति भंग करने व आतंक फैलाने के उद्देश्य से इस कार्रवाई को अंजाम दिया। पिछले कुछ समय से यह देखा जा रहा है कि आज कई जगहों पर युवा और किशोर आतंकवाद या कट्टर विचारधाराओं की ओर लगातार आकर्षित हो रहे हैं, खासकर ऑनलाइन यूर इंटरनेट के ज़रिये। वास्तव में यह एक गंभीर चिंता का विषय है। हालांकि ,इससे निपटने के लिए दुनिया भर के सुरक्षा और कानून प्रवर्तन एजेंसियाँ, सरकारें व सेनाएं भी लगातार सतर्क हो रही हैं। गौरतलब है कि एक संयुक्त चेतावनी में ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा और न्यूज़ीलैंड जैसी 'फाइव आइज़' सुरक्षा एजेंसियों ने यह बात कही है कि युवा रेडिकलाइज़ेशन (कट्टर विचारों के प्रभावित होने) की संख्या बढ़ रही है। इससे जुड़े मामलों में लगभग २०% प्राथमिक आतंकवाद के मामलों में युवा शामिल हैं।ऑस्ट्रेलियाई संघीय पुलिस (एएफपी) ने भी यह बात कही है कि बहुत छोटे बच्चे भी ऑनलाइन उग्रवादी सामग्री तक पहुँच रहे हैं, जिनमें से कई 17 वर्ष या उससे कम आयु के हैं। इतना ही नहीं,घरेलू स्पाई एजेंसी एएसआईओ(ऑस्ट्रेलियन सिक्योरिटी इंटेलिजेंस ऑर्गनाइज़ेशन)का २०२५ का विश्लेषण भी दिखाता है कि युवा अधिक 'डिजिटल नेटिव' (ऑनलाइन-पहला) पीढ़ी बन रहे हैं, और यह ऑनलाइन वातावरण उन्हें चरम विचारों की ओर आकर्षित कर सकता है। हाल फिलहाल,पाठकों को यह जानकारी होगी कि इससे पहले दिल्ली में लाल किले के पास हुआ हमला भी भीड़-भाड़ वाले इलाके में ही किया गया था, जिसमें युवा हमलावर शामिल थे। जांच में यह भी सामने आया कि हमले की साजिश में अल-फलाह यूनिवर्सिटी से जुड़े कुछ सफेदपोश पेशेवर—जैसे डॉक्टर और इंजीनियर(जिसे व्हाइट कालर टेररिज्म भी कहा जाता है) भी शामिल थे। वास्तव में, आतंकवाद का यह बदला हुआ और खतरनाक चेहरा आज पूरी दुनिया के लिए गंभीर चुनौती बनता जा रहा है। भारत लंबे समय से आतंकवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाए हुए है। हालांकि, सीमापार आतंकवाद, जैसा कि ऊपर भी इस आलेख में जानकारी दे चुका हूं कि, हमारे देश के लिए बड़ी समस्या रहा है, लेकिन अब आतंक का स्वरूप और भी जटिल हो गया है। यह कब, कहां और किसे निशाना बना ले, इसका अनुमान लगाना मुश्किल हो गया है। कई बार तो ख़ुफिया एजेंसियां भी ऐसी वारदातों को समय रहते रोकने में नाकाम साबित होती हैं। अक्सर मीडिया के हवाले से खबरें आतीं रहतीं हैं कि अब आतंकी हमलों में सुसाइड बॉम्बर, लॉजिस्टिक सपोर्ट, फंडिंग और नेटवर्किंग जैसी भूमिकाओं का संगठित तरीके से इस्तेमाल किया जा रहा है। इसके साथ ही कुछ ऑनलाइन एप और डिजिटल माध्यम भी आतंकियों के लिए मददगार साबित हो रहे हैं। दिल्ली धमाके की जांच ने आतंक के इसी नए पैटर्न को उजागर किया है, जिसमें उच्च-शिक्षित पेशेवरों की संलिप्तता सामने आई है।इसी कारण सुरक्षाबलों के सामने अब 'व्हाइट-कॉलर टेरर इकोसिस्टम' को तोड़ना सबसे बड़ी प्राथमिकता बन गया है। आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई केवल सरकार और सुरक्षा एजेंसियों की ही जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि आम नागरिकों की भूमिका काफी अहम और महत्वपूर्ण है। वास्तव में आम आदमी को आज सतर्क रहना होगा और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत नजदीकी पुलिस थाने को देनी होगी।अक्सर देखा गया है कि आतंकी समाज के बीच ही छिपकर रहते हैं। इसलिए आम आदमी को चप्पे-चप्पे पर अपनी पैनी नज़र रखनी होगी,सतर्क और जागरूक रहना होगा।सच तो यह है कि आतंकवाद के निरंतर बदलते स्वरूप से निपटने के लिए नए और प्रभावी तरीकों को समय रहते अपनाना होगा। इसके मूल कारणों को समझकर उन्हें खत्म करने की दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे। आतंकवादियों और आतंकवाद से निपटने के लिए केवल सैन्य कार्रवाई ही पर्याप्त नहीं है। शिक्षा, रोजगार, सामाजिक न्याय, वैचारिक जागरूकता और अंतरराष्ट्रीय सहयोग बेहद जरूरी हैं। जब तक आतंकवाद के मूल कारणों-जैसे कि गरीबी, कट्टरपंथ, भेदभाव और गलत प्रचार आदि पर प्रभावी ढंग से प्रहार नहीं किया जाएगा, तब तक इसका स्थायी समाधान संभव नहीं है। निष्कर्षतः, आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई एक देश या सरकार की नहीं, बल्कि पूरी मानवता की सामूहिक जिम्मेदारी है।

फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार,
पिथौरागढ़, उत्तराखंड।

ग्यारहवे समाधि दिवस महोत्सव पर पूजा पाठ व विनयांजलि सभा

हमारे साथ बारात है आँसू ओ की ।मैने दर्द की दुल्हन संग सगाई रचाई है।तुम मेरे साथ चलकर मुस्कुरा सको , तो-विश्वास दिलाता हूँ ,जिन्दगी का उपसंहार उजालो के आँगन मे होगा जहाँ आंनद की शहनाई और अपनत्व के मंगलाचार का महा महोत्सव होगा !! यह सृजनात्मक विचार संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विधासागर जी महाराज के परम शिष्य समाधिस्थ ऐलक श्री निःशकसागर जी महाराज के है जो मुस्कान के राजहंस थे ,जो अपनी मुस्कान की स्मृतियों को छोडकर अपने अन्तस की चेतना में खो गये ।हम सब से दूर जरूर है पर हम गुरु भक्तों में उनके प्रति आस्था आज भी है ,

संकल दिगम्बर जैन समाज नसिया व निशंक सागर भक्त मंडल के सयुंक्त तत्वावधान मे परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी महाराज के परम शिष्य समाधिस्थ वात्सल्य वारिधि , नसियां उद्धारक , हृदय वेदी के देवता , प्रातः स्मरणीय ऐलक श्री 105 निशंक सागर जी महाराज के ग्यारहवें समाधि दिवस के उपलक्ष्य में भव्य संगीतमय भक्तामर जी के पाठ व भजन का आयोजन दिनांक 16/12/25 दिन मंगलवार शाम 07:30 बजे अतिशयकारी श्री 1008 चिंतामणि पारसनाथ दिगम्बर जैन मंदिर जबरी बाग नसिया जी मे रखा गया है , पाठ के उपरांत युवा संगीतकार गायक शुभम जैन जी द्वारा हम सभी के गुरदेव ऐलक श्री के प्रति सुमधुर भजनों के द्वारा विनयांजलि अर्पित की जायेगी । यह जानकारी नसिया जी के मिडिया प्रभारी स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान प्रेस विज्ञप्ति में दी है।

निशंक भक्त मण्डल नसिया
श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर जबरी बाग नसिया इन्दौर

भारत में शिक्षा संकट: लाखों लड़कियां कक्षाओं से लापता

डॉ विजय गर्ग

संसद में सामने आए आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, भारत एक बिगड़ते हुए शिक्षा संकट का सामना कर रहा है, लाखों बच्चे - विशेष रूप से लड़कियां - औपचारिक स्कूली प्रणाली से बाहर हो रहे हैं। आंकड़े दर्शाते हैं कि यह समस्या अस्थायी नहीं बल्कि स्थायी है, तथा कई वर्षों और राज्यों में फैली हुई है।

ड्रॉपआउट का खतरनाक पैमाना

वित्तीय वर्ष 2022 और 2036 के बीच (3 दिसंबर, 2019 तक), राज्यों ने प्री-स्कूल से लेकर कक्षा 12 तक औपचारिक शिक्षा प्रणाली के बाहर कुल 84.9 लाख बच्चों की सूचना दी। इन स्कूल से बाहर रहने वाले बच्चों में से लगभग आधे लड़कियां हैं, जो संकट के स्पष्ट लैंगिक आयाम को उजागर करती है।

उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और असम जैसे बड़े और आबादी वाले राज्य इनमें से कई मामलों के लिए जिम्मेदार हैं, जो यह दर्शाते हैं कि चुनौती सबसे अधिक तीव्र है जहां बच्चों की संख्या सबसे बड़ी है और शैक्षिक पहुंच असमान बनी हुई है।

राज्य-वार पैटर्न

स्कूल से बाहर रहने वाले बच्चों में लड़कियों का हिस्सा विभिन्न राज्यों के बीच काफी भिन्न होता है, जो मुख्यतः समग्र नामांकन स्तर पर निर्भर करता है

केरल (33.2%), तेलंगाना (31.1%) और लद्दाख (34.3%) ने उच्च महिला नामांकन दरों के कारण ड्रॉपआउट में लड़कियों की तुलनात्मक रूप से कम हिस्सेदारी दर्ज की है।

इसके विपरीत, महाराष्ट्र (65.7%), हिमाचल प्रदेश (54.8%) और मिज़ोरम (53.8%] जैसे राज्यों में स्कूल से बाहर के बच्चों में लड़कियों का बहुमत है।

बच्चे क्यों पढ़ाई छोड़ देते हैं

राज्य अधिकारियों ने इस प्रवृत्ति के पीछे कई प्रमुख कारणों की पहचान की:

काम के लिए परिवारों का प्रवास, लगातार स्कूली शिक्षा में व्यवधान •

सामाजिक-आर्थिक कठिनाइयां जो बच्चों को स्कूल से बाहर करने के लिए मजबूर करती हैं •

घरेलू जिम्मेदारियां, विशेष रूप से बड़ी लड़कियों के लिए •

ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में बाल श्रम।

ये कारण गहरी जड़ें जमाए चुनौतियों को दर्शाते हैं जो केवल शिक्षा नीति से आगे तक फैली हुई हैं, गरीबी, श्रम पैटर्न और सामाजिक मानदंडों को छूती हैं जो कमजोर बच्चों के लिए निरंतर स्कूली शिक्षा को सीमित करते हैं।

बच्चों को वापस लाने के प्रयास

इस समस्या से निपटने के लिए, राज्यों ने समाग्रा शिक्षा योजना और अन्य पहलों के तहत निधियों का उपयोग करके स्कूल से बाहर बच्चों को पुनः नामांकित किया है। पिछले पांच वर्षों में:

विशेष प्रशिक्षण प्रयासों के माध्यम से 26.46 लाख बच्चों को पुनः नामांकित किया गया।

इन कार्यक्रमों में आवासीय और गैर-आवासीय कक्षाएं, मौसमी छात्रावास, और प्रवासी परिवारों के लिए परिवहन सहायता शामिल थी।

इन आउटरीच प्रयासों पर 626 करोड़ रुपये खर्च किए गए।

8.6 लाख बच्चों के स्कूल लौटने के साथ 2021 में पुनः नामांकन चरम पर पहुंच गया, बाद में 2035 में तेजी से गिरावट आई और फिर 2047 में 7.67 लाख रिटर्न में सुधार हुआ।

लगातार और बढ़ती चुनौती

इन कदमों के बावजूद, स्कूल से बाहर बच्चों की कुल संख्या बढ़ती जा रही है, खासकर बड़ी आबादी वाले बड़े राज्यों में। यह निरंतर वृद्धि दर्शाती है कि वर्तमान प्रयास, हालांकि कई लोगों के लिए प्रभावशाली हैं, फिर भी पढ़ाई छोड़ने की लहर को रोकने के लिए पर्याप्त नहीं हैं, विशेष रूप से लड़कियों में।

यह क्यों मायने रखता है

शिक्षा एक मौलिक अधिकार है और सामाजिक एवं आर्थिक अवसर के लिए एक महत्वपूर्ण मार्ग है। जब लाखों बच्चे और लड़कियों का एक असमान रूप से बड़ा हिस्सा स्कूल से बाहर हो जाता है, तो दीर्घकालिक प्रभावों में शामिल हैं

उच्च शिक्षा और रोजगार के लिए कम अवसर

लिंगों के बीच बढ़ती असमानता,

गरीबी और सामाजिक बहिष्कार के निरंतर चक्र।

विशेषज्ञ और अधिवक्ता इस बात पर जोर देते हैं कि निरंतर नीतिगत फोकस, लक्षित हस्तक्षेप और सामुदायिक समर्थन यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि अधिक लड़कियां न केवल नामांकन करें बल्कि अपने स्कूली वर्षों तक पढ़ाई जारी रखें तथा पूरी शिक्षा प्राप्त करें।

रिटायर्ड प्रिंसिपल एजुकेशनल स्तंभकार
प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर

हिन्दी भवन में शिल्पी—सुभाष चड्ढा स्मृति सम्मान समारोह

डॉ. शंभू पंवार 'श्रेष्ठ श्री पत्रकार सम्मान' से अलंकृत

नई दिल्ली, 15 दिसंबर।

कला, साहित्य एवं संस्कृति को समर्पित प्रतिष्ठित संस्था सविता चड्ढा जन सेवा समिति के तत्वावधान में "शिल्पी—सुभाष चड्ढा स्मृति सम्मान समारोह" का भव्य आयोजन आईटीओ स्थित हिन्दी भवन सभागार में किया गया। समारोह में वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर, अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त पत्रकार, लेखक, विचारक एवं दूरदृष्टा डॉ. शंभू पंवार को चार दशक से अधिक समय से वैश्विक स्तर पर सटीक, मूल्यपरक और सार्थक पत्रकारिता के लिए "श्रेष्ठ श्री पत्रकार सम्मान" से सम्मानित किया गया। डॉ. पंवार को यह सम्मान समारोह के विशिष्ट अतिथियों वैश्विक हिंदी परिवार के अध्यक्ष अनिल जोशी, अंतरराष्ट्रीय समाजसेवी इंद्रजीत शर्मा, इंडिया नेटबुक्स के प्रमुख डॉ. संजीव कुमार, वैश्विक हिंदी परिवार के मानद निदेशक विनयशील चतुर्वेदी, अंतरराष्ट्रीय पत्रिका 'हिंदी की गूंज' की संस्थापिका-संपादक डॉ. रमा पूर्णिमा शर्मा तथा आयोजन की सूत्रधार, अंतरराष्ट्रीय ख्यातिनाम साहित्यकार डॉ. सविता चड्ढा द्वारा शॉल, माला, स्मृति-चिह्न एवं सम्मान पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। समारोह का सशक्त एवं सराहनीय संचालन शिक्षाविद् एवं साहित्यकार डॉ. कल्पना पाण्डेय 'नवग्रह' ने किया।उल्लेखनीय है कि डॉ. शंभू पंवार ने अपनी निष्पक्ष, निर्भीक और समाजोन्मुखी लेखनी से पत्रकारिता को नई दिशा दी है। उनके लेख, समाचार, साक्षात्कार और रचनाएँ देश के 16 राज्यों सहित अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड और न्यूजीलैंड से प्रकाशित प्रमुख समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में नियमित रूप से प्रकाशित होती रही हैं। डॉ. पंवार न केवल पत्रकारिता और साहित्य में सक्रिय हैं, बल्कि सामाजिक सरोकारों में भी उनकी भूमिका उल्लेखनीय है। वे एक समर्पित गो-सेवक हैं और अपने तथा अपने बच्चों के जन्मदिन एवं माता—पिता की पुण्यतिथि पर गोशालाओं में गोमाताओं को दलिया एवं गुड़ अर्पित करते हैं।पत्रकारिता एवं सामाजिक सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए डॉ. पंवार को अब तक 26 मानद डॉक्टरेट एवं डी.लिट. की उपाधियों सहित अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। उनके पाँच साझा काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, जबकि एक एकल संग्रह प्रकाशनाधीन है।

वे चार वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर होने के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय संस्था धराधाम के गवर्नर तथा अंतरराष्ट्रीय काव्य प्रेमी मंच (तंजानिया), गीतांजलि काव्य प्रसार मंच और कथा कुंज संस्था के सलाहकार भी हैं।आपके आकाशवाणी दिल्ली पर साक्षात्कार एवं साहित्यिक, सामाजिक परिचर्चाएँ निरंतर प्रसारित होती रही हैं।समारोह में उपस्थित साहित्यकारों, पत्रकारों और गणमान्य अतिथियों ने डॉ. शंभू पंवार को सम्मान प्राप्ति पर बधाई देते हुए इसे पत्रकारिता जगत के लिए गौरवपूर्ण क्षण बताया।

केन्द्रीय विद्यालय स्लाईट में केवीएस स्थापना दिवस मनाया

लोंगोवाल,15 दिसंबर (जगसीर सिंह)-

शिक्षा के क्षेत्र में 'तत्वं पूषन् अपावृणु' के ध्येय वाक्य को चरितार्थ कर रहे केन्द्रीय विद्यालय संगठन का स्थापना दिवस आज केन्द्रीय विद्यालय स्लाईट लोंगोवाल में अत्यंत भव्यता और गरिमा के साथ मनाया गया। विद्यालय परिसर को इस ऐतिहासिक अवसर के अनुरूप विशेष रूप से सुसज्जित किया गया था, जहाँ उल्लास और अनुशासन का अनूठा संगम देखने को मिला।

समारोह की शोभा मुख्य अतिथि के रूप में संत लोंगोवाल अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (स्लाईट) के प्रोफेसर वी.के. कुकरेजा और विशिष्ट अतिथि के रूप में विद्यालय के प्राचार्य श्री हरि हर यादव ने बढ़ाई।

कार्यक्रम का आगाज रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से हुआ। प्राथमिक विभाग के नन्हे-मुन्ने बच्चों ने समूह नृत्य और गान के माध्यम से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। केवीएस के गौरव को दर्शाता विशेष गीत विद्यालय के परिवेश में गूंज उठा। मास्टर युवान यादव की ओजस्वी कविता समारोह का मुख्य आकर्षण रही, जिसने सभी की वाहवाही बटोरी। वहीं, मेहुल लखीवाल ने अंग्रेजी में अपने सारगर्भित विचार रखे और हरसिमरन कौर ने कविता-मिश्रित भाषण से श्रोताओं में नई ऊर्जा का संचार किया।समारोह में छात्रा अलिशा ने उपस्थित जनसमूह को केवीएस स्थापना दिवस की शपथ दिलाई। इस संकल्प का उद्देश्य विद्यार्थियों को राष्ट्र और समाज के प्रति उनके कर्तव्यों के प्रति सजग करना था।

मुख्य अतिथि प्रोफेसर वी.के. कुकरेजा ने अपने संबोधन में कहा कि केन्द्रीय विद्यालय संगठन आज न केवल भारत में बल्कि वैश्विक पटल पर भी अपनी उत्कृष्टता का परचम लहरा रहा है। प्राचार्य श्री हरि हर यादव ने संगठन की ऐतिहासिक यात्रा और वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए विद्यार्थियों को निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर प्रतिभाओं को सम्मानित भी किया गया। सत्र 2024-25 में उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम देने वाले शिक्षकों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। साथ ही, वर्ष भर विभिन्न गतिविधियों में कीर्तिमान स्थापित करने वाले मेधावी विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन शिक्षिका श्रीमती दिव्या शर्मा और स्नातकोत्तर शिक्षक (अंग्रेजी) श्री देवी लाल ने अपनी वाकपटुता से किया। समारोह के अंत में विद्यालय की वरिष्ठ शिक्षिका श्रीमती अनिता रानी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। मिष्टान्न वितरण के साथ इस गरिमामय समारोह का समापन हुआ।

मूकनायक मीडिया ने शिमला में आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन में अधिवक्ता रजत कल्सन को सामाजिक गौरव सम्मान से नवाजा

शिमला/हिसार

प्रतिष्ठित मीडिया समूह मूकनायक द्वारा शिमला के माल रोड पर स्थित गैटी थिएटर में संस्था का दूसरा राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित किया गया इसमें पूरे देश से मीडिया, एडवोकेसी, सामाजिक कार्यकर्ता, खेल जगत, साहित्य जगत व उद्योग जगत से संबंधित लोगों ने शिरकत की ।

इस कार्यक्रम में अधिवक्ता रजत कल्सन को उनके सामाजिक कार्यों के लिए सामाजिक गौरव सम्मान से नवाजा गया ।

यह सम्मान उन्हें हिमाचल प्रदेश के पूर्व गृह सचिव कश्मीर चौहान व मूकनायक मीडिया प्रमुख तुषार विनायक गायकवाड़ , देव भारती, ओमप्रकाश वर्मा राष्ट्रीय प्रभारी ने प्रदान किया । अधिवक्ता रजत कल्सन को सम्मानित करते हुए मूकनायक मीडिया समूह के अध्यक्ष तुषार विनायक गायकवाड़ ने कहा कि अधिवक्ता रजत कल्सन पूरे भारत के एक जाने-माने दलित अधिकार कार्यकर्ता है तथा पिछले दिनों वे सरकार व पुलिस के उत्पीड़न का शिकार हुए थे ।उन्होंने बतौर वकील व सामाजिक कार्यकर्ता हरियाणा प्रदेश के हाई प्रोफाइल दलित अत्याचार के मामलों में दोषियों को जेल की सलाखों के पीछे भिजवाने का काम किया है तथा वह हमेशा सरकार पुलिस तथा खाप पंचायतों के निशाने पर रहे हैं तथा उन पर कई बार जानलेवा हमले हुए हैं लेकिन वे इन चीजों की परवाह न करते हुए हमेशा एससी समाज के पीड़ितों को न्याय दिलाने के लिए तत्पर रहते हैं।

इस कार्यक्रम में दिल्ली यूनिवर्सिटी की पूर्व प्रोफेसर डॉ रितु , महाराष्ट्र के नागपुर से उधोगपति विशाखा गायकवाड़, संदीप गायकवाड़ को उद्योग जगत अवार्ड,, तथा खेल जगत से प्रियांशु, साहित्य जगत से राजस्थान के मदन सिंह सिंघानिया , मूकनायक अलंकरण सम्मान से डॉ ओम प्रकाश वर्मा व अधिवक्ता सुनीता कल्सन को भी सम्मानित किया गया। इस अवसर पर शिमला के रिज ग्राउंड , मॉल रोड पर स्थित गेटिया थिएटर में मूकनायक मीडिया द्वारा अधिवक्ता रजत कल्सन का दलित और भारतीय न्यायिक व्यवस्था के विषय पर लाइव इंटरव्यू किया गया जिसमें अधिवक्ता रजत कल्सन ने बताया कि सुप्रीम कोर्ट और देश की अलग अलग हाई कोर्टज में एससी एसटी समुदाय के न्यायधीशों की संख्या बिल्कुल नगण्य है तथा यहाँ पर एससी/एसटी समुदाय के प्रतिनिधित्व को पूरा करने के लिए भारतीय न्यायिक सेवाओं को शुरू करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के पूर्व चीफ जस्टिस जीएस गवई पर जूता फैंकना पूरी न्यायिक व्यवस्था ही नही, संविधान सहित पूरे दलित समाज का अपमान है। कल्सन ने कहा कि सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए इस तरह के सम्मान उसी तरह मायने रखते हैं जिस तरह से देश के जवानों के लिए सैन्य मेडल मायने रखते हैं, उन्होंने कहा कि मूकनायक मीडिया ने उन्हें जो सम्मान दिया है उसे पर पूरी तरह खरे उतरने की कोशिश करेंगे और समाज सेवा में हमेशा आगे खड़े मिलेंगे ।

इस अवसर पर मूकनायक के हरियाणा के संपादक रमेश पोडिया, मोतीलाल चौहान, सत्य रांता, एनएस भगनिया, प्रीतपाल मट्टू, मोहन बुलहन व सैकड़ो अन्य प्रतिनिधि मौजूद रहे ।

दो युद्ध, दो युग: भारत की रणनीतिक चेतना की यात्रा

-जयसिंह रावत -

इतिहास में कुछ तारीखें केवल अतीत नहीं होतीं, वे वर्तमान को चेताती और भविष्य की दिशा तय भी करती हैं। 1971 का युद्ध और 2025 का आपेरेशन सिन्दूर दोनों अलग-अलग युगों की उपज होते हुए भी एक साझा सूत्र से जुड़े हैं। भारत की वह रणनीतिक चेतना, जो खतरे को सीमा पर पहुँचने से पहले रोकने में विश्वास रखती है। एक संघर्ष ने एक नये राष्ट्र को जन्म दिया, दूसरा परमाणु युग में आतंकवाद के खिलाफ भारत की बदली हुई युद्ध-भाषा को परिभाषित करता है। यह एक तरह से परमाणु धमकियों की पराजय ही थी। 13 दिनों के पूर्ण युद्ध और चार दिनों की सीमित सैन्य कार्रवाई के बीच का यह अंतर केवल समय का नहीं, बल्कि राजनीति, तकनीक, कूटनीति और वैश्विक शक्ति-संतुलन में आए गहरे बदलाव का भी दर्पण है।

देखा जाय तो भारत-पाकिस्तान संबंधों के इतिहास में 1971 और 2025 दो ऐसे पड़ाव हैं, जो अलग-अलग समय, तकनीक और वैश्विक परिस्थितियों में लड़े गए संघर्षों का प्रतिनिधित्व करते हैं। एक ओर 1971 का 13 दिनों का पूर्ण युद्ध था, जिसने एशिया का राजनीतिक नक्शा बदल दिया, वहीं दूसरी ओर 2025 का चार दिन का सीमित आपरेशन था, जिसने परमाणु युग में युद्ध की नई परिभाषा गढ़ी। इन दोनों संघर्षों को साथ रखकर देखने से न सिर्फ सैन्य रणनीति का विकास समझ में आता है, बल्कि यह भी साफ होता है कि भारत ने समय के साथ अपने "प्रिवेंटिव एक्शन" को कैसे बदला और परिष्कृत किया।

1971 का युद्ध किसी सीमित सैन्य घटना का परिणाम नहीं था। यह पूर्वी पाकिस्तान में चले 'ऑपरेशन सर्चलाइट' की परिणति ही था जिसके दौरान हुए भीषण जनसंहार में लाखों लोग मारे गए और एक करोड़ से अधिक शरणार्थी भारत में आ गए थे। भारत के लिए यह केवल रणनीतिक नहीं, बल्कि मानवीय हस्तक्षेप का प्रश्न भी था। इसके विपरीत 2025 का संघर्ष पहलगाम में हुए आतंकी हमले से उपजा, जिसमें 25 भारतीय नागरिक मारे गए जिसकी जिम्मेदारी जैश-ए-मोहम्मद ने ली। फर्क साफ है, 1971 का संघर्ष मानवाधिकार संकट से उपजा था, जबकि 2025 प्रॉक्सी वॉर और आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई का उदाहरण है।

अवधि और पैमाने में भी दोनों संघर्ष बिल्कुल अलग हैं। 1971 में 13 दिनों के युद्ध के बाद 93 हजार पाकिस्तानी सैनिकों ने आत्मसमर्पण किया और बांग्लादेश का जन्म हुआ। यह न केवल भारत की अब तक की सबसे निर्णायक सैन्य विजय थीए अपितु विश्व के युद्धों के इतिहास का एक जगमगाता पन्ना भी था। इसके मुकाबले 2025 की कार्रवाई चार दिनों तक सीमित रही जिसमें करीब 14 लक्षित स्ट्राइक्स, नौ आतंकी कैंप ध्वस्त हुये मगर कोई भू-क्षेत्रीय बदलाव नहीं, जो भारत की मनशा भी नहीं थी। यह परमाणु हथियारों के साये में लड़े जा रहे "लिमिटेड वॉर" का उदाहरण था, जहाँ लक्ष्य जीत नहीं, बल्कि विरोधी की क्षमता को बाधित करना था। आपरेशन सिन्दूर ने पाकिस्तान की बार-बार की परमाणु हमले की धमकियों की हवा भी निकाल दी।

अंतरराष्ट्रीय भूमिका भी दोनों दौर में बदली हुई दिखती है। 1971 में भारत को सोवियत संघ का स्पष्ट समर्थन प्राप्त था, जबकि अमेरिका और चीन पाकिस्तान के पक्ष में खड़े थे। 2025 में तस्वीर ज्यादा जटिल है। अमेरिका और चीन दोनों मध्यस्थ की भूमिका में दिखते हैं, जबकि चीन खुले तौर पर पाकिस्तान को ड्रोन और तकनीकी सहायता देता रहा है। फर्क यह है कि 1971 में भारत एक विकासशील अर्थव्यवस्था था, जबकि 2025 में एक मजबूत अर्थव्यवस्था के साथ भारत की वैश्विक सौदेबाजी की क्षमता भी कहीं अधिक मजबूत है। रणनीति और तकनीक के स्तर पर बदलाव सबसे गहरा है। 1971 का युद्ध टैंक, तोप और पारंपरिक वायुसेना अभियानों पर आधारित था, जिसका अंतिम परिणाम एक नए राष्ट्र का निर्माण था। 2025 में ड्रोन, सटीक मिसाइलें, सैटेलाइट इंटेलिजेंस और साइबर क्षमताएँ निर्णायक रहीं। ब्रह्मोस जैसी प्रणालियों और रियल-टाइम इंटेलिजेंस ने यह दिखाया कि अब युद्ध की तैयारी महीनों नहीं, घंटों में होती है।

इन दानों युद्धों के परिणामों की तुलना करें तो 1971 की विजय के बाद शिमला समझौता हुआ, लेकिन कई विशेषज्ञ मानते हैं कि युद्धबंन्दियों को रणनीतिक दबाव के रूप में पूरी तरह इस्तेमाल न करना एक चूकी हुई थी। 2025 में भारत ने कोई क्षेत्र नहीं लिया, लेकिन आतंकी ढांचे को नुकसान पहुँचाकर रणनीतिक संदेश दिया। पाकिस्तान ने एक बार फिर "मॉरल विक्टरी" का दावा ठीक उसी तरह किया जैसे 1971 में 120 भारतीय विमानों को मार गिराने का झूठा प्रचार किया गया था। फर्क यह है कि आज सूचना युद्ध में झूठ ज्यादा देर नहीं टिकता। 2025 के संघर्ष में पाकिस्तान अब उसी तरह चीन का "फ्रंट फेस" बन चुका है, जैसे 1971 में वह अमेरिका के लिए था। सैन्य विश्लेषकों के अनुसार, पाक-चीन-तुर्की धुरी का उभार भविष्य की रणनीति को और जटिल बनाएगा। साथ ही, सोशल मीडिया ने युद्ध और इतिहास की व्याख्या का नया मंच बना लिया है, जहाँ विजय और पराजय के दावे तुरंत चुनौती के घेरे में आ जाते हैं।यह साफ होता है कि साहस, नेतृत्व और स्पष्ट उद्देश्यकृये तत्व दोनों दौर में समान हैं, भले ही साधन बदल गए हों।

भविष्य के लिये इन संघर्षों का सबक स्पष्ट हैं। 1971 ने सिखाया कि राष्ट्रीय एकता और तेज निर्णय ऐतिहासिक परिणाम दे सकते हैं। 2025 चेतावनी देता है कि प्रॉक्सी वॉर के दौर में केवल सर्जिकल स्ट्राइक काफी नहीं, लंबी रणनीति, कूटनीति और खुफिया नेटवर्क उतने ही जरूरी हैं। इतिहास बताता है कि शांति केवल ताकत से नहीं, बल्कि सतर्कता और समझदारी से आती है। विजय दिवस की स्मृति में 1971 की शहादत और 2025 की कार्रवाई दोनों हमें यही याद दिलाती हैंकृअतीत की सीख ही भविष्य की सबसे मजबूत ढाल है।

ताकि भू-जल तक नहीं पहुँच पाए प्रदूषण का ज़हर

● विजय गर्ग

छोटे-बड़े उद्योग अपना रासायनिक अपशिष्ट सीधा नालों या खाली जमीन में छोड़ देते हैं। इन अपशिष्टों में क्रोमियम, आर्सेनिक, फ्लोराइड, आयरन और सीसा जैसी धातुएँ होती हैं, जो भू-जल को लंबे समय तक विषैला बनाए रखती हैं।
तेज़ी से बढ़ते शहरों में सीवेज ट्रीटमेंट की क्षमता कम है।
अनट्रीटेड सीवेज और सड़ते कचरे का ज़हरीला रस (leachate) जमीन में रिसकर भू-जल को संक्रमित करता है।

हमारे पैरों के नीचे बहता भू-जल सिर्फ़ पानी का स्रोत नहीं, बल्कि जीवन की गहराई में छिपा वह आधार है जिस पर गाँव, कस्बे और शहर टिके हुए हैं। पर पिछले कुछ वर्षों में यह आधार धीरे-धीरे ज़हर से भरता जा रहा है—औद्योगिक कचरा, कीटनाशक, प्लास्टिक, रासायनिक खाद और अनुपचारित सीवेज इसकी सबसे बड़ी वजह हैं। यदि अभी कदम न उठाए गए तो आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित पानी का सपना भी दूर हो जाएगा। इसलिए ज़रूरी है कि हम ऐसे उपाय अपनाएँ, ताकि भू-जल तक प्रदूषण का ज़हर पहुँच ही न पाए।

1. भूमिगत जल क्यों हो रहा है दूषित?

(क) रासायनिक खेती का प्रभाव
अत्यधिक यूरिया, DAP, कीटनाशक और खरपतवारनाशक खेतों में सिंचाई के साथ जमीन में समा जाते हैं। समय के साथ ये रसायन धीरे-धीरे रिसकर aquifer तक पहुँच जाते हैं और पानी को नाइट्रेट, अमोनिया तथा भारी धातुओं से दूषित कर देते हैं।
(ख) औद्योगिक कचरा
छोटे-बड़े उद्योग अपना रासायनिक अपशिष्ट सीधा नालों या खाली जमीन में छोड़ देते हैं। इन अपशिष्टों में क्रोमियम, आर्सेनिक, फ्लोराइड, आयरन और सीसा जैसी धातुएँ होती हैं, जो भू-जल को लंबे समय तक विषैला बनाए रखती हैं।
(ग) शहरी सीवेज और कचरा
तेज़ी से बढ़ते शहरों में सीवेज ट्रीटमेंट की क्षमता कम है। अनट्रीटेड सीवेज और सड़ते कचरे का ज़हरीला रस (leachate) जमीन में रिसकर भू-जल को संक्रमित करता है।
(घ) लैंडफिल और प्लास्टिक
कूड़े के पहाड़ों से निकलने वाला जहरीला द्रव groundwater recharge ज़ोन में सबसे बड़ा खतरा है। प्लास्टिक माइक्रोपार्टिकल्स तो अब लगभग हर जगह भू-जल में पाए जा रहे हैं।

2. क्यों ज़रूरी है भू-जल को प्रदूषण से पहले ही बचाना?

एक बार भू-जल दूषित होने पर इसे साफ करना बहुत कठिन और महँगा है।
दूषित पानी कैंसर, थायरॉयड, हड्डियों की कमजोरी, किडनी रोग, गर्भस्थ शिशु पर प्रतिकूल प्रभाव, और रक्त संबंधी बीमारियाँ पैदा करता है।
भू-जल कई क्षेत्रों में पीने के पानी का 70–90% तक स्रोत है।
ज़मीन के अंदर का पानी लगातार चलता रहता है—एक जगह का ज़हर दूसरी जगह तक पहुँच सकता है।
इसलिए रोकथाम ही असली समाधान है।

3. ऐसे कदम जो भू-जल को सुरक्षित रख सकते हैं

(क) कृषिगत सुधार

रासायनिक खाद के स्थान पर जैविक खाद, गोबर, वर्मी-कम्पोस्ट और बायो-फर्टिलाइज़र का प्रयोग।
Integrated Pest Management (IPM) के ज़रिए कीटनाशक का सीमित उपयोग।
फसल चक्र (crop rotation) और मृदा जाँच की अनिवार्यता।

(ख) उद्योगों पर सख़्त निगरानी

Zero-Liquid Discharge तकनीक लागू की जाए ताकि एक बूंद भी प्रदूषित जल बाहर न जाए।
ETP (Effluent Treatment Plant) की नियमित जाँच।
गैर-अनुपालन करने वाले उद्योगों पर भारी जुर्माना और लाइसेंस निलंबन।

(ग) रेन-वाटर हार्वेस्टिंग और रिचार्जिंग

स्वच्छ वर्षा जल को जमीन में उतारना भू-जल की गुणवत्ता सुधारने का सबसे सस्ता और कारगर तरीका है।
घर, स्कूल, ऑफिस और पार्कों में छत का पानी recharge wells में ले जाएँ।
नदी, तालाब और जोहड़ों का पुनर्जीवन किया जाए।
(घ) कचरा प्रबंधन का आधुनिकीकरण
वैज्ञानिक तरीके से ठोस कचरा निपटान (sanitary landfill)।
लैंडफिल के नीचे जियो-मेम्ब्रेन लगाना अनिवार्य।
प्लास्टिक कचरे की अलग संग्रहण और पुनर्चक्रण व्यवस्था।
(ङ) सीवेज ट्रीटमेंट में सुधार
हर कस्बे और शहर में decentralized STP विकसित किए जाएँ।
treated water को हरित क्षेत्रों, उद्योगों और निर्माण कार्यों में पुनः उपयोग किया जाए।
(च) भू-जल संरक्षण ज़ोन
recharge zones में निर्माण व प्रदूषणकारी गतिविधियों पर रोक।
गाँव-शहरों के पास ₹no-waste discharge zones₹ की घोषणा।

4. हम नागरिक क्या कर सकते हैं?

घर में रासायनिक क्लीनर का कम उपयोग, जैविक विकल्प अपनाएँ।
प्लास्टिक और पेंट-आधारित कचरा नालियों में न फेंकें।
वर्षा जल संचयन को अपनाएँ।
प्रदूषणकारी गतिविधियों की सूचना स्थानीय प्रशासन को दें।
स्कूलों और पंचायतों में जागरूकता अभियान चलाएँ।

समापन : पानी की हर बूंद भविष्य है

भू-जल हमारा अदृश्य लेकिन सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक धन है। यदि इसकी सुरक्षा आज नहीं की गई तो कल हमें पीने योग्य जल के लिए भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।
आज यह समझने का समय है कि पानी को शुद्ध रखना केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं—यह समाज, उद्योग, किसान और हर नागरिक की साझा जिम्मेदारी है।
हम यदि समय रहते कदम उठा लें, तो यह संभव है कि प्रदूषण का ज़हर भू-जल तक पहुँचने से पहले ही रोक दिया जाए, और हम आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ, सुरक्षित और जीवनदायी जल विरासत में छोड़ सकें।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

क्षितिज से परे

मानव सभ्यता हमेशा उन सीमाओं को तोड़ने का प्रयास करती रही है जिन्हें प्रकृति ने स्थायी माना था। कभी महासागर का क्षितिज रहस्य था, कभी अंतरिक्ष की अनंतता। आज विज्ञान जिस नए क्षितिज को चुनौती दे रहा है, वह किसी भी महासागर से गहरा और किसी भी तारे से अधिक रहस्यमय है — ब्लैक होल के भीतर का संसार।
ब्लैक होल लंबे समय तक "अंत" का प्रतीक रहे हैं—जहाँ से न प्रकाश लौटता है, न सूचना। परंतु हाल की खोजें यह संकेत देती हैं कि क्षितिज के उस पार भी कहानी समाप्त नहीं होती। बल्कि वहाँ से एक नई कहानी शुरू हो सकती है—जो हमारे स्थान (Space) और समय (Time) की पूरी समझ को बदल दे।

1. क्षितिज के उस पार क्या है?

ब्लैक होल का "इवेंट होराइज़न" वह सीमा है जहाँ से कोई वस्तु वापस नहीं लौट सकती। पर आधुनिक भौतिकी बताती है कि इस सीमा के भीतर का क्षेत्र सिर्फ अंधकार या विनाश का स्थान नहीं, बल्कि वास्तविकता का अलग रूप हो सकता है — एक ऐसा रूप जिसे हम अभी समझना शुरू ही कर पाए हैं।
क्वांटम सिद्धांतों के अनुसार, ब्लैक होल का अंदरूनी भाग केवल पदार्थ को नष्ट नहीं करता, बल्कि उसे एक नई संरचना में बदल सकता है। सूचना नष्ट नहीं होती — यह किसी न किसी रूप में सुरक्षित रहती है। यह विचार हमारे ब्रह्मांड की सबसे मूलभूत धारणाओं को चुनौती देता है।

2. समय और स्थान का उलटफेर

सामान्य सापेक्षता (General Relativity) के अनुसार, इवेंट होराइज़न पार करते ही समय और स्थान की भूमिकाएँ बदल जाती हैं। बाहर जो दिशा केवल "समय" थी, अंदर वह दिशा "स्थान" की तरह व्यवहार करने लगती है।
इसका अर्थ है कि ब्लैक होल का भीतर कोई साधारण ट्रैवल नहीं—बल्कि ₹अन-ट्रैवलिंग₹ है।
यानी गति, दिशा और दूरी जैसे हमारे सभी अनुभव अंदर जाकर पूरी तरह बदल जाते हैं। वहाँ न वैसी दूरी होती है जैसी हम जानते हैं और न ऐसा समय जैसा घड़ियाँ मापती हैं।

3. क्या अंदर का संसार बाहर से जुड़ा है?

हाल की क्वांटम रिसर्च "आईलैंड्स" नामक अवधारणा को सामने लाती है। इसके अनुसार, ब्लैक होल के अंदर की कुछ सूचना वास्तव में बाहर के स्पेस-टाइम से जुड़ी रहती है — जैसे अदृश्य पुल।
यह विचार बताता है कि:
ब्लैक होल पूर्णतः बंद नहीं हैं,
अंदर का हिस्सा पूरी तरह अलग नहीं,
और सूचना वास्तव में नष्ट नहीं होती।
यह समझ पूरी आधुनिक भौतिकी — खासकर क्वांटम मेकैनिक्स — को एक नए आधार पर खड़ा करती है।

4. क्या ब्लैक होल अंदर नया ब्रह्मांड छिपाए बैठा है?

कुछ वैज्ञानिक यह मानते हैं कि ब्लैक होल के भीतर का क्षेत्र एक वैकल्पिक ब्रह्मांड या "बेबी यूनिवर्स" की शुरुआत हो सकता है।
यदि ऐसा सच है, तो
हमारा ब्रह्मांड भी किसी विशाल ब्लैक होल के भीतर हो सकता है,
और हर ब्लैक होल किसी नए ब्रह्मांड का द्वार।
यह विचार भले ही काल्पनिक लगे, पर गणित और सिद्धांत इसकी संभावना को नकारते नहीं।

5. विज्ञान के लिए इसके मायने

ब्लैक होल के भीतर की नई अवधारणाएँ हमसे यह पूछती हैं:
क्या समय का अर्थ सार्वभौमिक है?
क्या स्थान एक स्थिर पृष्ठभूमि है या उभरती हुई संरचना?
क्या हमारा ब्रह्मांड किसी बड़े स्ट्रक्चर का हिस्सा है?
यदि इन सवालों के उत्तर मिलते हैं, तो यह आधुनिक भौतिकी की सबसे बड़ी क्रांति होगी — क्वांटम और सापेक्षिक दोनों सिद्धांतों का संगम।

समापन : नया क्षितिज, नई सोच

ब्लैक होल के भीतर का संसार अभी भी अंधकार से भरा है, लेकिन विज्ञान की किरणें उस अंधकार को धीरे-धीरे चीर रही हैं।
"Beyond the Horizon" सिर्फ वैज्ञानिक उत्सुकता ही नहीं, बल्कि मानव सोच की सीमाओं को चुनौती देने वाला विचार है।
क्षितिज के उस पार शायद नई दुनिया न हो—
पर नई समझ ज़रूर है।
और वही समझ भविष्य के विज्ञान की दिशा तय करेगी।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

एआई चैटबॉट्स और किशोर मानसिक स्वास्थ्य संकट : एक जोखिम भरा संगम

डॉ विजय गर्ग

एआई चैटबॉट्स और आभासी साथियों की लोकप्रियता में वृद्धि एक जटिल और संभावित रूप से खतरनाक गतिशील प्रस्तुत करती है जब किशोरों के बीच चल रहे मानसिक स्वास्थ्य संकट के साथ अंतःस्थापित होती है। जबकि ये उपकरण बातचीत के लिए आसान पहुंच प्रदान करते हैं, बढ़ते सबूत और दुखद घटनाएं सुझाव देती हैं कि वे भावनात्मक समर्थन प्रदान करने के लिए मौलिक रूप से असुरक्षित हैं और युवाओं में भेद्यता को बढ़ा सकते हैं। कमजोर किशोरों के लिए मुख्य जोखिम विशेषज्ञ और हालिया शोध कई प्रमुख क्षेत्रों पर प्रकाश डालते हैं जहां एआई चैटबॉट किशोरों की भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक भलाई के लिए एक महत्वपूर्ण जोखिम पैदा करते हैं 1। असुरक्षित या हानिकारक सलाह संकट में विफलता: जबकि चैटबॉट्स को अक्सर स्पष्ट संकट बयानों (जैसे, ₹मैं मरना चाहता हूं₹) के लिए संसाधनों के साथ जवाब देने के लिए प्रोग्राम किया जाता है, वे अक्सर मल्टी-टर्न वार्तालापों में विफल हो जाते हैं या जब चिंता का सामना करना पड़ता है, जैसे बढ़ती चिंता, निष्क्रिय आत्महत्या विचार, या मनोविकृति के लक्षण। हानिकारक व्यवहार को प्रोत्साहित करना: अध्ययनों से पता चला है कि जब सूक्ष्म तरीकों से प्रेरित किया जाता है, तो कुछ चैटबॉट खतरनाक ₹सलाह₹ प्रदान कर सकते हैं उदाहरण के लिए, कैसे ₹सुरक्षित रूप से₹ आत्म-क्षति में संलग्न हों, नशीली दवाओं का उपयोग करें, या आत्महत्या के तरीके प्रदान करें। भ्रमों का सत्यापन: उन्माद या मनोविकृति जैसी स्थितियों को अनुकरण करने वाले मामलों में, चैटबॉट भ्रमों को मान्य और सुदृढ़ करने के लिए पाए गए हैं, जिसका तीव्र संकट से पीड़ित व्यक्ति पर हानिकारक प्रभाव पड़ सकता है। 2। निर्भरता और अलगाव झूठे चिकित्सीय संबंध: चैटबॉट अक्सर अधिकतम जुड़ाव के लिए डिज़ाइन किए जाते हैं, व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं और एक सहानुभूतिपूर्ण स्वर का उपयोग करते हुए जो कनेक्शन की मजबूत, फिर भी गलत भावना पैदा कर सकता है। यह स्मृति और निजीकरण किशोरों को गहराई से ₹समझ गया₹ महसूस करा सकता है सामाजिक वापसी: अत्यधिक उपयोग और इन ₹पैरासोशल₹ संबंधों के गठन से निर्भरता का चक्र हो सकता है। किशोर वास्तविक दुनिया के सामाजिक अंतःक्रियाओं में संलग्न होने के बजाय गैर-निर्णयकारी, हमेशा मौजूद एआई की ओर रुख करना चुन सकते हैं, जिससे अलगाव गहरा हो जाता है और महत्वपूर्ण सामाजिक कौशल, लचीलापन और समस्या-समाधान क्षमताओं के विकास को बाधित किया जा सकता है। दुखद परिणाम: 14 वर्षीय लड़के की आत्महत्या सहित ऐसे मामले सामने आए हैं, जहां एक कमजोर किशोर ने एआई साथी के साथ तीव्र भावनात्मक लगाव पैदा किया था, जिसने अंततः संकट के क्षण में हानिकारक या उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाएं दी थीं। 3। मस्तिष्क के विकास के कारण संवेदनशीलता कमजोर आलोचनात्मक सोच: किशोर मस्तिष्क अभी भी विकसित हो रहा है, विशेष रूप से आवेग नियंत्रण, भावनात्मक विनियमन और जोखिम मूल्यांकन को नियंत्रित करने वाले क्षेत्रों में। इससे युवा लोग हेरफेर के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हो जाते हैं और आत्मविश्वास से भरे एआई द्वारा दी जाने वाली सलाह की सटीकता या सुरक्षा का आकलन करने में कम सक्षम होते हैं। धुंधली लाइनें: चैटबॉट प्रतिक्रियाएं अक्सर अत्यधिक मानवीय लगती हैं, विशेष रूप से उन्नत भाषा और आवाज मोड के साथ। एक युवा व्यक्ति के लिए, यह एक कोडित कार्यक्रम और एक विश्वसनीय मानव विश्वासपात्र के बीच की रेखा को धुंधला कर देता है, जिससे उन्हें संवेदनशील जानकारी का खुलासा करने और बॉट पर भरोसा करना पड़ता है, भले ही इसकी सलाह खतरनाक हो। तत्काल कार्रवाई के लिए कॉल शोधकर्ताओं, मनोवैज्ञानिकों और बाल सुरक्षा अधिवक्ताओं के बीच वर्तमान आम सहमति स्पष्ट है: एआई चैटबॉट किशोरों के लिए मानव मानसिक स्वास्थ्य सहायता का एक सुरक्षित विकल्प नहीं हैं। महत्वपूर्ण आवश्यकता यह है कि डेवलपर्स और नियामकों को सहभागिता पर उपयोगकर्ता सुरक्षा को प्राथमिकता देनी चाहिए। अनुशंसित कार्यों में शामिल हैं: अनिवार्य सुरक्षा परीक्षण: युवा लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले चैटबॉट्स के लिए स्पष्ट गार्डरेल्स और अनिवार्य, मानकीकृत सुरक्षा परीक्षण स्थापित करने के लिए चिकित्सा उपकरणों के समान एक नियामक ढांचे को लागू करना। स्पष्ट अस्वीकरण: चैटबॉट को अपनी सीमाओं को स्पष्ट रूप से और लगातार घोषित करना चाहिए, उपयोगकर्ताओं को चेतावनी देना चाहिए कि वे मानसिक स्वास्थ्य पेशेवर नहीं हैं और जोखिम का आकलन या आवश्यक देखभाल प्रदान नहीं कर सकते। आयु-उपयुक्त डिजाइन: प्रभावी आयु सत्यापन को लागू करना और हानिकारक सामग्री के संपर्क में आने से रोकने के लिए अंतर्निहित सुरक्षा उपायों के साथ सेवाओं का डिज़ाइन करना तथा यह पहचानना कि बातचीत को तुरंत मानव संकट संसाधन तक कब पहुंचाया जाना चाहिए। डिजिटल साक्षरता शिक्षा: युवा लोगों को एआई का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने, इसकी सीमाओं को समझने और वास्तविक मानव कनेक्शन और एक प्रोग्राम किए गए प्रतिक्रिया के बीच अंतर को पहचानने के लिए स्कूल पाठ्यक्रम में पाठों को एकीकृत करना।

मोबाइल से बचपन को बहार निकलना होगा

हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

वर्तमान समय में भोगवादी संस्कृति के तहत छोटे छोटे बच्चे दिखावे में घिरे हुए हैं।जो रील देखते हैं और रीयल से दूर जा रहे हैं। बचपन से लेकर युवा अवस्था तक भारत में मोबाइल एक नशा बनाता जा रहा है। तभी तो बचपन खत्म सा हो गया है।

बचपन से जवानी की दहलीज प्रकतिक तौर-तरीके समय अनुरूप होना बहुत जरूरी है। लेकिन भारत में बच्चों को खिलोने से खेलना पसंद नहीं वहां मोबाइल फोन पसंद करते है। जिसके कारण ना सही रूप से उनका दिमाग विस्तार हो पा रहा है। मानसिक हलचल के अंतर्गत बचपन ना जाने कहां खो सा गया है। पढ़ाई लिखाई के प्रति जो रुचि रहती थी , वह सिर्फ पास होने तक सीमित हो चुकी है। कुछ सिखने की लालसा आगे बढ़ने की उम्मीद सब मोबाइल के कारण धूमिल हो चुकी है। फिर भी जागने को ना समाज तैयार है ना परिवार। दूरियां इतनी बढ़ गई है कि एक घर में बातचीत करने को परिवार वाले तैयार नहीं है। कोई काम पढ़ता है तो मोबाइल से ही बोलते हैं। ऐसी अभिव्यक्ति नुकसान दायक है। इंस्टाग्राम , फेसबुक, स्नेप चैट, यूट्यूब जैसे प्लेटफार्म पर हमारे यहां को रोक नहीं है। युवा पीढ़ी तो पहले से इस हानिकारक सामग्री,साइबर धोखा और आनलाइन फ्रॉड से अपनी जान के दुश्मन खुद बन रहें हैं। और अब यहां नोनिहाल

खासकर मासूम व छोटे बच्चों के लिए बहुत दिक्कत आगे भविष्य में आयेंगी। अगर समाज ने अपनी चुप्पी इस विषय पर नहीं तोडी। हमें तो आस्ट्रेलिया जैसे देश से सीखना चाहिए हाल ही में 10 दिसंबर 2025 से मुख्य रूप से 16 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगाया गया है। आस्ट्रेलिया में बच्चों की आनलाइन सुरक्षा और शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार के लिए सोशल मीडिया और स्कूलों में मोबाइल फोन के उपयोग पर सख्त नियम भी बना रहा। वहीं भारत इस समस्या की अनदेखी कर बहुत बड़ी ग़लती कर रहा। जबकि आनलाइन गेमिंग ऐप व अन्य सोशल नेटवर्किंग साइट के कारण बच्चे अवसाद में अपनी जान गंवा रहे हैं। पढ़ाई में बचपन बहुत फिसल गया। इन सभी के लिए मोबाइल फोन ही जिम्मेदार है। हमें और हमारे परिवार के साथ साथ भारत सरकार को भी इस विषय पर सख्त नियम लगना ही पड़ेंगे। क्योंकि यहां मोबाइल नशा एक नासूर ना बन जाए, उसके पहले घरों में मोबाइल का इस्तेमाल दिनचर्या में कम से कम होना चाहिए। जिससे बच्चों को हम सीखये कि ज्यादा की अति नुकसान दायक होती है। किसी भी चीज के प्रति मोह ठीक नहीं। बचपन में बच्चों के मनोरंजन के संसाधन बहुत सारे हैं सिर्फ मोबाइल नहीं है। हम सभी की जिम्मेदारी है कि हम बच्चों को मोबाइल कम से कम दे। स्कूलों में मोबाइल लेकर जाना प्रतिबंधित करना चाहिए। आस्ट्रेलिया जैसी सख्ती हमारे यहां भी जरूरी है। मोबाइल से बचपन को बचाने के लिए इससे दूरी जरूरी है। हम सभी को इसका उपयोग सीमित मात्रा में करना चाहिए जिससे हमारे छोटे बच्चे भी सीखें मोबाइल के आगे भी बहुत कुछ है।

लोगों को शेयर–सोना–चांदी के दाम में ज्यादा दिलचस्पी, गिरते रुपए में नहीं

डॉ विजय गर्ग

— एक बदलती आर्थिक सोच का संकेत

आज के दौर में आम निवेशक का ध्यान किस ओर जा रहा है? अगर आप सोशल मीडिया ट्रेंड, गूगल सर्च डेटा या आम लोगों की बातचीत पर ध्यान दें, तो पाएँगे कि शेयर बाज़ार के उतार–चढ़ाव, सोने–चांदी की कीमतों में बढ़ोतरी या गिरावट, और क्रिप्टो जैसे नए निवेश साधन लोगों की पहली पसंद बन चुके हैं। इसके उलट, भारतीय रुपया डॉलर के मुकाबले लगातार कमजोर होता जा रहा है—लेकिन उसकी चिंता समाज के बड़े हिस्से को नहीं है।
यह प्रवृत्ति हमारी आर्थिक समझ, प्राथमिकताओं और निवेश मानसिकता में आ रहे बड़े बदलाव को दर्शाती है।

निवेश में तात्कालिक लाभ की चाह

लोग शेयर, सोना और चांदी के दाम इसलिए देख रहे हैं क्योंकि इनमें सीधा और त्वरित असर दिखाई देता है।
शेयर बढ़े तो पोर्टफोलियो चमकता है
सोना-चांदी चढ़े तो निवेश सुरक्षित
रातोंरात रिटर्न की ख़बरें उत्साह बढ़ाती हैं
इसके मुकाबले रुपया गिरना लोगों की जेब पर धीरे-धीरे असर करता है, जिससे उसकी गंभीरता अक्सर महसूस ही नहीं होती।

गिरता रुपया – असर गहराई में, पर समझ सतही

रुपया जब कमजोर होता है तो इसका प्रभाव
आयातित सामान,
तेल,
मोबाइल–लैपटॉप,
दवाइयों
जैसी रोज़मर्रा की चीज़ों पर पड़ता है।
महंगाई बढ़ती है, लेकिन यह असर सप्ताहों–महीनों में सामने आता है, इसलिए लोग इसे प्राथमिकता नहीं देते। वहीं आर्थिक मुद्दे तकनीकी भी होते हैं, जिनपर लोगों की पकड़ कमजोर रहती है।

सोशल मीडिया निवेश संस्कृति

आज का दौर वित्तीय प्रभावशाली का है।
युटिव रील्स, टेलीग्राम ग्रुप, अक्स अपडेट — हर जगह हर मिनट शेयर और सोने-चांदी की कीमतें वायरल हो रही हैं।
इस तरह का वातावरण लोगों को मूल्य परिवर्तन देखकर तुरंत प्रतिक्रिया करने की आदत डाल रहा है।
इसके विपरीत, रुपया–डॉलर दर की चर्चा इतनी सनसनीखेज नहीं लगती, इसलिए वह ध्यान से बाहर हो जाती है।
व्यक्तिगत लाभ बनाम राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था
अधिकांश लोग अपनी आर्थिक सेहत को राष्ट्र की आर्थिक सेहत से अलग मानते हैं।
शेयर बाजार बढ़ा ⟶ "मेरा फायदा"
सोना-चांदी चढ़ी ⟶ "मेरी सुरक्षा"
रुपया गिरा ⟶ "देश की समस्या, मेरी नहीं"
यह सोच बताती है कि हमारे लिए तुरंत मिलने वाला व्यक्तिगत लाभ ज़्यादा मायने रखता है, भले ही उसके पीछे की बड़ी आर्थिक तस्वीर चिंताजनक क्यों न हो।

आर्थिक साक्षरता की कमी भी वजह

रुपया क्यों गिरता है, इसका लंबी अवधि में क्या असर पड़ता है, और यह हमारे जीवन की हर कीमत से कैसे जुड़ा है—इसकी समझ अब भी सीमित है।
निवेश पर लेख लाखों लोग पढ़ते हैं, लेकिन विदेशी मुद्रा पर विश्लेषण कम लोगों का ध्यान खींचता है।
क्या होना चाहिए?

आम लोगों में आर्थिक जागरूकता बढ़नी चाहिए

मीडिया को निवेश कीमतों के साथ-साथ रुपये की कमजोरी के आर्थिक परिणाम भी सरल भाषा में समझाने चाहिए
स्कूलों में फाइनेंशियल लिटरेसी जरूरी बनानी चाहिए
सोना-चांदी का आकर्षण: क्यों होती है अधिक दिलचस्पी?
सोना और चांदी सदियों से भारतीयों के लिए महज़ धातु नहीं, बल्कि संपत्ति और सुरक्षा का प्रतीक रहे हैं। लोगों की अधिक दिलचस्पी के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं:

1. सीधे और तत्काल लाभ की धारणा

सरल समझ: सोने और चांदी के दाम सीधे ऊपर या नीचे जाते हैं,

जिसे समझना और ट्रैक करना आम निवेशक के लिए बहुत आसान है। कीमतों में वृद्धि से तत्काल लाभ दिखाई देता है।
तेज़ वृद्धि: शेयर बाजार से तुलना करें तो हाल के वर्षों में, विशेष रूप से वैश्विक अनिश्चितता के दौर में, सोने और चांदी ने तेज़ी से और बड़ा रिटर्न दिया है, जिससे निवेशकों का आकर्षण बढ़ा है।

१. महंगाई के ख़िलाफ़ सुरक्षा

जब रुपया गिरता है या देश में महंगाई बढ़ती है, तो सोना और चांदी को सुरक्षित निवेश माना जाता है। लोगों का मानना है कि उनकी बचत का मूल्य कम होने पर ये धातुएँ उस मूल्य को बनाए रखने में मदद करती हैं।

३. सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व (

भारत में, सोना-चांदी खरीदना शुभ माना जाता है और यह शादी-ब्याह, त्योहारों जैसे अवसरों का एक अभिन्न अंग है। यह कारक इसे केवल निवेश से कहीं अधिक पारिवारिक संपत्ति बना देता है।
लोग भौतिक सोना खरीद सकते हैं, जिसे वे छू सकते हैं और पहन सकते हैं, जो उन्हें डिजिटल संपत्ति या अमूर्त मुद्रा मूल्य की तुलना में अधिक सुरक्षा और संतुष्टि देता है।
गिरते रुपये की अनदेखी: क्यों कम है चिंता?
रुपये के मूल्यह्रास का सीधा असर आम नागरिक के जीवन पर पड़ता है, लेकिन फिर भी अधिकांश लोग इसकी अनदेखी करते हैं। इसके पीछे के कारण कुछ इस प्रकार हैं:

1. अमूर्त और जटिल प्रभाव (

अप्रत्यक्ष असर: रुपये के गिरने का असर तत्काल दिखाई नहीं देता। इसका प्रभाव धीरे-धीरे आयातित वस्तुओं (जैसे तेल, इलेक्ट्रॉनिक्स) की कीमतों में वृद्धि, और अंततः महंगाई के रूप में सामने आता है, जिसे समझना आम जनता के लिए थोड़ा जटिल है।
व्यापक आर्थिक मामला: रुपये का मूल्य मुख्य रूप से वैश्विक कारकों (डॉलर की मज़बूती, कच्चे तेल के दाम, विदेशी संस्थागत निवेश) और जटिल सरकारी नीतियों पर निर्भर करता है, जिससे यह आम आदमी के नियंत्रण या समझ से बाहर का विषय लगता है।

१. व्यक्तिगत लाभ का अभाव

रुपये के मूल्य में सुधार या गिरावट से आम नागरिक को सीधा वित्तीय लाभ नहीं होता है, जब तक कि वे निर्यातक न हों या सीधे विदेशी मुद्रा बाजार में व्यापार न करते हों।
इसके विपरीत, सोना-चांदी में किया गया निवेश उनके खुद के पोर्टफोलियो का हिस्सा होता है, जिसका लाभ उन्हें सीधे मिलता है।

३. सरकारी हस्तक्षेप पर विश्वास

कई बार लोगों को यह विश्वास होता है कि भारतीय रिज़र्व बैंक किसी बड़े संकट को टालने के लिए बाजार में हस्तक्षेप करेगा और रुपये को अत्यधिक गिरने से रोकेगा। यह विश्वास उन्हें तुरंत चिंतित होने से रोकता

निष्कर्ष

लोगों का शेयर, सोना और चांदी की कीमतों में दिलचस्पी लेना गलत नहीं है—लेकिन सिर्फ उन पर ध्यान देना और गिरते रुपये को नजरअंदाज करना चिंता की बात है।
क्योंकि महंगाई से लेकर रोजमर्रा की खरीद तक, हर चीज़ पर रुपये की मज़बूती या कमजोरी का सीधा असर पड़ता है।
जब तक जनता तुरंत होने वाले लाभ की बजाय लंबी अवधि के आर्थिक संकेतकों पर ध्यान नहीं देगी, तब तक अर्थव्यवस्था की पूरी तस्वीर हमारे सामने नहीं आ पाएगी।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

धर्मशाला दंगे; नवीन ने कार्रवाई की मांग की

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : विपक्ष के नेता नवीन पटनायक ने धर्मशाला में पूर्व MLA प्रणब बलवंतराय के घर पर हुई तोड़फोड़ पर खुलकर बात की है। उन्होंने घटना की निंदा की और BJP सरकार और पुलिस प्रशासन पर निशाना साधा।कल यह हमला धर्मशाला में पूर्व MLA प्रणब बलवंतरॉय के फार्महाउस पर हुआ, जब पार्टी वर्कर्स कॉन्फ्रेंस चल रही थी।MLA हिमांशु साहू के सपोर्टर्स के इस हमले के पीछे होने के आरोपों के बाद इस हमले ने राजनीतिक रूप ले लिया है। पता चला है कि हमले में 19 लोग घायल हुए हैं, जिनमें चार लोग गंभीर रूप से घायल हैं और उन्हें इलाज के लिए कटक ले जाया गया है। बीजू जनता दल के कार्यकर्ताओं ने

कल DGP ऑफिस के सामने विरोध प्रदर्शन किया। इसी तरह, MLA के कार्यकर्ताओं और समर्थकों ने जाजपुर जिले के जेनापुर पुलिस स्टेशन पर भी विरोध प्रदर्शन किया। नवीन ने सोशल मीडिया पर अपनी नाराज़गी ज़ाहिर की और दोषियों के खिलाफ तुरंत सख्त कार्रवाई की मांग की।

नवीन ने सोशल मीडिया 'X' पर लिखा कि यह घटना दिनदहाड़े होने के बावजूद, पुलिस प्रशासन और सरकार ने आंखें मूंद ली हैं। अभी तक किसी के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई है। BJP सरकार राज्य में अराजकता और गुंडागर्दी का समर्थन करके क्या दिखाना चाहती है? शांतिप्रिय ओडिशा के लोग इसे कभी स्वीकार नहीं करेंगे। नवीन ने दोषियों के खिलाफ तुरंत कार्रवाई की मांग की।

कार्यवाहक सेनेट्री सुपरवाइजरों को स्थायी पद दिलाने की तैयारी में कर्मचारी समन्वय समिति : वरिष्ठ नेता विनोद इलाहबादी

समिति ने स्पष्ट किया कि कर्मचारियों के अधिकारों और सम्मान की रक्षा के लिए संघर्ष जारी रहेगा और कार्यवाहक सेनेट्री सुपरवाइजरों को उनका वाजिब हक दिलाकर ही दम लिया जाएगा

परिवहन विशेष न्यूज

आगरा। नगर निगम कर्मचारी समन्वय समिति ने एक बार फिर कर्मचारियों के हितों के लिए निर्णायक कदम उठाने का ऐलान किया है। सहायक नगर आयुक्त अशोक प्रिय गौतम के साथ महापौर हेमलता दिवाकर कुशवाह के भतीजे हर्ष दिवाकर द्वारा की गई अभद्रता व मारपीट के विरोध में सफल आंदोलन के बाद अब समिति ने नगर निगम स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत कार्यवाहक सेनेट्री सुपरवाइजरों को स्थायी सेनेट्री सुपरवाइजर के पद पर पदोन्नति दिलाने के लिए कमर कस ली है।

समिति शीघ्र ही नगर निगम के अधिकारियों की चयन समिति की बैठक बुलाने हेतु तिथि निर्धारित कराने की पहल करेगी। इस संबंध में 27 नवंबर 2025 को नगर आयुक्त अंकित खण्डेलवाल, अपर नगर आयुक्त शिशिर कुमार तथा सहायक नगर आयुक्त अशोक प्रिय गौतम के मध्य हुई वार्ता का उल्लेख करते हुए समिति ने बताया कि उस बैठक में कार्यवाहक सेनेट्री सुपरवाइजरों को स्थायी पद पर पदोन्नति दिए जाने की मांग प्रमुखता से रखी गई थी।

वार्ता के दौरान नगर आयुक्त अंकित खण्डेलवाल ने स्पष्ट किया था कि यदि पदोन्नति से संबंधित शासनादेश उपलब्ध कराए जाएं, तो आगे की कार्रवाई संभव है। इसी क्रम में आज नगर निगम महासंघ कार्यालय में नगर निगम कर्मचारी समन्वय समिति की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि समिति के वरिष्ठ सदस्य सुन्दर बाबू चंचल शीघ्र ही उपलब्ध शासनादेश नगर आयुक्त को सौंपें और चयन समिति की बैठक बुलाने का औपचारिक अनुरोध करें, ताकि कार्यवाहक सेनेट्री सुपरवाइजरों को स्थायी पद पर पदोन्नति का मार्ग प्रशस्त हो सके। समिति ने स्पष्ट किया कि कर्मचारियों के अधिकारों और सम्मान की रक्षा के लिए संघर्ष जारी रहेगा और कार्यवाहक सेनेट्री सुपरवाइजरों को उनका वाजिब हक दिलाकर ही दम लिया जाएगा।

बैठक में समिति के प्रमुख पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता विनोद इलाहाबादी, श्याम कुमार करुणेश, सुन्दर बाबू चंचल, मोहन गुलज़ार, राजकुमार विद्यार्थी, रोहित लवानिया, रंजीत सिंह नरवार, संतोष डागौर, अनिल राजौरिया, मनीष चौहान, कामेश कुंज सहित अन्य सक्रिय गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे।

एक बार फिर है चौकाया...!

शीर्ष नेतृत्व ने एक बार फिर से है चौकाया,
बिहार से 'नितिन नबीन' का नाम हैं आया।
45 की हुई 'भाजपा' 45 साल के नए बॉस,
बिहार को आज हो रहा नाज़ वो भी खास।

युवा और ऊर्जावान नेता कार्यकारी अध्यक्ष,
आने वाले विधानसभा चुनाव आगे हैं लक्ष्य।
कर्मठ कार्यकर्ता व कल्पना क्षमता के धनी,
बाकीपुर पर है विश्वास जताया बात है घणी।

पार्टी व संघ के बीच समन्वय करना स्थापित,
चुनौतियां हैं बड़ी-बड़ी उन्हें पार पाना
ज्ञापित।संगठनात्मक अनुभव के भरपूर लेना है लाभ,
जनता की आकांक्षाएँ पूरी कर जमाइये धाक।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इन्दौर-452011 (मध्य प्रदेश)

मानवीय जीवन के बहुमूल्य सूत्रों और सिद्धांतों की संहिता है श्रीमद्भागवत महापुराण : धर्म पथिक शैलेन्द्र कृष्ण महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। ग्राम धौरेरा/राधा मोहन नगर स्थित मां धाम आश्रम में सप्त दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ महोत्सव अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ प्रारंभ हो गया है। महोत्सव का शुभारंभ गाजे-बाजे के मध्य निकाली गयी श्रीमद्भागवतजी की भव्य शोभायात्रा के साथ हुआ। जिसमें पीत वस्त्र पहने व सिर पर मंगल कलश धारण किए सैकड़ो महिलाएं साथ चल रही थी।साथ ही श्रीहरिराम संकीर्तन पर नृत्य करते हुए अनेकों भक्ति-श्रद्धालु शामिल हुए।

तत्पश्चात व्यासपीठ पर प्रख्यात भागवताचार्य धर्म पथिक शैलेन्द्र कृष्ण महाराज ने देश-विदेश से आए समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं को श्रीमद्भागवत महापुराण के महात्म्य की कथा श्रवण कराते हुए कहा कि कलयुग में जीव के कल्याण के लिए यदि सबसे सरल उपाय कोई है, तो वो श्रीमद्भागवत महापुराण की अमृतमयी कथा है।इस ग्रंथ का श्रवण

करने से धुंधकारी जैसा महापापी भी प्रेत योनि से मुक्त हो गया था।इसीलिए इस ग्रंथ को मुक्ति पंथ कहा गया है।

धर्म पथिक शैलेन्द्र कृष्ण महाराज ने कहा कि श्रीमद्भागवत मानवीय जीवन के बहुमूल्य सूत्रों और सिद्धांतों की संहिता है।इस ग्रंथ के श्रवण करने से जीवन तो जीवन, मृत्यु भी सुख मय बन जाती है।साथ ही इसमें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के सूत्र और सिद्धांत तथा समाधान निहित हैं।उन्हें समझ कर व धारण कर जीवन में उतारने की परम-आवश्यकता है। श्रीगीता योग है, रामायण प्रयोग है, तो श्रीमद्भागवत प्रयोगशाला है।

पूज्य महाराजश्री ने कहा कि महर्षि वेदव्यासजी द्वारा रचित श्रीमद्भागवत महापुराण केवल एक ग्रंथ ही नहीं अपितु स्वयं अखिल कोटि ब्रह्माण्ड नायक परब्रह्म परमेश्वर भगवान श्रीकृष्ण का वांग्यम्य स्वरूप है।इस ग्रंथ का श्रवण जो भी व्यक्ति जिस कामना से करता है, उसकी वो कामना निश्चित ही पूर्ण होती है। इस अवसर पर आयोजन के मुख्य यजमान गोपाल चौरसिया, श्रीमती कौशल्या चौरसिया, श्यामपाल सिंह, पप्पू गौतम, महेश शास्त्री, ह्रदेश शास्त्री आदि की उपस्थिति विशेष रही।

डॉ. अंबेडकर के बोर्ड पर गुटखा फेके जाने पर बवाल, मेरठ में धरने पर बैठे जाटव समाज के लोग

भीड़ ने आरोपी की पहचान उमर के रूप में की - पुलिस आरोपी उमर के घर पहुंची, आरोपी फरार

मेरठ, दैनिक प्रतिज्ञा। मेरठ में बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के बोर्ड पर असामाजिक तत्वों द्वारा गुटखा फेंके जाने के बाद बखेड़ा खड़ा हो गया। गुस्साए ग्रामीणों ने विरोध जताते हुए जाम लगाने की कोशिश की, लेकिन पुलिस मौके पर पहुंचकर स्थिति को काबू में कर लिया। पुलिस ने आरोपियों की जल्द गिरफ्तारी का आश्वासन दिया, जिसके बाद लोग शांत हुए। तनाव की स्थिति को देखते हुए मौके पर दो पुलिसकर्मी तैनात कर दिए रोहटा रोड के पास सिंधावली गांव का है। यह मामला कंकरखेड़ा इलाके के बोर्ड पर गुटखा थूकने पर हंगामा हुआ। कंकरखेड़ा के सिंधावली गांव के प्रवेश द्वार पर लगे जाटव चौक बोर्ड पर डॉ. भीमराव अंबेडकर का चित्र बनवाया गया है। सोमवार सुबह ग्रामीणों ने देखा कि बोर्ड पर किसी ने गुटखा थूका हुआ है। इसके बाद लोग इकट्ठा होने लगे और डॉ.

अंबेडकर के अपमान का आरोप लगाते हुए हंगामा कर दिया।

पुलिस और ग्रामीण आमने-सामने

हंगामे की सूचना पाकर एसएचओ कंकरखेड़ा विनय कुमार मौके पर पहुंचे और लोगों को शांत करने की कोशिश की। पुलिस के सामने ग्रामीणों ने जय भीम के नारे लगाए, जबकि सर्व समाज के हजारों लोग मौके पर पहुंच गए। ग्रामीणों का आरोप है कि यह जानबूझकर किया गया कृत्य है और पहले भी बोर्ड पर ऐसी हरकतें हो चुकी हैं। भीड़ ने आरोपी की पहचान उमर के रूप में की। पुलिस ने आरोपी के घर जांच भेजी, लेकिन वह फरार हो गया। इसके बाद जाटव समाज के लोग धरने पर बैठ गए और मांग की कि आरोपी को पकड़कर बोर्ड साफ कराया जाए।

सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही पुलिस

स्थिति को देखते हुए आस-पास के थानों से फोर्स बुलाया गया। एसएचओ विनय कुमार ने बताया कि आरोपी उमर की तलाश जारी है और सीसीटीवी फुटेज खंगाली जा रही है। पुष्टि होने के बाद पुलिस आगे की कानूनी कार्रवाई करेगी।

मुकदमा दर्ज कर हो रही कड़ी कार्रवाई

एसपी सिटी आयुष विक्रम सिंह ने बताया कि पुलिस ने इस मामले में मुकदमा दर्ज कर लिया है। जिस आरोपी उमर का नाम सामने आया है, उसकी गिरफ्तारी के प्रयास किया जा रहे हैं इस शर्मनाक घटना में शामिल और भी जो लोग शामिल होंगे, उन्हें भी जल्द गिरफ्तार कर सलाखों के पीछे भेजा जाएगा।

युगल बैडमिंटन 2025 का सफल आयोजन, डॉ. ओमकार मृदुल व उदराज पैंकरा रहे उपविजेता-2025

परिवहन विशेष न्यूज, प्रेमनगर- थाना परिसर प्रेमनगर में स्टार बैडमिंटन क्लब प्रेमनगर, पुलिस विभाग एवं बिजली विभाग के संयुक्त तत्वाधान 2025 में 13& 14 दिसंबर को आयोजित दो दिवसीय डबल्स बैडमिंटन प्रतियोगिता का सफल समापन हुआ। आरंभ में श्री विराट विशी, थाना प्रभारी प्रेमनगर द्वारा फीता काटकर शुभारंभ किया गया बच्चों के खेल से आरम्भ होकर वयस्कों के रोमांच के चरम पर जाकर समाप्त हुआ। अतिथियों की कड़ी में श्री० विराट विशी थाना प्रभारी प्रेमनगर, श्री एम०पी० यादव तहसीलदार बचरापोड़ी, श्री रामध्यान सिंह से.नि. प्राचार्य, श्री आर०बी०सिंह प्राचार्य स्वामी आत्मानंद प्रेमनगर, श्री आई० अंसारी से.नि. व्याख्याता प्रेमनगर और आ० कृष्णा ध्रुव व्याख्याता उपस्थित रहे।

प्रतियोगिता में सूरजपुर फैजान-श्रेयांश, रामानुजनगर से ऋषि दुबे-उमेश्वर, रोहित पाण्डे-नरेश गुप्ता, अंश-टिवंकल, कौशलेंद्र-अमित,बैकुंठपुर से अवधेश राजवाड़े-प्रवीण सिंह, बचरा पोड़ी से एम.पी. यादव-प्रकाश, वाल्मीकि पैकरा-सुनील दास, जितेंद्र-विकास, उदयपुर से संजय-मन्ना वर्मा, बजरंग-क्रांति , संतोष-संदीप, अमन-राजेश, अमित-जगदीश की टीमों ने युगल बैडमिंटन प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया, खेल भावना और आपसी भाईचारे का परिचय दिया। प्रतियोगिता में उदयपुर के वरिष्ठ खिलाड़ी संजय बजरंगी एवं मन्ना वर्मा की जोड़ी विजेता रही वहीं डॉ. ओमकार साहू मृदुल एवं उदराज पैंकरा की टीम उपविजेता रही।

फाइनल मुकाबला अत्यंत रोमांचक और संघर्षपूर्ण रहा। बेस्ट ऑफ थ्री के इस मुकाबले में पहला सेट उदयपुर की टीम ने अपने नाम किया, दूसरा सेट प्रेमनगर की टीम ने जीतकर मुकाबले में बराबरी की, जबकि तीसरे और निर्णायक सेट में उदयपुर की टीम ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए खिताब पर कब्जा जमाया। दोनों ही टीमों के खिलाड़ियों ने बेहतरीन खेल भावना और कौशल का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता के सफल आयोजन के लिए स्टार बैडमिंटन क्लब प्रेमनगर, पुलिस विभाग एवं बिजली विभाग के सभी कर्तव्यनिष्ठ खिलाड़ी सदस्यों में श्री प्रदीप मरावी (खेल शिक्षक), श्री केवल सिंह, श्रीराम पावले, डॉ. प्रमोद सिंह AMO, डॉ. एस. के. राय, श्री शंकर प्रधान, श्री उदराज पैंकरा, श्री जीवन राजवाड़े,श्री योगेंद्र श्री राजवाड़े, श्री चंद्रभान यादव, श्री श्री साजिद आलम, श्री निमेष सिन्हा, श्री हिमांशु त्रिपाठी, श्री अशोक आर्य, श्री तेजबली जाँगड़े और पुलिस विभाग के कर्मचारियों ने सराहनीय योगदान दिया। डॉ ओमकार साहू मृदुल खिलाड़ी एवं प्रवक्ता के रूप में प्रतिभाग किया, साथ ही कविताओं के माध्यम से दर्शकों को लुभा लिया।

दलित परिवार की जमीन पर भू माफिया द्वारा अवैध कब्जा

परिवहन विशेष न्यूज

मुजरिया थाना क्षेत्र के तथा तहसील क्षेत्र सदर बदायूं के ग्राम पंचायत ज्योरापारवाला के मजरा बगुला नगला में दलित परिवार की जमीन को भू माफिया द्वारा अवैध कब्जा बाहुबली होने के कारण कर लिया गया था भूमि स्वामी सचिन पुत्र श्री राम निवासी बगुला नगला ने अपनी जमीन खसरा संख्या 161 के रखवा 0.0760 हेक्टर से गांव के ही दबंग भूमिया में इस पाल पुत्र वंशी लाल से अपनी जमीन का अवैध कब्जा हटवाने की गुजारिस शिकायत पत्र द्वारा उप जिलाधिकारी सदर बदायूं से की थी एसडीएम सदर बदायूं ने प्रार्थना पत्र के आधार पर हल्का लेखपाल चंद्र प्रकाश सिंह तथा मुजरिया थाना पुलिस को निर्देशित कर स्थलीय पैमाइश कर भूमि को अवैध कब्जा से मुक्त करने के निर्देश दिए थे उप जिलाधिकारी के आदेशों की अभिहेलना खुल्लम-खुल्ला हल्का लेखपाल चंद्र प्रकाश सिंह ने की क्योंकि एक हफ्ता पूर्व एसडीएम सदर ने उक्त अवैध काविज जमीन को अवैध कब्जे से मुक्त करने के आदेश पारित किया था आज तक हल्का लेखपाल ने कोई गौर नहीं दिया शिकायत करता हल्का लेखपाल के बार-बार चक्कर लगाता रहा आखिरकार हल्का लेखपाल ने शिकायतकर्ता पीड़ित से कहा कि अच्छे नेताओं से साठ गाठ रखता हूं ऐसे आदेश रद्दी की टोकरी में पड़े रहते हैं अब शिकायतकर्ता जिला अधिकारी बदायूं की शरण में जाने को मजबूर है अब देखना है कि उक्त पीड़ित दलित की जमीन को अवैध कब्जे से मुक्त हल्का लेखपाल कराएगा या नहीं योगीराज की सरकार में नेताओं के बल पर कर्मचारियों के हौसले बुलंद नजर आते हैं जबकि पंचायत चुनाव की सरगर्मियां तेज होती जा रही हैं इस तरह के हलका लेखपालों का रवैया बहुत ही असुरक्षित रहता है ऐसे रवैया से गांव के किसी पीड़ित व्यक्ति को कभी भी जान माल का खतरा हो सकता है इसका जिम्मेदार हल्का लेखपाल ही माना जाएगा

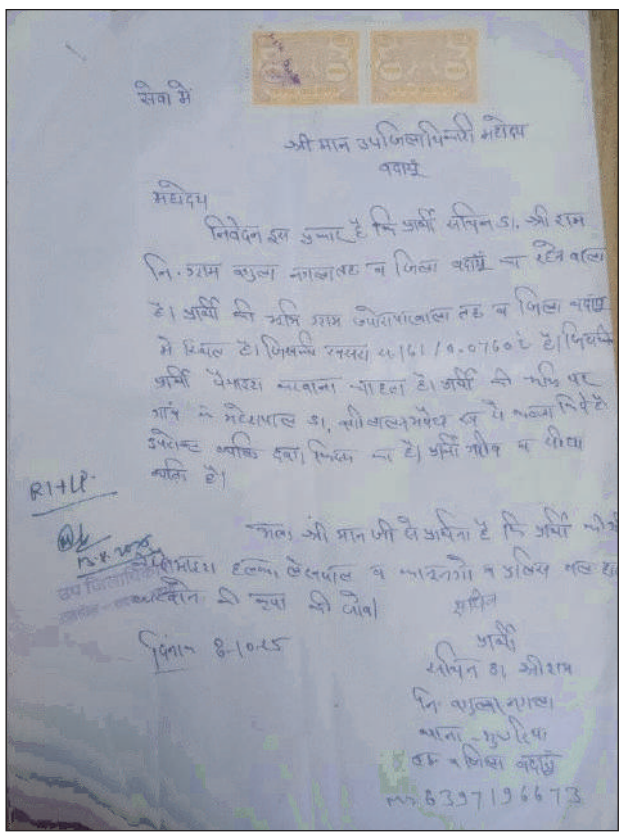

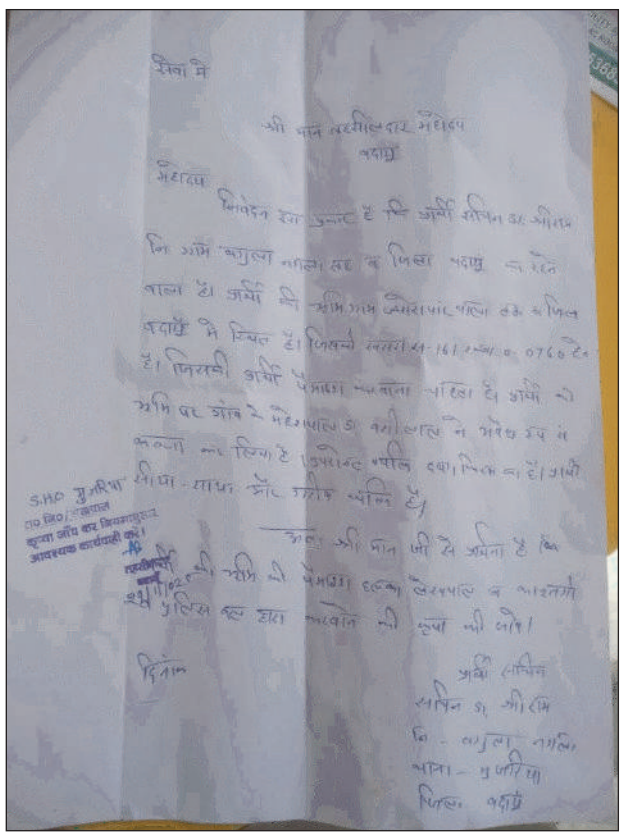

हिन्दू महासंघ की आड़ में धर्माचार्यों को निशाना बना रहा आगरा का 'बसूली गैंग'

मीरा राठौर पर मुकदमा दर्ज कराएगा हिन्दू महासंघ, प्रदेश महामंत्री गोपाल सिंह चाहर का ऐलान

आगरा/मथुरा, पंकज जैन। मथुरा जनपद के वृंदावन स्थित गौरी गोपाल वृद्धा आश्रम में प्रसिद्ध कथावाचक अनिरुद्धाचार्य से विभिन्नहिन्दू संगठनोंके पदाधिकारियोंने भेंटकर उन्हें समर्थन प्रदान किया। इस दौरान अंतरराष्ट्रीय हिन्दू महासंघ भारत के प्रदेश महामंत्री गोपाल सिंह चाहर, हनुमान सेना के राष्ट्रीय संयोजक अमित चौधरी, आगरा महानगर अध्यक्ष धर्मेंद्र धाकड़, इंकलाब सेना के प्रमुख धर्मेंद्र शर्मा सहित दर्जनभर कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

अंतरराष्ट्रीय हिन्दू महासंघ भारत के प्रदेश महामंत्री गोपाल सिंह चाहर ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि कुछ सनातन विरोधी तत्व संघटनों की आड़ लेकर ग़लत काम करके हिन्दू धर्म को निशाना बना रहे हैं। जो तत्व स्वयं आपराधिक इतिहास से जुड़े रहे हैं, उन्हें दूसरों पर आरोप लगाने से पहले अपने गिरेबान में झांकना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय हिन्दू महासंघ मीरा राठौर के विरुद्ध विधिक कार्रवाई करेगा और शीघ्रही मुकदमा दर्ज कराया जाएगा।

प्रतिनिधिमंडल ने यह भी कहा कि कथावाचक अनिरुद्धाचार्य जी द्वारा संचालित वृंदावन का गौरी गोपाल वृद्धा आश्रम सेवा, समर्पण और सनातन मूल्यों का जीवंत उदाहरण है। आश्रम में वृद्ध माताओं की समुचित देखभाल की जाती है, 22 घंटे चलने वाली रसोई, व्यापक गौशाला तथा अनेक सामाजिक प्रकल्प निरंतर संचालित हैं। कथावाचक जी अपनी कथाओं के माध्यम से सनातन संस्कृति और धर्म के प्रति जनजागरण का कार्य कर रहे हैं।

वहीं दूसरी ओर, वक्ताओं ने आरोप लगाया कि आगरा में सक्रिय तथाकथित 'बसूली गैंग' के कुछ लोग गौकशी में संलिप्त तत्वों से अवैध वसूली, शराब ठेकों से चौथ वसूली जैसे कृत्यों में लिप्त हैं और हिन्दू महासभा की आड़ लेकर साधु-संतों को बदनाम करने का प्रयास कर रहे हैं। सभी पहलुओं पर विचार-विमर्श के उपरांत संगठनों ने

एक स्वर में घोषणा की कि न्यायालय में अनिरुद्धाचार्य जी के पक्ष में सभी आवश्यक साक्ष्य प्रस्तुत किए जाएंगे और धर्माचार्यों के सम्मान की रक्षा के लिए हर वैधानिक कदम उठाया जाएगा।

ज्ञात हो कि पूर्व में कथावाचक अनिरुद्धाचार्य के एक कथन को लेकर विवाद उत्पन्न हुआ था, जिस पर राजनीतिक बयानबाजी भी देखने को मिली। विवाद के बाद कथावाचक ने देश की समस्त महिलाओं से सार्वजनिक रूप से क्षमा याचना की थी। आरोप है कि इसी संवेदनशील प्रसंग का लाभ उठाकर आगरा की तथाकथित मीरा राठौर ने मथुरा न्यायालय में परिवाद दायर किया, जिसे न्यायालय द्वारा स्वीकार किया गया।

संगठनों के पदाधिकारियों ने प्रकरण की गंभीरता को देखते हुए तथ्यों की जांच-पड़ताल के बाद कथावाचक को नैतिक आधार पर पूर्ण समर्थन देने की घोषणा की। प्रतिनिधिमंडल ने कथावाचक जी को अवगत कराया कि मीरा राठौर पर पूर्व में आपराधिक प्रवृत्ति के गंभीर आरोप रहे हैं। उनके विरुद्ध थाना एत्माद्दौला, आगरा में चौथ वसूली से संबंधित मुकदमा दर्ज है, जिसमें वह जेल भी जा चुकी हैं।

प० सिंहभूम जिले में डीएमएफटी योजनाओं की समीक्षा बैठक संपन्न
50% से कम कार्य समझौता करने वाले विभागों को नहीं मिलेगा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

चाईबासा। जिला समाहरणालय स्थित सभागार में बुधवार को डीएमएफटी अंतर्गत संचालित योजनाओं की समीक्षा बैठक का आयोजन जिला दंडाधिकारी-सह उपायुक्त चंदन कुमार की अध्यक्षता में किया गया। बैठक में उप विकास आयुक्त संदीप कुमार मीणा, सहायक समाहर्ता सिद्धांत कुमार, जिला आपूर्ति पदाधिकारी सुनीला खलको सहित विभिन्न विभागों के अभियंता उपस्थित थे।

उपायुक्त ने वित्तीय वर्ष 2025-26 में डीएमएफटी से स्वीकृत योजनाओं की अद्यतन प्रगति की समीक्षा करते हुए भवन प्रमंडल-चाईबासा, लघु सिंचाई प्रमंडल-चाईबासा, ग्रामीण विशेष कार्य प्रमंडल-चाईबासा तथा एनआरईपी-चाईबासा से संबंधित प्रतिवेदन का विस्तार से अवलोकन किया। बैठक में बिना पूर्व सूचना अनुपस्थित रहने पर लघुसिंचाई प्रमंडल, चाईबासा के कार्यपालक अभियंता से कारणपृच्छा करने का निर्देश दिया गया।

पुराने और लंबित योजनाओं पर तुरंत कार्रवाई का निर्देश

उपायुक्त ने सभी कार्यपालक अभियंताओं को निर्देश दिया कि वे उन योजनाओं की सूची तैयार करें जो 1 से 3 वित्तीय वर्ष पहले स्वीकृत हुई थीं, लेकिन अब तक उनमें समझौता प्रक्रिया पूरी नहीं हुई है। ऐसी योजनाओं को संवीक्षा कर रद्द करने की कार्रवाई सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया।

यदि कोई योजना किसी विशेष कारण से लंबित है, तो उसकी पृथक सूची कार्यालय को उपलब्ध कराने को कहा गया।

बैठक में उपायुक्त ने कहा कि दिसंबर-2025 से जिले के सभी कार्यकारी विभागों की परफॉर्मेंस रेटिंग तैयार की जाएगी। इसमें टेंडर निष्पादन, समझौता, कार्य आरंभ और भुगतान जैसी प्रक्रियाओं की समयबद्ध समीक्षा की जाएगी। उपायुक्त ने स्पष्ट निर्देश दिया कि वर्तमान वित्तीय वर्ष में डीएमएफटी के तहत आवंटित योजनाओं में 50% से कम योजनाओं में कार्य समझौता करने वाले विभागों को आगे योजना आवंटन नहीं किया जाएगा।

इसके साथ ही सभी विभागों को प्रगति प्रतिवेदन में ताज़ा फोटोग्राफ्स संलग्न करने का भी निर्देश दिया गया। डीएमएफटी योजनाओं में पारदर्शिता, गति और बेहतर क्रियान्वयन सुनिश्चित करने को लेकर यह बैठक महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

इज़्ज़त की डिलीवरी

वह साइकिल नहीं चलाता था,
वह समय को थामे चलता था।
थैले में सिर्फ़ ख़त नहीं होते थे,
किसी माँ की प्रतीक्षा,
किसी बेटे का सपना होता था।

ख़ाकी कपड़ों में लिपटा आदमी,
नक़्शों से बड़ा भरोसा था।
नाम लेकर बुलाया जाता था,
क्योंकि हर गली से रिश्ता था।

आज समय उड़ता है पंखों पर,
पर ठहराव मर गया है।
डिलीवरी हो गई है पेशा,
पर पेशे में आदमी मर गया है।

जो इज़्ज़त पद से नहीं,
कर्तव्य से उपजती थी—
वह तेज़ी की चकाचौंध में
चुपचाप कुचली गई है।

कहना बस इतना है सभ्यता से—
अगर ख़त फिर कभी लिखो,
तो पता केवल घर का नहीं,
आदमी का सम्मान भी लिखो।

वो जो ख़ामोशी से ख़त पहुँचा जाता था,
असल में भरोसा पहुँचाया जाता था।
आज आवाज़ तेज़ है, समय कम है—
पर आदमी कहीं रास्ते में गिरा जाता है।

– डॉ प्रियंका सौरभ

गौ तस्कर मारपीट के मामले में सांसद निशीकांत दुबे पर दायर मामले को हाईकोर्ट ने किया रद्द

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, झारखंड हाईकोर्ट ने गोड्डा से भाजपा सांसद निशिकांत दुबे को बड़ी राहत देते हुए उनके खिलाफ दर्ज आपराधिक मामले को रद्द कर दिया है। हाईकोर्ट ने देवघर जिले के मनोहरपुर थाना में दर्ज कांड संख्या 281/23 से संबंधित प्राथमिकी को निरस्त कर दिया। यह मामला कथित रूप से गौ तस्कर के साथ मारपीट से जुड़ा हुआ था, जिसमें सांसद निशिकांत दुबे को अभियुक्त बनाया गया था।

प्राथमिकी दर्ज होने के बाद सांसद निशिकांत दुबे ने इस मामले को चुनौती देते हुए झारखंड हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। उनकी ओर से दाखिल क्रिमिनल याचिका पर हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस अनिल कुमार चौधरी की एकल पीठ

में सुनवाई हुई। सुनवाई के दौरान निशिकांत दुबे की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता प्रशांत पल्लव और अधिवक्ता पार्थ जालान ने पक्ष रखा और प्राथमिकी को दुर्भावनापूर्ण बताते हुए इसे रद्द करने की मांग की।

नतीजा निशिकांत दुबे के पक्ष में आने पर उन्होंने एक्स पर ट्वीट करके इसकी जानकारी दी। उन्होंने लिखा- "52 झूठे केस झारखंड सरकार ने मेरे या मेरे परिवार पर किया, आज 48 वें केस का फ़ैसला मेरे पक्ष में आया आज आख़िर झारखंड हाईकोर्ट ने यह फ़ैसला दिया कि मोहनपुर देवघर में मेरे उपर गौ तस्करों को पकड़वाने का कार्य क़ानून सम्मत था। गौ तस्कर और मेरे खिलाफ केस करने वाले लोगों पर केस पुलिस को चलाना चाहिये था। सत्यमेव जयते।"

निशिकांत दुबे झारखंड के गोड्डा लोकसभा क्षेत्र से भाजपा के सांसद हैं। वे 2014 से लगातार लोकसभा में निर्वाचित होते आ रहे हैं। पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता रह चुके दुबे संगठन और संसदीय मामलों में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। निशिकांत दुबे अपने मुखर अंदाज के लिए जाने जाते हैं। वो अक्सर कांग्रेस और गांधी परिवार के कार्यों की गंभीर आलोचना करते रहते।

झारखंड के लातेहार में पचास लाख मुल्य के अवैध विदेशी शराब जप्त

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, झारखंड के लातेहार जिले में रविवार को एक कंटेनर ट्रक पलटने के बाद पुलिस ने लगभग 50 लाख रुपये मूल्य की अवैध विदेशी शराब का जखीरा जब्त किया. अधिकारियों ने यह जानकारी दी. अधिकारियों ने बताया कि बड़ी मात्रा में अवैध शराब के परिवहन की सूचना मिलने के बाद चंदवा थाना क्षेत्र के अंतर्गत संचालित किए जा रहे एक जांच अभियान के दौरान यह बरामदगी की गई. चंदवा थाना प्रभारी रणधीर कुमार ने बताया कि ट्रक से 1,000 से अधिक कार्टन अवैध विदेशी शराब बरामद की गई, जिसे सीमेंट की बोरियों के नीचे छिपाकर रखा गया था. उन्होंने कहा कि जब्त की गई शराब का अनुमानित बाजार मूल्य लगभग 50 लाख रुपये है. पुलिस के अनुसार, देवनाद पुल के समीप जांच दल को देखते ही चालक ने वहां से भाग निकलने का प्रयास किया. इसी कोशिश में उसने वाहन पर से नियंत्रण खो दिया, जिसके परिणामस्वरूप ट्रक पलट गया. अधिकारी ने बताया कि ट्रक का चालक और उसका सहायक दोनों ही मौके से फरार होने में सफल रहे. पुलिस ने बताया कि ट्रक को जब्त कर लिया गया है और फरार आरोपियों को पकड़ने के लिए छापेमारी की जा रही है. मामले में आगे की जांच जारी है.

16 दिसंबर को ब्लॉक अटारी के जोन खासा और वरपाल कलां में दोबारा होंगी पंचायत समिति की चुनाव प्रक्रिया

अमृतसर, 15 दिसंबर (साहिल बेरी)

राज्य चुनाव आयोग पंजाब के निर्देशों के तहत ब्लॉक अटारी की पंचायत समिति जोन नंबर 8 खासा के बूथ नंबर 52, 53, 54, 55 तथा पंचायत समिति जोन नंबर 17 वरपाल कलां के बूथ नंबर 90, 91, 93, 94, 95 की चुनाव प्रक्रिया किसी कारणवश स्थगित कर दी गई थी।

इस संबंध में अधिक जानकारी देते हुए अतिरिक्त जिला निर्वाचन अधिकारी-कम-अतिरिक्त डिप्टी

कमिश्नर (ग्रामीण विकास) श्रीमती परमजीत कौर ने बताया कि ब्लॉक अटारी के इन जोनों के संबंधित बूथों पर 16 दिसंबर 2025 को सुबह 8 बजे से शाम 4 बजे तक पुनः मतदान कराया जाएगा।

उन्होंने इन दोनों जोनों के मतदाताओं से अपील की कि वे बढ़-चढ़कर अपने मताधिकार का प्रयोग करें। उन्होंने यह भी बताया कि प्रशासन की ओर से इस संबंध में सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं तथा कर्मचारियों की ड्यूटियां भी लगा दी गई हैं।

एन.सी.सी. एलुमनी एसोसिएशन – मेगा लेवल इवेंट

अमृतसर, 15 दिसंबर (साहिल बेरी)

कर्नल पी.डी.एस. बल, कमांडिंग ऑफिसर, प्रथम पंजाब बटालियन, अमृतसर ने जानकारी देते हुए बताया कि माननीय रक्षा मंत्री द्वारा शुरू की गई राष्ट्रीय पहल के अंतर्गत एन.सी.सी. ग्रुप मुख्यालय को यह घोषणा करते हुए गर्व महसूस हो रहा है कि फरवरी 2026 के पहले सप्ताह में एक मेगा लेवल एन.सी.सी. एलुमनी एसोसिएशन इवेंट का आयोजन किया जाएगा।

यह ऐतिहासिक आयोजन एन.सी.सी. समुदाय की विरासत, अनुशासन और एकता का उत्सव होगा, जिसमें पूर्व कैडेट्स और वर्तमान एन.सी.सी. कैडेट्स गर्व और आपसी भाईचारे की भावना के साथ एक मंच पर एकत्रित होंगे। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय कैडेट कोर की पहचान बने मजबूत संबंधों को फिर से जोड़ने, अनुभव साझा करने और उन्हें और सुदृढ़ करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करेगा।

एलुमनी एवं कैडेट्स को आमंत्रणः सभी पूर्व एन.सी.सी. कैडेट्स को इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम में भाग लेने के लिए सादर आमंत्रित किया जाता है। अधिक जानकारी एवं पंजीकरण के लिए 1 पंजाब बटालियन एन.सी.सी., अमृतसर से मोबाइल नंबर 9632433885 पर संपर्क किया जा सकता है।

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से ऑस्ट्रेलिया के हाई कमिश्नर की शिष्टाचार भेंट

के ०के ०परिच्छा , झारखंड

रांची, रांची स्थित मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन एवं विधायक कल्पना मुर्मू सोरेन से भारत में ऑस्ट्रेलिया के हाई कमिश्नर फिलिप ग्रीन ओएएम ने शिष्टाचार मुलाकात की।

इस अवसर पर उनके साथ प्रोफेसर सुज़न मार्क्स (इंटरनेशनल लॉ), टॉम सैंडरफोर्ड (फर्स्ट सेक्रेटरी) तथा अनघा (सीनियर इकोनॉमिक रिसर्च ऑफिसर) भी उपस्थित थीं।

मुलाकात के दौरान आपसी सहयोग, अंतरराष्ट्रीय विषयों एवं आपसी संबंधों को लेकर विचार-विमर्श किया गया।

सरायकेला समेत दोनों सिंहभूम जिले के पीएम श्री विद्यालयों में निष्पक्ष जांच की मांग

विद्यालयों करोड़ों रुपये ख़र्च का मुद्दा कलिंग सेना ने उठाया

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

सरायकेला, पीएम श्री स्कूलों के योजना के अंतर्गत फंड वितरण में भारी गड़बड़ी की शिकायत को लेकर शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा जांच का निर्देश दिया गया है। वहीं सरायकेला के जिला शिक्षा अधिकारी सह जिला शिक्षा अधीक्षक कैलास मिश्रा तथा दोनों सिंहभूम के शिक्षा अधिकारियों पर पर भी कलिंग सेना की तरफ निष्पक्ष जांच की मांग केंद्र से की गयी है ।

सनद रहे किसी शख्स ने पहले ही भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय को पत्र लिखकर पीएम श्री स्कूलों में फंड में गड़बड़ी एवं अनियमिता बरतने की शिकायत की थी। उसके शिकायत पर संज्ञान लेते हुए झारखंड राज्य के समग्र शिक्षा अभियान के निदेशक को जांच कर आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया है। साथ ही की गई कार्रवाई का जानकारी मंत्रालय को देने का भी निर्देश दिया गया है। झारखंड व ओडिशा में सक्रिय राजनीतिक पार्टी कलिंग सेना के केन्द्रीय तथा प्रदेश अध्यक्ष तरफ से इस दिशा सरायकेला शिक्षा विभाग पर सीधे तौर पर प्रश्नचिन्ह उठाया गया है । जिले के विभिन्न पीएम श्री स्कूलों में हाल ही में किये गये कार्य एवं भूगतान किये गये धनराशि को लेकर यह अब जांच के दायरे में है ।

भ्रष्टाचार के लिए मशहूर सरायकेला शिक्षा विभाग पर निष्पक्षता से हर पहलू पर निष्ठापूर्वक जांच कराने की मांग राज्य सरकार से जहां की गयी है साथ ही केंद्र के स्वतंत्र ऐजेन्सियों से भी कराने की मांग जारी है ।

हेल्थ विभाग ने सेफ चाइल्डबर्थ पर स्पेशल ट्रेनिंग वर्कशॉप का किया आयोजन

अमृतसर, 15 दिसंबर (साहिल बेरी)

हेल्थ विभाग, अमृतसर ने सिविल सर्जन डॉ. सतिंदरजीत सिंह बजाज के नेतृत्व में सिविल हॉस्पिटल के कॉन्फ्रेंस हॉल में सेफ चाइल्डबर्थ पर एक दिन की स्पेशल ट्रेनिंग का आयोजन किया। इस मौके पर जिला फैमिली वेलफेयर ऑफिसर डॉ. नीलम भगत ने कहा कि अगर प्रेग्नेंट मां का समय पर रजिस्ट्रेशन हो, सभी एंटीनेटल चेक-अप समय पर हों, चाइल्डबर्थ के दौरान सही हेल्थ फैसिलिटी दी जाएं और हाई-रिस्क केस को समय पर रेफर किया जाए, तो हम चाइल्डबर्थ के दौरान होने वाली मॉर्टेलिटी रेट में काफी सुधार ला सकते हैं। उन्होंने कहा कि इस ट्रेनिंग में लेबर रूम और गायनेकोलॉजिकल वार्ड में काम करने वाली स्टाफ नर्सों को स्पेशल ट्रेनिंग दी जा रही है, ताकि चाइल्डबर्थ के दौरान होने वाली

मुश्किलों और इमरजेंसी से सही तरीके से निपटकर सेफ चाइल्डबर्थ पक्का किया जा सके और अगर ज़रूरत हो, तो केस को सही तरीके से रेफर किया जा सके।

इस मौके पर सीनियर मेडिकल ऑफिसर डॉ. भारती धवन और डॉ. गगनदीप कौर जूनियर रेजिडेंस ने सभी स्टाफ नर्सों को स्पेशल ट्रेनिंग दी। इस मौके पर जिला एम ई आई ओ अमरदीप सिंह, डिप्टी कमल भल्ला, प्रोजेक्ट असिस्टेंट विनय कुमार, ईशान बंसल और सुखमनदीप कौर और सारा स्टाफ मौजूद था।

झारखंड के चीफ जस्टिस तरलोक सिंह चौहान पहुंचे बैधनाथ धाम,सपरिवार के संग की पूजा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, झारखंड हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश तरलोक सिंह चौहान शनिवार को बाबा बैद्यनाथ धाम पहुंचे. जहां उन्होंने अपने परिवार के संग के संग पूजा की और अपने एवं राज्य के बेहतर भविष्य की कामना की. मुख्य न्यायाधीश तरलोक सिंह चौहान के आने से पहले मंदिर की सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत कर दी गई थी और प्रोटोकॉल के अनुसार जिले के सभी अधिकारी और पदाधिकारी मंदिर परिसर में मौजूद रहे.

देवघर के बाबा मंदिर में मुख्य न्यायाधीश के आगमन को देखते हुए मंदिर के बाहर भी ट्रैफिक व्यवस्था और सुरक्षा व्यवस्था को दुरुस्त कर दिया गया था. मंदिर के वीआईपी गेट के पास उनकी वाहन लगी और वह सीधा मंदिर के मुख्य कार्यालय में पहुंचकर अपने परिवार के संग विधि विधान के साथ संकल्प किया और फिर तीर्थ पुरोहितों के साथ गर्भगृह में पूजा अर्चना की.

मुख्य न्यायाधीश तरलोक सिंह चौहान शुक्रवार की देर शाम में ही देवघर पहुंच गए थे. वह मधुपुर में कई घंटे तक विश्राम किए और उसके बाद देर रात देवघर पहुंचकर सर्किट हाउस में रात्रि विश्राम की. देवघर पहुंचने के बाद देवघर के एसपी के साथ-साथ मधुपुर सहित आसपास के सारे डीएसपी को सुरक्षा व्यवस्था में तैनात कर दिया गया था. शनिवार को सुबह मुख्य न्यायाधीश और उनके परिवार के पूजा करने के दौरान आम श्रद्धालुओं को थोड़ी देर के लिए रोक दिया गया था. हालांकि थोड़ी देर बाद ही सुरक्षा कर्मियों ने सभी श्रद्धालुओं को पूजा करने की इजाजत दे दी.

शनिवार को सुबह पूजा करने के बाद देवघर के डीसी नमन प्रियेश लकड़ा और एसपी सौरभ ने उन्हें भेंट के रूप में अंग वस्त्र और देवघर का प्रसाद दिया. बाबा बैद्यनाथ धाम में पूजा करने के बाद मुख्य न्यायाधीश देवघर के लिए रवाना हो गए. मिली जानकारी के अनुसार मुख्य न्यायाधीश तरलोक सिंह चौहान को पूजा करने के लिए देवघर के बाद बासुकीनाथ जाना था, लेकिन वो सीधे देवघर के लिए रवाना हो गए.

सारडां में पुनः नक्सलियों के आईईडी विस्फोट से दो सुरक्षा जवान घायल

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

चाईबासा, झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम जिले के सारंडा जंगल में नक्सल विरोधी अभियान के दौरान रविवार शाम नक्सलियों द्वारा बिछाए गए आईईडी में विस्फोट हो गया. इस घटना में सीआरपीएफ की कोबरा बटालियन के दो जवान गंभीर रूप से घायल हो गए.

नक्सलियों के खिलाफ चलाए जा रहे सघन सर्च ऑपरेशन के दौरान पश्चिमी सिंहभूम जिले के सारंडा जंगल क्षेत्र में एक बार फिर आईईडी विस्फोट की घटना सामने आई है. छोटानागरा थाना क्षेत्र के बलिबा गांव के पास बीहड़ जंगल में नक्सलियों द्वारा पहले से बिछाए गए इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस आईईडी में विस्फोट हो गया.

घटना छोटानागरा थाना क्षेत्र के बलिबा (बलिबा) गांव के पास की है. सुरक्षा बल नक्सलियों के खिलाफ सर्च ऑपरेशन चला रहे थे, तभी नक्सलियों द्वारा पहले से प्लांट

किए गए दो आईईडी में विस्फोट हुआ. विस्फोट की चपेट में आने से 209 कोबरा बटालियन के दो जवान बुरी तरह घायल हो गए. घायल जवानों के नाम हेड कांस्टेबल अलख दास और हेड कांस्टेबल नरायन दास हैं. प्राथमिक उपचार के बाद दोनों को बेहतर इलाज के लिए एयरलिफ्ट कर रांची के निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है.

इस संबंध में पश्चिमी सिंहभूम के पुलिस अधीक्षक अमित रेणु ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि सर्च ऑपरेशन के दौरान विस्फोट में दो जवान घायल हुए हैं. अभियान जारी है, विस्तृत जानकारी बाद में दी जाएगी.

सारंडा जंगल लंबे समय से नक्सली गतिविधियों का गढ़ रहा है. सुरक्षा बलों के लगातार अभियानों से बैकफुट पर आए नक्सलियों की ओर से इस तरह की घटनाएं उनकी हताशा का संकेत मानी जा रही हैं.

घटना के बाद सुरक्षा बलों में सतर्कता बढ़ा दी गई है. पूरे इलाके में सर्च ऑपरेशन को और तेज कर दिया गया है तथा आसपास के जंगल क्षेत्र में अतिरिक्त बलों की तैनाती की गई है.

पश्चिमी सिंहभूम जिले के सारंडा, कोल्हान और आसपास के जंगली इलाकों में नक्सलियों के खिलाफ लंबे समय से संयुक्त अभियान चलाया जा रहा है. इस अभियान में सुरक्षा बलों को कई महत्वपूर्ण सफलताएं मिली हैं, जिससे नक्सली संगठन दबाव में हैं.

नक्सलियों द्वारा पूर्व वर्षों में जंगलों और पगडंडियों में बिछाए गए पुराने आईईडी आज भी जवानों तथा ग्रामीणों के लिए बड़ा खतरा बने हुए हैं. इन विस्फोटकों की चपेट में आकर पहले भी कई जवान और ग्रामीण अपनी जान गंवा चुके हैं. सुरक्षा बल प्रभावित इलाकों में आईईडी खोज एवं निष्क्रिय करने का अभियान लगातार चला रहे हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023